# घर की रेल

[राजस्थानी लोक कथाएं]

सा० म० नानूराम संस्कर्ता



लोक-साहित्य प्रतिष्ठान
कालू (बीकानेर) राजस्थान

प्रकाशक  राजस्थानी साहित्य प्रतिष्ठान कालू (बीकानेर)
मुद्रक  [illegible] बीकानेर
मूल्य  १.५०
प्रथमावृत्ति  १९६८

# भूमिका



राजस्थानी लोकसाहित्य री महिमा घणी ऊंची है। ई धरती र गौरवमय इतिहास री रचना अठ र लोकसाहित्य री प्रेरणा सू ई हुई है। राजस्थानी लोकसाहित्य जनजीवण रो अंग बणर दिव्य सदेश रो प्रकाश दियो अर ण प्रदेश रा नर नारी आत्मबलिदान रै अनूठ आदर्शा री थापना करी जिण री महिमा देश विदेश रा बडा बडा विद्वान मुक्तकठ सू गाइ है। राजस्थान लोकसाहित्य रो रत्नाकर है। या साहित्य सामग्री परिमाण अर' गुण दोनू इ दृष्टिया सू घणी विशाल अर गौरवमयी है। इण री विविधता तो आर भी अनूठी है।

लोकसाहित्य रो एक प्रमुख अग 'लोककथा' है। लोककथा रसमयी अर प्रेरणाप्रदायिनी हुवण रै साथ सास्कृतिक चित्राम भी परगट करै। लोकसंस्कृति री रस धारा स लोकजीवन सरस अर उदात्त रूप धारण करै। या रसधारा लोककथा र माथ अति प्राचीन काल सू चाली आयरी है। समय साल ई रसधारा म नया नया तत्व भी आवर मिल। ई री प्रवाह आदकाल न वर्तमान काल सू जोडर गभीर अध्ययन सारू एक सुरगा विषय उपस्थित करै।

किणी प्रदेश र जनजीवन र अध्ययन सारू उण प्रदेश रै लोकसाहित्य अर खास तौर सू लोककथावा रो अध्ययन घणो जरूरी है। पण लोककथावा र अध्ययन सू पहलो वा रो सग्रह हुवणो आवश्यक है। या घणा आनद री बात है क राजस्थान रा उत्साही साहित्य सेवक ई दिशा माय भी सचेष्ट है अर वा र परिश्रम रो मधुर फळ सब सुलभ हुय रया है। ई क्षेत्र माय साहित्य महोपाध्याय नानूरामजी सस्कर्ता रो नाव आदर जाग है। आप री नइ पुस्तक घर की रेल राजस्थानी लोककथावा र उद्धार री दृष्टि सू एक सुन्दर प्रयास है।

लोककथावा र सग्रह री दिशा माय एक नियम परमा

वश्यक मानी गयो है कै वा रै मूळ ढांचै मांय परिवर्तन न करयो जाव। एक ई लोककथा रा अनेक रूपान्तर मिल सकै है पण वां रो प्रस्तुतीकरण अपरिवर्तित रूप मांय ईज हुवणो जरूरी है। जे संग्रहकर्ता किणी लोककथा री घटनावां में फेर बदळ कर देवै तो वो परिवर्तित रूप लोकवार्ताशास्त्र रै विद्यार्थी रै अध्ययन में बाधा उपस्थित करै। घणी खुसी री बात है कै श्री सारस्वतजी ई पर आवश्यक नियम नै ध्यान मांय राख्यो है।

एक ई लोककथा संक्षिप्त अर विस्तृत दोनूं रूपां में भी सुणी जावै। कोई कथक्कड़ संक्षिप्त रूप नै पसंद करै अर कोई उण रै विस्तृत रूप नै ग्रहण करै। कई लेखकां री प्रवृत्ति इसी भी देखी जावै कै वै लोककथा रै संक्षिप्त रूप नै आपरी तरफ सूं वर्णन विस्तार देयर लाम्बो कीच। राजस्थानी री पुराणी बातां मांय भी आ प्रवृत्ति देखी गई है। यो लेखक रो आत्मप्रकाशन है अर उण री कलात्मक रुचि रो दरसाव है। इण सूं लोककथा मांय रोचकता अर मजाक री तरह बढ़ अर उण नई साज आय जाव। आ नई चीज एक प्रकार सूं लोककथा पर आधारित लेखक री रचना भी मान। ई रूप मांय लोककथावां रो उपयोग बड़ा बड़ा लेखक करता आया है अर साहित्य री अभिवृद्धि री आ भी एक प्रणाली है। श्री सारस्वतजी इणी ढंग मांय आपरी आ पुस्तक प्रस्तुत करी है।

ई पुस्तक मांय स्थानीय रंग री अनेक घणा मोल है। आ तत्त्व ई रचना नै आकर्षक कथा रै परिवेश मांय उपस्थित करी है। भाषा शैली रो एक नमूनो देखो—

"रंग रूड़ा मरुदेश मांय आन मनाता रंग रंगीला, बाला बन मा मनरूड़ा अर जाव न तू होव। कमा जगळ रा

वासी वेयी प्रकास रा प्रवासी अर वेयो जळथळ रा निवासी नामजादीक होय रया है। रोभ ज्रखड़ां, कुरजा कुरन्तळो, सह सेळा बाढी बिच्छू भींग अर मामोलिया आप आपरी जगां पर्गा फूटरा फब छिव।' (पृष्ठ ६२)

इणी भांत एक दूजा चितराम भी देखो— एकर री बात सुरजो खेत म खडयो माठा रो खळो काढ रियो हा। ऊंट न डेरै र खनै चरण वगी छोड राख्यो हो। खेता म लावणा हो चुकी ही पर धन पसु चरता फिर हा। मिनख भेळश्राड खराव हा, आपर खेता म आप आपरा पसु चराव हा। सुरजै री ऊंट दावणो दियोड़ो लड़घो थोड़ा घणा ल्हासुडा तोड हो।' (पृष्ठ ८६)

ऊपरल दोनू उदाहरणा माय स्वाभाविकता साथै सजावट री छटा भी देखबा जोग है।

अर की रेल माय सकलित राजस्थानी लोककथावा री विविधता घणी सराहना जोग है। ई सग्रह माय कठ छोट टाबरा र मनभावर्ते थोडी कागल अर ऊदर रो चित्रण है तो कठ गाव रै बुभाकडजी री बुद्धि रो अनोखो बखाण है। एक जगां पीरदान डूम री चतराई रो चमत्कार है तो दूजी ठोर भरड री पोल खुल है। इणी भांत और भी अनेक रग रगील पात्रा सू लेखक ई पोथी म रोचकता रो वातावरण बणाया है।

आशा है लेखक री ई पोथी न साहित्य जगत् म पूरो सम्मान मिलसी अर वा री कलम सू इणी भांत राजस्थानी-साहित्य री श्रीवृद्धि हुवती ई रहसी। श्री सक्सेनाजी राजस्थानी भाषा रा लूठा कवि अर लेखक तथा लोक साहित्य रा पारखी है। आप सू राजस्थानी भाषा र प्रेमियां न घणी आशा है।

बीकानेर (डॉ) मनोहर शर्मा

दि १५-३-१९६६ सम्पादक वरदा'

# चिला पटड़ी

# गुरु-दिखणा

भारतीय विद्या मन्दिर जडी मोकळी सस्थावा रा कुळपत,
सस्कृत अर हिन्दी तथा राजस्थानी लोक साहित्य रा
ब्रहस्पत दुनिया रा साहित्यिक दीया, व्याकरण
समीक्षा अर प्रबन्ध जिसा ऊडा विसया
रा अड्ड हीया मेर सोधनिबध
रा निर्देसक वय
परम श्रद्धेय पडित

**श्री नरोत्तमदास जी स्वामी**

न घणा घणा विनै सू भेंट

—सा० म० नानूराम सस्कर्ता

## बाता री बानरवाळ

१

# घर की रैल



अडचाम बारकरना बरस, काळा र खवला बरतारा । गोरा रो राज तप्यो, देस म नू ईन्नू ई चीजा अर नू वान्नू वा नावटा बापरचा । हाथ रो काम छूटचो अर कळा माथ फूटो बाजण लाग्यो । कठ ही गाभा सीवण हाळी कळ कठै हा पेटी बाजो । कठ ही मटर गाडी री वाता हुन अर वेइ जगा रेला रो चाळो मा चाल । काद इंटरेंस कोई बी० ए० फास कोई रगन्ट वणा कोई तार उथाड बूढिया दचरज मर गाळो टार । डर भो सू बिया रो काळजो काप । ज रेल तार री कोई कुचमाधी वाता न देव तो वो बारियासमादी निथा इ गरेजी भण्योडो धरमभिस्ट करणियो पापी मिनख मानीज । पुराणा आदम्या नै बो म्हारो आज बापरो सो मारणिया लाग । बीमू ब पल्लो मडाणो ही अधरम गिणु, वात कर र कुण विधरमा बणु ।

पली-दूजी पन्योन्त देस न्हिावर जावणिया जुवान मिनख इमी ही कोइ हिन री नू ई वात वता देव तो बूढिया सू मोटी राड रो मोरचो लणो पड़ । जात सू बार करै, न्यात सू न्यारो राख । साख,पात होणै रै समै पूरी बडास लगाव । ढेड सौ अेकनो अळगा रणो पडै । छेवड घापर हाया जोडी करै, खल्ला पचा रा माथ उठायर

[illegible]

[illegible] मुगा
बाँ गना बाँ। [illegible] [illegible]। 
[illegible] जेसा नागचा गुंथेज। [illegible] हूँ [illegible]
[illegible] गाम आव। [illegible] मार्ड
[illegible] वीरणगर बाव [illegible] री [illegible] री दिवतात।
दुगाड़ा [illegible] माणा रा दूवा [illegible] दिसावै। [illegible] बा माना बारा
बाता रा [illegible] ही टावर एव हा [illegible]। एव ही [illegible] अर
[illegible] ही [illegible]। [illegible] सोन वधी मोर मागु, राबी मुगी रव।
गुण [illegible] रा झरणा झरै दुन [illegible] रा मू दा बड। [illegible] रा
[illegible] उगूर। [illegible] मू [illegible] करै। दूध-न्ही री [illegible] बगै।
गाभ मसै [illegible] दू [illegible]। [illegible] गावै। [illegible]
[illegible]। पी र पशां मू [illegible] पीणा अर [illegible]। दूध
री [illegible] मू हारा सिव सिव [illegible]। [illegible] पर [illegible]
पाड हुग [illegible]। [illegible] टोर [illegible] गाड़ै अर
[illegible]। पणा घरा गुभा [illegible] रा टोळा [illegible] दुर। [illegible]
माळा भाळा मिनख अर [illegible]—[illegible] री [illegible] [illegible]
[illegible] रा [illegible] [illegible] दूजा सेवा रमै मग।

[illegible] [illegible] नीम रा [illegible] अर आंगण मोकळा मादा
मागरा। ऊना मेड़ी अर माळिया जाळी मरोखा तिया रगीस
विवाड़ा [illegible] धामण सामण भिसे। तिबारी री जगा मूँ माग, मगूण

भाकतो मोटो पडवो, बारी बारणा सू खुल्लो हुवा खाव । बारना आया गया ऊनरै, हर वखत गाव री हथाई हुवै। पडव र भागी छाता सूणी ऊची चौकी, चन्ण न च्यार पगोथिया । चौकी वीचै चौडा धून सारै तम्बाखू रो भरयोडो गन्टो पडयो गुडै । खन दो च्यार सुलफनी पडी हुइ । चीपियोर कुडछी, खनै मीखणा रो छालो छटयो पडयो हू। पळपळ करती बोभर मे पीळा सान सिरसा गोळ गाळ खीरा रा चिल मिलाट करता चिलमिया चाडोरनीयो । मुरडीजती मू छा रा गामरु जुवान आपतो पान रो चिन्होसो भोरो घालर चिलमडी थाम धू व रा हू ड अर गोट उपान। पण चूनिया म धणा पूटरा, जुगना सू होका भर भर पावता रव है। ईं कवत सू लाभ ठा ी है—'होका भर बूढा नै दीजे पान चाल्या पाछा लीजै । बूढा जाणु राख्यो मान टाबर जाणु चाल्यो पान । चौका माथ गुरवस हूसणा र बोलणा । चुपा चपा राम रमी चोलणा पजोलणा ' कोई पैलो कळी मे पाणी पूरो कर। कोई नडी नै भाजर भिजोवै । कोई चमडपोम छिडक कोई चिलम माथ चिलमपासियो जचावै है। डरडाट ऊपड कुरळ कड । दो दो होका बरोबर वग अर दो-दो ठाली पडया ठर है । मळो स। लाग रियो है खेलो सो भाग रियो है । मक्क मदीनाळ मीय दाइ दरसणा रा कौट हुरिया है। मिलण वेगी आव गाळा टूट मिनखा री कतार सी उतर है। वडोवावो नागपर नगर री नौकरी सू आयो है। अचावू क री मेल, हस भर खिल है।

घाणी गावतो जोगी घाणी बावतो तेली अर ढाणी जावता जाट जिया गरमाज बिया ही नाग पर सू आयोडो वडो (बूटा बावो) मूजरियो है। हूपीज्यो बठयो है करडो हूढ हुरियो है। कदेही-कदही बडक सी देव तरळ सी मारै अर देखण आयाडा माणसा माथ मूजै बळ। फाटै पोमाव भर क्व है—थ मेर माण-ताणन क जाणो हो ?' इ मग (अठ) थे मन के धो (क्वो) हा ? कोका

[illegible] ( [illegible] ) [illegible] देखणो [illegible] [illegible] [illegible] हो । [illegible] दिन [illegible] के बदयो है [illegible] ? [illegible] पर थी [illegible] करी हो ? [illegible] देखा । [illegible] [illegible] ? किण ( [illegible] ) [illegible] [illegible] हो । [illegible] लावै । लोग [illegible] टणै [illegible] हा [illegible] लावै है । [illegible] [illegible] । नीर रा नाव भी आवै । [illegible] हा । [illegible] गोरा अर [illegible] ने [illegible] हा । थारे [illegible] तो ऊँट गाड़ [illegible] अर [illegible] री ही सुवारी है ? अबे म्हारे [illegible] रेल री देखाटो न आय है । [illegible] अर सारी रात [illegible] जद [illegible] हो अर ( [illegible] ) न [illegible] । [illegible] बीकानेर रै [illegible] दिन पूरो [illegible] । टूटता-फूटता [illegible] पण [illegible] नहीं [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] आवणी [illegible] हुवाव । पण, अब आपड़ी रेल जरा न [illegible] भरां हो [illegible] ही जावो अर [illegible] न दो गो कोस रो पैंडो [illegible] । न चोर रो डर, ना डाकू रो । मरो भो, ना पाणी रो । [illegible]

राडगो ? रिपियो दो रिपिया भाडो ही तो लाग ? पण कित्ता ही चढो, कित्ता ही ऊतरो अर कित्तो ही भला ही भार घालो। कठे ही कूदे न पटकै, नाचे न चमकै। ज ज काळा ! ज ज काळी ! करतो वग है। बीं म ही जाजरू, बी मे ही पाणी रो नळ ! माही लालटण रो लोटियो अर हवा घातण री कळ ! फास्ट सिकन अर थाट, "यारो "यारो किरावो भरो अर मूता आराम करो ! एकरसी मिणत है सगळा लागर घरमी रेनडी करल्यो तो ऊमरसूतगा सुख हुज्यावै। मजो कर नाखो, मौज बण यावै। फळो ‡ पूगो है फोफळियो है काचरी है ! बाजरी माठ ऊन अर घी, थाल्यार मर गिया। दिन-दिन आपरी चीजा बेची अर सिभया बजार रो सौदो सूत लेर पाछा घरा आ सूत्या। बयू दो तीन दिन साई खोड म रळो। नर्या वगी भूखा तिसा तावडै बळो ? याव बिरादरी जान जपान अर न्या' साथ होडा खावता वगो।'

गाव रा मायोडा लोग राजी राजी बोल्या— वडा !! बात तो मोटी जबरी है वडो— हू धू नी रे ! बटाओ बापो ! घररी रेलडी न के नावड ? भाखा मिनख उतावळाहूर बोल्या—'भर री रेल किया करा वडा ? वडो बोलो— किया के करा। बठ तो बै क्वै है गोरा भर आपा इ भय (अठै) क्वा छोरा ! ( जका दिना अग्रेज साब ही रेन न चलाया करता हा ) भर बठ तो ब क्वै अजण आपा भठ कवा कोठलिया। बठ ता ब क्वै है इ"बा भर आपा भठै क्वा हा पड्वा। बठै तो बै बोल है गाट भर आपा इभर्य क्वा आट। बारै तो बठ ला री पटडी है जका माथ गाडा चाल भर आपण अठै धूड म बळ"गाडी हाळ पेडा री लीक ही लो री लण रो काम सारलो। बारै तो बठै लामा थमा भर तार है। पण आपण तो अठ लकडा री लामोडी हाना रोप परीर ऊपर बोदी मू जेवडी लगाय लस्या। के फरक है रे ? ब तो बिभर्य क्वै

मिटी अर पाणी न्याय करा ही बीनगी का मन ! हूं धू नी रे ! के फरक है ? वारै तो वठ धणा नार्व अन गुमानर अन अर पाणी घटै तवनो पता न्हीं न पाल्मोड़ा वार रेत पड़ जाणी । हूं धू नी रे ! के फरक है ? वार ता बठै घटी मिटी सू रेत माव अर आपगी वठ एक मान्मी होव रो पानी पी परो बाग दगी जिर्नन रेत दूर पड़सी । धू नीं रे ! के फरक है ? वार तो वठ अजण म कोयला थळ अर आगण अड बोडी बाड रो मुळवम भूर जगैली । जद धू भक भक करती धू वो उगती रेल धोर्वा तर चालती । गाव र माना लोगा रै बड्ळो मात जचगी । बोल्या— हवा मा बडा ! काल सू ही परगी रेलडी वणान्यो । इ सुख वेगी थारा ऊमरसुत पग पूज स्या गुण नीं भूला । मरे पछ ही नारै सू पगलिया रोपस्या देवळो धोकस्या । वडो— हू धू नी रे के फरक है ? परगी रेलडी करल्यो सो सो फोडो मिटज्य ।

वारा वासा मू घरदीठ आदमी बलाया । राड हडी ही छोडी नही । बा हिवागता सू ही रत र नांव नगदी रिपियो रिपियो लियो । वारी अर स्यारी पळाई । घरगी रेल वणावण लाग्या । गाव गर गाव रो मू वो, माँग लियो एक एक आदमी धूंवो । कोठलिया पुबकलिया तिथा खम खडा कर दिया । पली पोत मीकाए र गले माये थळग गाडी टोरी । लारी पेडा री मीकटी ऊपर मागीवाळ एक मोटो कोठलियो माडयो । बी र नीच फूम्योड घड रो गळवो— गिड़घनियो दे परार साहीणो राख्यो । बी काटलियै र लार लगो लगो गाव खान भाकता थका माटी मींगणा री गार गिलोर वोरी माठी दाट सू पनर—बीस पडवा घाल्या । पडवा म ऊपर सू सिणिया अर वोन्गी मीपोळी दे परार छा दिया । एक एक सू चिपा चिपार आपस म मिला दिया । दोना कालसा च्यारू कूणा बूर अर कडवी स्यू काठा कसता थका वीच वळी बाध दी । कोडवा अर ठाढ

चाढ परार पडवा नैं छद्धब कर दीना । डोरिया रा झूण बंध जवया वाती वाळी, पुदरनियां डव्वा री मोळै लगाई । बीस दिना तांई अटोम्टी वग्या हीचवया ! मनसू मग्धा—पच्या ग्रर। थवया जद जार रेल री रगत लैंण मार्थ ग्राई । पडवा नैं डव्बा र डोळ मारू हुराया ग्राडी खिडकी किवाडी चाढो ग्रर मळा फोपळियैं जिसै गावा रै माल सू माठो भर दी गाडा । की म ही घी की म ही ऊन की मैं ही मोठ-बाजरी की म ही परचून ! नीर पाळ ग्रर सेवण घास सू ग्रावा डव्वा पडवा छनमारया । बुनर बचर सू वोड दीना, लक्कडी लहै रा लाड लीना । एक एक मडवैं डव्व म चार चार, पाच पाच घरा रो समान दबोसगीनो । ठठा भर दिया, सठा जड लिया ग्रर बासा रा मुखिया माणम चनता पुरजा ग्राप ग्रापर डब्बा म रखाळा धणी बहै री मील सू जा बैठ्या । कोठलियैं खनस डब्बैं पडव मे गोरैं सा वा री होडा होड गाव रा दो जुवान डलवर छोरा बणार बाड दीना ग्रर ग्राडो काठो कूटो दे दीनो ।

टाबहाळी सुणाया सप मपाटिया, काना वाती सरकरी ग्रर मटरका करती वानी— हुसनाक ग्रर हुसरका है जवा ही गाडी चढमी । बाकीरारैं तो ग्रापरी वळगा गाडी ही ग्राडी ग्रामी । जै तो नागा लफ्गा ग्रर धक्का खोरा रा काम है । बोल जका रा तो बोरिया ही त्रिक ज्यावैं, न बोल बी री जुवार ही पडी रव । चरणिया सनावाती करी ग्रर चढग्या । दूजैं नै की नैं ही ग्यू सूभा ? ग्रापरळा (धणी) वापडा सुधा भोदा, गऊ रा ऊपरळा दान ! बीकानेर रो वैं बै देख ? बारी ग्रासी लेख-लेखै ! रेल गाडा री बारी कठ वडी है कूव री स्यारी भला ही काने। सीर री मां नैं स्यालिया खाव ।' सीर तो सावढ रो ही चोखो ! कोरा टीगर कूकाण्यां।' इसी अपरोखी बात्या वास री बहुवा रै मू ढै सूणीजी जद एक बूनी डोकरी नैं ही जोस ग्रायो ग्रर गाळचो रा मू क्ण ठोकण लागी । बोली—'सरपडो

नावै रै ई गेमसै म । 'जेवड़ी बळगी पण वट कोनी बळयो ।' मर ज्याएं ऐ गाडी हो करी तो सैर जावण री बारी ही सावळ बांधणी चाहिजै ही । म्हार तो पोमसाळो छोरो रातगो रोव है ! गाडी चढ़ूँ रेस पडू नरै ! पण चढ नागकिषप्रसाद चढ गं भोड़ म वै ? इसै ने देता-देती दूजी डोकरी भळ बोली— म्हार ही भऊ रेल देखण नै गई; अबो मरज्याणी परियां सू ही पाछी काढ़ दीनी। कियो— लुगाई री इभपा के काम ? तो रडकी हाळो लुगाई बिना पे के ऊपर सू मोमस्या ? गाव मे मायोडी रेल ही देखण देवो नहीं । म्हे तो गगा माना र गगां मे अर मऊ रै मारगा म ही घणी देखना । परभोम म ही कोई नी पालता । हत रा सत नी कैता । पण बाई ! के करा ? टाबर कूकाणना हो सिख्योडा है। आपणाळा घरहाळा पर ही पटकी पडगी जद दूजो के कर ? ले ल्यो नफी हो। जगा जगा लुगाया ? मूलरा मे इसी इसी बाता हुवै है । गप्पा जोड मू डा मच कोड है । मिनख मगेज म बगता माय नीं हुस । पन जमी पर ना टिक । बड र घर हाळी तुगाया एकैकानी मू डो उतार सुण बुड बुड काळजा बाळै ।

ठिटो वेगा मिन्दर सू सख मगायो घटी री जगा भान्र अर तबनो बजाया । हाक मे तम्बाखू रा पान घाल्यो अर घडी र टम खातर एक पूर्ण स मिनख र मूढ म नड़ी देपरीर पीवण न बैठाण्यो । कद पान बळ अर कद रेल टुर ? कोड लागग्यो हरख आगग्यो । हेला हेन हुगी— होक रो पान बळता ही एक घडो हुवली अर रन हुक जावली चाल पड ली । सर आवणिया लोग म वेगा चढ जाया नही तो आज री रेल चूक जावनी । लागा म आराद री लर जाग पडी । होळी री फाग अर भादव री झडी सी जाग पडी । उमग मे चारा कानी भाज्या फिरै मु बाळी खावै है अर होक र पान बाळणिय वूढिय मिनख माथ चिरळी मीच है। कोई मन आ परोर कव— 'म्हान ही

पावो दादा।' कोई कव साथा म चो वावा! कोई ववै कुरळिया काढदया काका! कोइ हाया जोडो करै—मोडो मत करो भिया! पैलो न्नि है पाछा कनै आवाला? केई गाळ काढै है— बापड सदा ही चम्मड पास पीया! आपर घरा तो भावतडी ही खेंची नी! कदे ही कागत री भू गळो बणार हो वैंख्यो नी। गुड गुडी रा ो सासा हा। अठै मार वणग्या मुखिया हाकची! हाकची बिना काटिया फाट? देख्यो कोनी कळी रै पड़नै! इसो डोळ हुवै! दियो फूटग्या कारै कामरो मोडो कर! पानडो वाळ-बूळर मळगो हुव का मीं दूज नै सूपै।'

बूढिय होकनी री डन-न्नर सी सोवी हुगी। च्यार मर भाकै अर उताव्ळ २ टरड २ खाच है। धू वों वाररो रार ही राम कठा रै नडो ही नी जावण दव। लोगा री करडी मीट अर निजर नै ताड, आप ऊपर जगतोडो भास्या न घणी बाळ है। कीरो जार चालै? नाम पर हाल वड रो जूनो जिगरी भायलो है। बाळ-गोठियो यार है। सजाळ रो न्नि मिसर सू वो भाग्यो भातो वखत हुग्यो। तम्वाखू रो गुल मर गुल री सफा चादी वणगी। पण बोदियै डण चिलमडी न नी नाखीस नी नाखी! छुक्ड वडै नै ही जू भळ भाई अर चिलमडी नीच उतराइ।

वडा वरस साठक ग खोडो मिनख! ज पर र सेठा रो चौकीग्नार! नाग पर री दुकान रखाळ अर बरमो वरस छुट्टा लेर अकर देस आव। मडारा पनग्गार मो ऊभड। बोली म फूल सा भड। हवडी साव चानना मुडावै अर घाळ जीन र कोट सू बीडो रा टुकडा काग्न काढ धुकाव है। गू भै मे ओठी दियासळाइ दवोस नखा सू बीडा रोसै है! मोटी मूछया जं'परी काळी घोळी दुमाला! काळा बू ■ अर काधे दुमाला ! सोकर री सी स्याणप मीणा री मी मनवार! बोटो री अक्कड ■ मिनखा रै विचाळै बैठ्यो वाता वणाव

फाडै। तारै लमूट अर लताडै। काळजो होळीज्य। लिलाड रो लाई उनार लो, जूना मू तालवो घड नाख्या। भीड खिडो जद नाका री थाडो अवन ठिकाणे आयो। मिलर बैठ्या अर आपस मे बाना बणाई— लुगाया बापडी माची कवै हा। गाव हाडीहेत हो मझ्या। भयान में भैडो नामून अर कैणकनीण करनियो। गाव बाग नो कनो मू तो काळा ज्यो। मुलक मू गुमान हटग्या, मूरख पणै रा मणो खटग्यो—"हू घू नी र। क नागै? घरगो राडी करल्या।' (म्हे यहू हू नी रे घर रा रेल वणायल्यो)।

म्हारै वामा में चैळ पळ लागरयो है। जाम्न जम्मा-जागण अर माता जा रा ढोल वाजणा सरु हुया। मूनी, भामनै सू वरी हुयोडा मुळजमा दाद घर गी रेन रा मुसाफर दूजै भो राजी खुसी घग आया। वामत री ताव नागो जद टोग सानारी'र थै लाग लारली किवाडया मू गोड कानी कर भाग्या हा। किसी गिजगिरी ही? हा तो फूस रा टापरा ही! दिन कुळ न अळ-बळर ठडा हुग्या। रेल रो जावक मुदा मिस्यो जणा इया रा जी टिक्यो। रळर आथण धरा बहघा। पाछा चूडा पैराइज्या, गीन गाइज्या तिया गुड बटायो। लाड कोड करचा। गाव नाव कमायो अर वीभत्स हास्य में बदळयो।

आज री सिरकार रलरी पटरी तो नहीं पण मोटर लोरया री लामी-लामी सडका तो इय गाव में वरसा मू वणा राखी है। सारै दिन घणी वना मोटरा अर कारा बग पण काइ भी गाववासी अब इसी घर री मोटर नीं वणावै। तिया में ही चढै-ऊतरै है।

●●

२

# भाग चंदरियो

•••

घोनी रा कुच्छा टूटेडा खलक री भाया फाटेडी अर तार तार पोतियो माथ र चिप्पेडो पडयो है। मथरो डोयो जुवान खळ बच ढीलो डील दियाळी रो सो लपाड साप। मोचडी निगतर फटाक, रावडी रो डाकी गिटाक! पगा र घणेरी ब्याउ अर म्हुदर रै लपते झपोना माकळा रगतर! तकनीर रो सोळ माना घरा भाग वळी, पण मकन में जावक मुत्ता मूल्योटा अर सू घराण रो मिनख जर थाणो सा दीन है। पूनी गाभ री साजत सफा विगरेडो है माला पानी री जुगती जावक फिसळयोडी है। इस मिनख र घरा बीज बमन री घतराई कर जच ? उण्यार माथै गण गाभ री रगत निया रच ? म्नै ऊग माळो ऊपर पनाण तग बारा! टोरड र वोम्पाळो बरथो बाधेडो पर मा रो दूग्नो माधेग। ऊग न गुच्या मत जाव है घरहाळी न घनाया मन में गरमाव है। आळमो लडचोतिया मा नानो! फोडा रा नुकसाण गरमलना म ग्याव घोना गयो एर बराबर जाव। ताळियो भाव है पण लाग बोळिया २ कर है। ताळिया घर कारा हो कियो कानों भीं ढार है! घोळो बग घाल फावी रा मो लाग काळो हुर कुन्नो नेनी रो मा पात्र। पाचिया गाळै अर काळा मोर मन हूढ बावण न जाव है।

पलाण उतारयो ढाँचियो लीरो पेनी पँखी, पटियो दीनो ! तणार री नाक्या में पीनणी मोडी अर नाड में थानी गार हाल जोगी । बीजियो वाध्या, हळ रै वासिय माथ हाथ मेल्या ! ऊट नै टिचकारी देर रास साथा अर दूजो हाथ में पुराणी ते र गावण हळी बाण डाँभी ! पल भख्यारै ही जमी में हळ अडग्यो चम री फ्नी में चऊ-धूम समन जम भिडग्यो । ऊट भभोड खायो, हाळी नै ताविजो प्रायो । भड भख्च ! तेज गाण में भिजोक पडग्यो ऊट पाछो मिरक्यो अर डरग्यो । फोग न्री करती भळगा खडी लुगाई नै हुना मारयो ही —

अे गाड ज !

'क है ? ' लुगाई क्यो ।

"है जामण हाळा रो मिर ! ' तोळिया क्यो —"हळ अडग्यो ! ऊट री मो रा भाग काडा ।

बळो ! पैल पोत ही अडा दियो, आधाहाले ? ' इतो क परोर लुगाई नस्सी ल्याई अर हळ आगली रेत अळगी वगाही । खाडो खादयो तो अडकास र जोर सू जमी वार एक मोटो टोकणो कढ्यो ! हळहळाट करता हीरा पना में हाथ घाल्यो अर हाळी बोल्यो — ओय राड ! करम में कोरा काकरा ही रिजक्याडया है । भाटा सू काठो भरयोडो है । चाल इया नै खेत सू बारै, उलात्तर गिणार आवा ! पथरा मू भळै कठै हा अडर हळ टूट जासी । ऊट री नळी तुडसी मेरी पगथळी सू सरला खुलसी, पडसी । दोनू जणा लाग्या अर मता सू वोन्योडी टोकणा घीसर खेत री सीव में लेग्या । आडा करयो ऊथायो हस्या खिल्या अर दूवो बघायो । मू घो करता ही सावण भादवै र घटाटोप दिन में सोल्ड् सूरज ऊगग्या । ड्रूा आवै अधवाळी छाव चिलका पड आधा सीसी हुव है । ओय राड ! आसा भाटा दगड निसरया है । कोरा गळाचिया गड्डा है ।

( तन मा र हाथ मगार ) मोगा ळर घोगा ? । गाम स्यारेच कुटरा रा मुगरल्या टूटर र गळ म ता पारा तोड़ू वर्षे ।

मोटो दारो मोगी पराई रघा गो अन भाव लागर मजबाज जमाई । हाकम मुगल्या हाथ मागो नाजम तसा गार भाव दमारा अर पौज [illegible] नगारा बाज्यो । छग्रा मा ऊन पाडा अर हाणा गजा परा र रगाम रा सिपाही सिरनार मार गार गू चढ्या । शिकारी लोगा माडा म घोडा दावल्या । जग्ळ म मग्ळ हुया । सुवारी रो आवतो देखता जोग यण्डा । बाग्ल्या दवबर बारगी बोशा में शिकार रो सौव पूरो कर है । मिनखा री बतार गोहा में रहनी गावरमा फिर है । नौकरा चाकरा र बरका सघणा ऊन पाडा ग लगा सो सघणी । माग दिन रवण्या अर पावस्या पण दाग्ल्या जाग शिकार एक ही नाधी नही । माडा मट्ठी न हाथ पान नही । बीडा मध फटक कर कुण ?

पाछल पोर पाछा मुड्या तो मारग में एक बाग आयो । लेत रै बार मै न री दियाळी सी भिनमिनती गोगी । च्यारू मर पळपळाटा हुव हा । सौ मो पावडा ताई रा मत सबनग हा रिया हा । लाल पीळा हरया मर दुरगा चुरगा तथा मतरगा बवळका मा ऊपडा [illegible] । नेज तारा सा टूट हा । मघावण ताड में ममोळक रतना रो च्यानणो देखर बादस्या न घणो इचरज हुयो । चा।नी तरिया देख्या ओठग्या मर मापरै स्याणै उजीर [illegible] साथ ले परार खेत घणा खन चाल्या । बादस्या री सुवारी रो हलबलो सुणपरा खत रो धणा चिमक्या अर डरपो तिया मूंयो बळथो । जाण्यो का तो धापडिया का कूचिया का कानबेलिया तिया वाळन्या शिकारिया है जका खेत में बड है । बादस्या र हाथी न देखर हेलो मारयो— अरे ! तेर दप्पू ढिय न परिया ही राख ! मातर ही बाळ ! मेर डगरो चिमक है ।' बोळियो किरळी मार है ।

बादस्या समझ्यो के कोइ ठरकीज्योडो गू गो मोद है। पूग नीवळयोड़ो वैरो पळगोद है। जद पैली उजार तो करनें मेल्या। उजार नेई जापरे र ताळिय न कियो— बोला रें ! हजूर री पालकी आई है।' जद तोळू मूढो भिचकार बोल्यो— जद ! कालगी मरघोटा न म्या (मढें) इज्ज (मोढू) लिया फिरो क ? बादस्या इरर नहो गियो अर बोयो म्हें ता थारें मू घरम भाइ हावण न आयो हू।'

बोल्यो— हु या।

बादस्या कियो— तरो नाव के है ?

'तरो नाव के है ? ताळिय कियो।

'अकबर बादस्या। बादस्या बोल्या।

'मरो ताळियो भागी। ताळिय बताया।

बादस्या कियो—'म्हे तो थन भागचन्दरियो करया भाइडा।

तोळू बोल्या— भा ! मरा क ल्या ?'

बादस्या बोल्या— ना म्हा या आपा पागडी बदळा, भाइ बणा।'

— भागचन्दरिय पाड स्यू गळयाड गमछिय रा पूर आपर माथ मू उतार पर बादस्या क ना करघा। बादस्या आपरी मुकमता रु वाळी टोपा भागचन्दरिय रें माथ मेल पगार कोनियो पूर आपरें माथ पळस्यो। बादस्या उण र म्हें में चिलकता हीरा र हाथ लगार बोल्यो—'भागचन्दरा ! तर उण रे वगी इत्ता हीरा पन्ना कठ स्यू ल्यायो रे ?

बोल्यो— ऊडोडै मे सू ! तू ही लेज्या थारलै दप्पू छिप माथ घाल ! वै सेत री सीव में घणा ही पडया, मेतगो नास कर। भागचदरियँ कियो।

बादस्या कियो— तू लड तो कोनीक ?'

बोल्यो— म्हू के बालू वासत नगावू के आर ? म्हार तो सत रो सिरयानास कर दियो।

बादस्या मन मन में मोकळो राजी हुयो अर सेत री सीव परस गिलै नै भुवार आइर आपर ऊन्ट रा बोरा भरा दीना। नव म सिकयोडा भळे चिलकता दीख्या बामू काठा गू भा भर लीना। ऊट लाद नै दिल्ली कानी टोरया अर बादस्या आप पाछो माईड सू राम रमी करण सेत म गियो। धरती रो बादस्या हो वहार व छानो हो ?

भागचदरियँ बादस्या न पाछो आवतो देरयो अर बोल्या—' भळ गियायोक तेर दप्पू छिप न नह ? डाने फीटो हैंसा सौ मी विरिया व गियो क इ हू ( हाथी न ) देखर मेरो हू टर चमक है। लेजा तर न परिया स न मतल्या।

बादस्या कियो— भागचदरा ! मिलण नै आयो हू म्हैं आद हूं। कन्ही कोई मेर जोगतो काम पह तो सीधो मेर कन दिल्ली आ जाई। भीड अर ओडी री विरिया थारी पूरी मन्त करू ला, धाडो भाजू ला।'

भागचदरियो बोल्यो— ऊह ! सो याल कर देसी, अब दाळ्य गो देमी बापडो ! वाना किनी भाव ? पाणी पील अर आधो मारग ल्यैंना।

बादस्या कियो— जावू हू तो।

भागचन्दरियो बोल्यो— जा ! जा गिड ! मत ऊटिया चिमकाना। बोदळो हुयो।

बादस्या हुस, भायप में पस अर न्लिी कानी सागी हीं मुरे टुरे है।

बायडो ऊगौ निनाण ग्रायो भागचन्दरियो सगळा सू पळी सत निरबाळर मळगो हुयो। धान वध्या खेत गरणायो। फूटया भाग फकीर रा भरी चिलम गुड जाय।' घरा ग्रार ग्रापरी लुगाइ न सत री सँ वाता वता"। बोल्या—'अे राड अे !

लुगाई धोर कँ सू कियो— क हुयो ?'

भागचन्दरियो बोल्यो— ग्यो सिर जणीतागो। करम में ता कारा भाटा दगड ही लिख्योड़ा है। तू कागे खेती हाळो हिनरडो कराव हैं। धान कीरँ बाप रो ऊगँ ? बेमाता तो भोड में राड भाटा ही माड्या है, धान कठ सू नीपज। सिट्टा म ग्रन्न रँ दाणँ रो अकार कोनी ! खाली पतवाळा सा काकग परपर चिलकं है। वेगी खेत चाल जको वू टा न बाढर नीच नाम्वा अर सत नँ सुया करा।

दोनू जणा मेत गिया अर लीलाकडब लीलाहूर काटण लाग्या। मिटटा समेत धान रा बूटा वाढ दीना। कडबा रा सायरा करघा, पूळा रा बायळा धरचा जद बीरी लुगाई बोली— ग्रिटटा म दाणा री अगा मोती सा लागँ। कौ स्याणा मिनख नै बलार पूछा तो सरी !

भागचन्दरियो बाल्यो— भाड तेरो ! नानडिया भाटा है नीं ? इसा ही हुवँ जाएा मोती ! दम्या घणा वापडो मोती ! पूळा रा वेगा वगा मारा त्या छिवरा चिणा !

छिवरो छायो बोनारो ग्रायो। खेत र सार लखा विणजारँ री बाळद ग्रायी। भागचन्दरियँ दम्यो ग्रर हेलो मारयो— 'ग्रातर

ही रानी रे ! तरा बळदिया न ! खेत म मेरा पूळा बाध्योडा पडया है। किडा दिया तो तन खाये बिना नी छोड् नो।' लखीविण जारो तिस र मिस नडा आयो। बूक माडी सन करी भाळो वण्या अर पाणी पीयो। सिट्टा म मोती अर लाल देखर वडो राजी हुयो। बोल्यो — तेरा पूळा वच है के भाईडा ? भागचन्दरियो बोल्यो — वचू हू भी रा ले। काकराओ कूचो है। बाळमाके ? रातडिया सू बाटाराड है। धन पमु री तो जाड नी नागली। धान उदरियो भना ही छा नया आपा तो पैली साथी क्या हा।

लखी विणजारो बोल्यो— तेर भाउ की करो, तू तर ठिवर रो सरामरी मोन बतायदे।

भागच न्दरिय वियो— द देई तेर जचै बिसा ! तीन नार बीमी तो दसीन नी ? छोर के हमरफी मागू हू हायी थाडा तो नव् ही कोनी ?

नखी विणजारो वियो— हुवा तो रोकडा पचास रिपिया ऐ मू।

भागचन्दरियो बोल्यो— उहू ! पूरा नेस्यू।

नखा विणजारो डरयो अर बीस रिपिया चढग्यो। बोल्या— मिसर रिपिया न्यू। देणा हुव ता द ना तो राम।

भागचन्दरियो बोल्यो— मित्तर मित्तर जाग कोनी न्हू तो पूरा तीन बीमी नस्यू अर सो नो सो दस्यू। डोको ही गत म राभूनी। मेरो तो गारो मळया करणा पम्मा। दताळी अर बू घरो दणा हुमी।

विणजारे री बाळद भाई नार नारै मोकळा मानो गाडा ही भाया। ठिवर रा भाया बारनानो गान माथ नाख्र उमरा म परदा हीरानमना उगारण लाग्या। बोल्या— अ धानिया रातन्याळा

तिणखला मळे बुहारल्या के ?

भागचंदरियो बोल्यो— बुहार-बुहारल्यो ! मलाही, चालणी स्यूं छाणल्यो, छालै मूं रळकाय ल्या। सारी छाडो राम जी रो नाव।' बस ! बोपारी नै राम लाधग्यो।

सतवाळी पडी गाव माली हुग्यो। अनर दानां वैर घरया, भूख सूं भगडा सरू हुया। घर ऊपरां धणी अर मवडुा करण खेलण लाग्या। माया नवै नागगो। ग्यारस उमावस ही नी तला चाता अर पचाला जिमा वरत वटोलिया तथा उपवासा री भडी लाग पडी। भ्रणहूत माठ सूं काठो हवै ! विगनी रा जिमा विनायक ! भाइ भीड म पडना भूल्या। मायी सहजोग री वाना कर कर पूरया। लुगाई कियो—'मव भूख मरता मरग्या नागडखादा। घर म दाणो न कुणको। गाभो म लत्ता ! मांग्यो मळो थेळा ला बैठ्या। अवद रो बीज नी छाड्यो। घर म दाधो भोवण नी रियो। का तो मळ वानी टुरो का थारलै घरम भाई इकवर खनै जावो।

बोल्यो— माय रा ! बो तरो बाप अब कीकय लायसी ? म्रोग्यू ओळग्य योग्य ही है ? म्हू ता बीरो गावडो ही पूरो कोनी जाणू।

बोली—'जाणनो के है ? वा दिल्ली रो बादस्या वताम्रो-हानी ? कूडे ही थोडो गी मव हो ?'

भागचंदरिया बोल्या—'ऊह ! बादस्या ! बादस्या मळे के बणाय हुवै ?

लुगाई बोली— राजा।'

भागचंदरियो ( मूडा मोडर ) ऊह घिराणीगोकाधो ! राजा बिना को चालनो ! काठियो फाटै।'

कठीन जाव ? पोर सदा सतरयां न किरप आई ग्रर तारव री नावो नर गळा वताई। पण तारय सानें री साथो नोर भूलर दफ्तर खातो दफ्तर खातो ! पूग्नो अेड़ आमो। वादस्या र भाई नें कुण लई ? कुण पाल ? निरवाळो कचडो म बठो निमर है।

राजा वादस्या भाग उजळा पुग्रायो ! घराणो जोव, म्यान वटायळी टावर इवाव है। भागचदरियो वागन्यो पाजी पण लिय पर इक्वर वाग्स्या इधरा राजो ! वादस्या जाण जिण न कुण नी पिद्याण ? एक ताजामा सिरम्गर री नाड कुवरा सागै व्याह माड दियो ! गाजा-वाजा हुव, नोबत निसाण घुरै है। म्यानी रत वादस्या र धरम भाई री सगाई र म वन्ममूरत री ससी मनाई। व्याह र दिन सर सचनण हुयो। लोगा अचुभो करयो। भाई हुवै तो इसो हुवै ! एक मुसाम रा भाळा मान ता दूजो शिरसण री गरज पाल है। किमीक नान ? किसोक सहळा ? घूटरो कुवाव उजळा हुयळवा। च वरी म गाव ग्रर हजारा रा हाथी घोडा तिया हीरा पना पारा आया ! मीठा मधरा गीत ग्रर सारा सूण मनाया। मैंछ म दाम तमाम नोग उच्छाटळा, कुवर जो र कोडा में वग। सासू सपमपाट कर साठच माळियो सजाव ! ग्रायाडी सुगाया जुवाईसा न उपर माळिय बुनावण खातर उतावळ कर है ग्रर टाबरा न टोर तगड है। फूकना फाफटी तिया अधरातिये रो इतजाम। मू न्खाळी ग्रर देवा नवी रै नाअत ग जाव ! रासमी रीत सुगाया रा नेग। काई गादा माग काइ दूहो देव है। काद ग्राटी घाल है कोई पाळी बोल है। वारी वारा मू मगळी वतळाव है पग कुवर जी मुनकार ही मी है। जद सग धापर ग्रापो ग्राप, ग्राप आपर घरा जाव है। जुवाई जी एकला हुव है जद ऊचा भाके है। माळिय री भीता माथ माळ्योडी रग रगीली तसबीरा दख दखर घणो राजी हुव है। एक ऊन री सीवी देपता थकों कान म ग्रागळी घालर तेजो अगीर

देवै है। ब्या रो घर, व धे री रात, कोई सोवण री बात ही नी कर। लुगायाँ गायजा सजावैं मिनख सीम वाडी री सला सूत मोच। जीमावणिया काम सळटावता थका दिनू गै र रमोवड रो सरजाम कर गोला नाला बरतण भाडा हाथवसू करता ठावा धरै है। अचाण चका तेजै री बिज्ळी मुणीज है। स बाला र ! जिड्या में थाटो सो पड्याव है। म मिनख चोक्ना हुता क्व— ओ कुण रे? सगळा ही पाछा पण्डथळो दव है— कठा कुण है? तजा गाव है।

लुगायां बताव— कु वरजी दीमैं।'

सै मिनख क्वै— कु वर आ है? ओ तो कोई टरडो है। का एवड रो याळ ( गुवाळ ) है।'

लुगाया रियो— सरडो ही म्हनि लाग्यो।

बीनणी रो बाप बा्यो— तो को सीख मा बाटी, मूका ही बाग। धामा हुग्या। बादस्या ठग लाना। थूक लगार काग्रिया थर दाना। छळर मार बाद लिया। पण गवडी रो बपा किसी साऊ ठे? कु वरी म भारा भीखो पड्यो! बटो रा जमारो अडावता माड न माठ अर नो न मो क्र आवै? घरा ही कु वार-काटडा विणावणा पग्मो। जान न बाग्गे बगी मार हडार! बीनडै न भा गळगोता अर अरधच न्र गिग्राग्रा। हुक्म री ताळ! रावळा बावळा! पा ड मिच परवत मिच! रावजीका न गर वस्त बाई क ? ब्राधो माप न बैं क गिरणै ? माम्माग्र अर सूरवा, नाळू मा वणण न ग्यिा ही पाग- थिया पग! अर हुया ही मामचदरियै री भारणो उतारण नै त्यार! केई जान म्हार्ना गिया, केई माल्टिय काना मू वा हुया। भाग रा वरणा काप्या, तकदीर न सिरवाळा आया। अक्स हूसी अर बोली— कुण घडो?

जद भाग अक्ल न बोयो— म्हारै मू तो अब की वरी नीं घटाज। मू वाई वा तिथा उपा लगा।

अक्ल वोली— निरळ आघो ! अगा सुधरी कर ! म्हू ताण मारू । अब तू म्हारा मजा जो ! वनी रा चाळा देव !' भाग भुवाळी खाई ! अक्ल माय न आइ ! व रो ऊगो, वचळाइ छाई ! पामो फुग्घो भागन दर बुधचदर बण्यो ! उठर बळ्यो अर आळ मू माटी पोथा बाहर वाचण लाग्यो। थोडा बोला आय, मैढाळा लागी साधा वूकिया भाल्या। कठा रो मैल उतारण उतावळा हुया ! बुधच दर तेवर बदळया अर ऊपर भाकतो थको बोल्या— क्यू ?

सूरवा म साग ही बोल्या— कोटडी मे तेजो कण गायो ?

बुधचन्दर बोल्या— सिरनारा स्याणा समझणार दीसो आय अक्ल री बीज ही कोनी के ? अचापूकरी वात किया करो हो ? तेजा अठ कण गाया। मीद नी आई जद म्हे भागवत कान्र भणनी पळार्ष ही। दमय सकथ म राम नीना र वियोगी छगा रा पाठ लय मू वाचणा सरू करघा हा। इतन ही ये आ धमक्या। (रीस मे आर) आप पराए रा काजो हो तेज र सवाय की सुण्यो हैकनी ? थार अठ आया जद तेजो गावणिया भठ वा या।' सूरवा वणिया री उपरली जाड उपर अर नीचाळी नीच ही रयी ! की बोर नी मक्या दहकी अम्या ! वधच दर री स्याणी मोटी वात सू सामीडा सरमीन्दा हुया। पाणा उतरग्यो सतगा हुग्या। विरमगावतामा बोल्या— कु वर सा म्हारी मोनी गळना हुई अब माफ करावो !

बुधच न्द्रविध बाया— गळती म्हारी हुई सा जिको आपर अठ आया। था जिमा मिनखा म म्हा जडा जिनावरा रो के काम ! था नस वमाना रा लिक्योडा टळ किया ? कोई वात नीं ! म्हू

म्हारी जान नै नेपरी जाऊ हू, थे सै स्याणा सरबजाण थारो काम सुधारो। इसो ठिकाणो म्हानै कोई भळ लाधसी। स्याणा री क योड़ी खूडी थोडी है— वर या अर पीन सारीमा सू काजियै। बुधन दर सिंघ ऊबवयो उठ्यो अर फफेनी लाई। कपडा पैरया साफो वाध्यो तरवार गळवढै घालो अर मैल मू हेठ माया। रावळै म छळबळो मची डोडी म हाना हुया। लोगा काना वातो फरी सामू माडा फिरो। भारी माळा वही।

मिनख मक्ल सू ऊजळो है घराएँ मू नहीं! विद्या अर बुवार मू वादीलो है रूप तिया जात सू नी। धन रा कोयला हु याव माया मींगणा म बदळ ज्याव! कूळ रो जस जावर नाम-नामून नीर भरै। पण ग्यान गुण अर कळा कदे ी फीका नी पड। भागचदर रा कठ भाला जिका सागी हा मिनख बुधन दर्सिघ मू सागोपाग मवबीजग्या। दाना मिणोल्य माइफरी दय।

जान में चम्पे चम्पा हर्ष; मैं्नाळा ठमो-ठमा कयी। पागडघा मन्नी भाग दिरायी अर बरात आग आपरी कठनाद गाई वताद। छकड मोकळी भीड़ री हाथा जोडी र ताण पागळिया सू पराण पाछा उतराया अर नोरा बिनता र साग सीख दीनी।

भाग मुळघो अब न वडी वताई। हारा प ना रा स्साब हुया। लखी विणजार री ब ी तठव करी। जाण र पाग अर जार सू म भार्ग-बीरा मुक्या मूरखता रा सारा माथना सुक्या मुक्या! अवल अर भाग री लारनी राड मिटी। भाग हारघो अक्ल जीती।

३

# पीरदानियो



निगत्तर फटाक ! निगत्तर फटाक ! फीडी जूनी पोंगा-पोंग मण मण री हुरथी है । भीजी भू गिच गिच गिच गिच चूरथी है । कादो धीचड़ गोबर अर चोलनो, मगता भातळ-पातळ पड़ है । लाग लिमळे फिमळ अर नामा हुव है । चळा भर टापरा घुव माभो दूध वरण हुरियो है । गुदड़ मीला गाभा ईला आला चूला वाकी गीला हुया गळ है । भासरा भांगण छनीक गिया है । वालठ पर पिछोकड़ा जो डा सा भरया पड्या है । बूनो बठो मिणियो धुलाव जोगी सुन थाव, डोकरी भापरो भाटो मासण हाथ पग तपाव है । छपर री जूनी जगा, टपकी, ठेगा टाड पर टगा । पीतळ री मोटी पुराणी परात छानडो र मोल काठा गाभा री कनात ! भाठा रा ठिया तीणकाळो तवो, वेवणी री बोभर रळका रळकार डोकरो कूडछी सू चिलकता चिलमिया चाढे है । ऊभनी कळी नामो नचो भर आछी भड़ा हण डरहकाव है साग साग पाणी ही पूरो कर है । धोळी दाडी मैंदी सू रग्योडा ऊपरलो होठ सफा पण ठोडी पर भासो सी जट नीची लम्योडी । सारक सी चामडी सफा सळ पडयोडी बोरिय री गुन्नी सी भास जावक वळ्योडी । धोती रो भाधो पाट गाठ र र

पैरयोडो गोड चर्ं। तैमल री तजबीज मू निवाज पढै। चीमियो सोधै वावळी सिरकावै, फूटेडो लोटियो मू ढ रै लगावै। लुगाई मार्थै जामदारी जीमण री जुगत, सूरज ढळ्यो लारनो वगत।

लिगत्तर फ्टाक! लिगत्तर फटाक! अ सलामे वालकम!

वाम्लकम चिनाम! डोकरी बोली—'कण पीरदान?"

'हा माऊ! पीरदानियो।'—पीरदानियो बाल्यो।

इत्ता दिन कठै हो मेरा नाडना?" डोकरी पूछ्यो।

'ओ हो तो माऊ कामरू दस म हा अे!" पीरदानियो कियो।

इत्तो मोडो किया मायो मेरा फरजन्द"? मा कियो।

ओ हो तो! इत्ता दिन कठै मोडियो बणायोडो वैठ्योनीं माऊ! कुमल्या री कामण गारी जुगाया कामण म्हारा कर राख्या हा। हूमैं ही मम्सा छुडार मायो हू। पग पग मार्थै मुखारी रा तिण-कला नाखतो थको मापर्णं मुलक री काय्न मे भाजर वडयो हू। वाकड मे वा ओगण्या रो जार जावक चाल्यो नही जद ही योडो हाल पट्यो हू नी तो माअते भाजत खला (जूता) फाटर खुसडा हुग्या! लिगर फ्टाक! लिगर फ्टाक! जूत उरडता ठरडता गोडा मे पाणी पड्यो। पीरदानियै मापरी माखी बाता मा नै बताइ।

मा बोली— मुकरिया बेटा पीरदान तू वेरियन म घरा मायो! पण! तरी वहू ता मेरा लान नानै उठगी। योडा ही दिन हुया है उघळगी।"

वेटो बोल्यो— हुआ अे माऊ! उठगी तो जावण दे! म्हू कोई दूजी रडार तान ल्यासू"।

इस ता वगा पारदान, राटी कर जीमन अर मोज्या

मेरा मूंग्या ।" मां कियो ।

बेटो बोल्यो— माऊ रोटी गाळ्यां बधाम अ ?"

"आ होकना ! आ मिला पड़ी है, मिरचां रा फोनगा रगड़र छमक देस्यूं । आपणा तो बाड़ा मूरी बाड़ा काठी है । बाड़ा हाड़ा भाड़ा न्याळा है" । मा कियो । मा पोथा रा॰ घर घ॰ बग्गी मिरचा । ददर जीम्या घर लग हूया । घर री बाना रा छड़ो पायो गावरी सुख माता सरु हुई ।

"क्यों होमतो माऊ ! गांव म मन राजी खुसी तो है ?" पीरदानिय पूछ्यो ।

"हा बटा ! ओर तो सैं राजी ही है । पण अब चौधरि माळी बटी लाम्बी कानी घूरगी । उधार घरा जा थारै । न्नू ॥ वेगो धको मिन आई बेटा पीरदान ! थाग गागा सामा आव है । तिवारी है तडा है पुगी है बटो है । मी विग्यिा काम पड है ।" मा बात क्यी । पीरदानिय हैंकारो दियो— "ओ हा ! सा मा मेरी दिनग बात ।"

पीरदानिय रात अडीकता अडीकता काढी । मस्मा दिन उगायो । भाग्वफाटी क्षागी थाटी । लिगत्तर फगाक ! लिगत्तर फगाक ! सूरज री उगाळी साधो चौधरयां र घरा गियो "बडा राम राम !" पीरदानिय कियो । बडो ही बठ ही घै पडी अर जोर सू मारी थाग — मेरी लानी ज ! तान कर दखू अ ?" पीरदानियो ही का॰ म सिर घालर बग्यो । आरयां म परळगी पाणी ले आयो । नाक सू मरडका मह कर दीना । डसका खातो टसका मसका सू वाला करण लागग्यो । अब बडी ही थोडी मोळी पडगी । लामी गू घटो का॰ लीनो अर माथै रै हाथ देर सामो बठगी । सिसकारो नाख्यो अर बडा पूछ्यो— "कुण पीरदान ?"

'हा वडी !" पीरदानियैं कियो ।

कुन हू आयो पीरदान !" वडी बोली ।

'ओ होक तो वडी ! भगवानग दरीम्वान हू आया हूक्नी !" पीरदानियैं कियो । वडा भळे भू ! भू ! रावण लागणी । पलो खच लियो मूंडा ढक लियो अर पूछ्यो—

'वटा पीरदान तू दरीखानैं हू आया है—वठ ही लाली को मिनीनीक ? लाली कोनी रही ! भगवान नैं सुहाई नहीं" । वडी रा ग्रान तिया भोळप नै पीरदानिय चट गुणली ।

ग्रा होक तो मिली ! मिली क्यू कोनी वडी । लाली तो भगवान रैं घरा छूडा पैरचा वठी धमड बिलावणो करै ! पीरदानियैं कियो ।

वडी बोली— साचै हा रे पीरदान ? '

'ग्रो होक ता साचै ही नी क झूट ही थोडी ! ' पीरदानियो बाल्यो । लाली तो वठी मजा कर ।'

वडी बोली— लाली की मगायो है वे वटा पीरदान ?

पीरदान बोल्यो—'आ हाक तो वडी ! लाली ला मनैं इतगं मठै मेल्यो हो है। बीरी चोजा नवण नै ता मल्यो ग्रायो ही हू । आप रा सैं गणा मगाया है । नू दोंडा नुकारिया लावडा अर पिवक रियो मगाया है। भगवान आपणा जुवान् है काई कोयळिया-याग लिमो ही भना ही घानद । पावण वैंगे अेक कामळ अर अेक पटुडो मगायो है । पल पोन रो अटा है पूरा लाग । सौ रिपिया घालद नाला नैं कना ही अडयं मडयं चाहीजज्य ।

वडा बोली— पई वुगचा ही मगायो है वे पीरदान ?

ओ होक तो वडी मर म्यन विसो टोरडो वैंथ्यो है ? नको

पेर्‍ पेवटी जिगी सगें चीजा मे आऊ ? म्हू ता उडण मटोय मू उतर परो र आया हू । पाछो जागू जद की मोट दरसन माथ पल्यां नाणो पड़सी । उडण मटोनो डाळे र सार माण मामी जणा म्हे भार घार र भगवान री सरणा रो गलो जमू । सो वडो ' मू पेई तो रैयन " भर बुगलिया बाठा छ्वार भन्वर बाध द । बाकी छ्वान लिया छाग मोटा मू दडी हार भर वठी-जवटा लागडी पाजव, सीव निणला न व बाप हानचून कोई चीज ना भूली । पवटो म्हार मगरा म गड जाव । म्हू तो पूठ गट ी गाघर आसमान चड़ जा मू । ऊचो उड जामू । बोझ भार नगा म अड हू ? म्म बोझ मू बे दबू हू ? धण्या रा धार बोणे ही बिग न हू इम फाड न मी बोना धारू ! बगी मी म चीज बसता घानर भला जको सरगा सरपद्ध ! बकु टा बगू । पीरदासिध कियो ।

नू वा घणलिया धावळा काचळी कबजिया बागसी कू पना काठी ज्ञोधपरो भुगलिया सण गाभा भेळा कर परार बुगच म बाध दीना । फामडली फर्मू रं रेसमी गू भा म काजळ री डब्बी सीसी दाळिया वासवाळी री सीसी भर मानमारी आळिया री सारी जिनस घाल दीनी । दो रा टक्का रिपिय रा गाटिया पीसा चाळीस च रा माही राणी छाप पचास पचम आरज र मिवक दीपना अक पाटेड परनाण र पल्ल बाधर बुगी री लाग कोथळी म घाल न डोरडो सू दडा दा जडाजन कर परीर पिवकरिय बिचाळ बुगच म दे दी । कीटो कमार रो कटार गाल मटकर वणा दियो । कामळ भर पटूडो हाथ म भला दियो । मटकेर सीस दे दोनी भर चटकर सरब वाता वता दीनी । बेटी रो मिर बुचकारणो भूळायो जुवाई नँ मासीस कणा वनाइ अर विदा करती यकी वडी कियो— बेटा पीरदान ! जुवाई न नँ परो काळी पीळी वळायण मनाई । क देई म्हारा खेत चळ है । गुवारियो बीज जको मोवळो म अर समो कराई वेटा ।"

पीरम्मीयो बोल्यो— ओ हो तो वहो ! मेरो इनयै वे फोडो है ? आपरा जुवाई रै हाथ म हो तो है। जाता पाण काळा-पीळी मळायण वरमा देस्यू ।

वहो क्यिा—'तो हुमा वटा ! वगा सो जा अर मेवहा करा !

खळखच ! खळखच ! हीलो पिलाण ! "दूटर थारो धणा जीय रे थारो ! खेत म हळ खोगो हुव नी ? वेगो मा ग व चाल, पगो पग पाछो आवणो है। ऊमर न ऊमरो सो नावहना ! भीजा सूखै है नी ! ठोकर मारी मलकारो करयो अर दियो सामी मारा रो मबीड जद हळा सू थवघाड ऊट थोडो साण लीनी। खळखच ! खळखच ! थडा बोलै पलाण डाल है। थारो हाल, ऊट धारो चाल है। ग्यारे ती खाञ पिम्नव है ऊट गाव खानी याव है। खळखच ! खळखच ! पासळघा माथ अेडघारी घू काई, पण थवया नही जका सू पनी गाव नडो आम्यो। ऊट उनावळो घर कानी चाल्या। भूवो मरतो ठाण माथ ऊलळचो। अरडू ! खळखच ! खळखच ! धणी जीय र थारो ! माड आगै ही ज क्यो के ?' चौधरी कव है।

चौधरण बोली— घरे क्यिा आया लालो रा बाप ? थ क्वा नी 'सो सेत बाजर ही घरा आस्या। दिपाळ ही क्यिा भाज आया।'

चौधरी बोल्यो— ३ [illegible] राड ! गुवार कठ हा ? थोडा सो तो घाल्यो हो। गुवार निवडग्या लवूण न आया हू। आज्यो ना दिन गुवारियो मळ बीज देया ! भूल चक्कर राम जी दाणा द ही दव तो हाल हु पावा ! वेगो खोल कोठलियगो साहिणो गुवार काढा।' चौधरण कोठलिया खोलयो। चौधरी दोवड भाखले में च्यार मण गुवार रा माटका सू मिणर दो लोदा बाध्या। पाछो खेत जावण न

नाच्यो अर बान्यो— चटकैर आऊं लीरा मऊ लाईं न मड़ पड़सी। मार बोली। पछी ही पिदैली। घर क्यारो बाजणो है? टगा-टाबार गाव। बाजणो है। बाजरा में बाज्या नईं। है ता ब्यार हो पण ब्यार गो जिला लाग है। हाथ ऊपणो होगै। घरगा राणू हूं। 'मन बारोडा गावणा लागै यो दे मादू लव। कोई रा काम करणू कोई हा नी पर। इज्जत पड़ अर मज़ाक करवावईं। कोई हठ मठार तोड़ न्न मो मन ही मायड़ करणो पड़। कोई मारो मारो कर तो मनै ही बोलणो (हठ) पड़। आपना निंग रोगिया पोवर दयू जीमाऊ अर विद्यार सुवाणू। गगळा ऊंगनै चराडू पाऊं बांधू अर बारी-बारी मू हळ जोतायू। थोडी गी हो काईं बाबळ-गावळ लिया लोग्यो हुग्यावैं तो बाबा! बाबा! बाग ली देवण लाग ज्याय। क्यां रो मन बावणा है? मेरो तो दाती रा डोडा न लिया। फाड़-चोर बोमठ मजा लफ्गड़ करणी पड़। हमिसो जिया आपणा है। घेटा जगा करता अर बिघाळ बिघाळ फिरता स्यान आणो। घेटा के है नगा है। अबकाळ तो दोरा-मोरा अर पछर नीवा बवाडू माग माङ प्राप प्राप री तोंचोर थोडो। म्हार सू तो बो हिन्नरडो लावै म्राव नीं। चालो समो (टमानो) हूयाव तो बळणा करदू।

चोधरण बोली— मोटोग्ने छोरो सेमयो लहाणो मोडियो मळ्यो अर उलाडो है। जवा नै अस जदो करदयो छाटिया तो पणा पर दा बोलनी किया काम कर बोलरसी। सूधा ही है।'

चोधरी बोल्यो— तेरा जायोडा तो स अेरसा ही है। मू ग मोठ म कोई याद्र कोनी। क बूडो थोडो है—'इसी लाट इसा ही पाया इसी राड इसा ही जाया। इसी इट इसा ही रोरा, इसी माय इसा ही छोरा। बापडी अक छोरी सावळ ही जकी बपू जीव ही भागीन गई। रामनी न प्यारो हुई।

चोधरण बोली— [illegible]! लाली रा बाप। इत्ता म तो छोरी

घोखी ही । टीगर तो कुठी विगाड है । सम थीर ऊपर गिया । थ किता भूजोकडा बळोवडा हो ? वित्ता ही सैं व सबळवादी है । साची कयी है—'भा मायँ डीकरी, घड जिसी ठीकरी ।' म्हारै माय तो लाली ही अकी रामजी र घरा वठी राजस कर । दूध म राधै घी म साव । रामजी जिसा जुवाई नठै पड्या ? कारा ही अल्लादीन जी हाळो पीरदानियो समाचार लयर मायो हो । वीर साग लाली रा मगळा गाभा पीरडा घारमा है ।'

चौधरी बोल्यो—'अरे रांड ! किसो अल्लादीनियो आया हो ? म्र डूमडा-डुमणा ठग बळ ! की दे कोनी दिया है क ? वैं रा वाता किया कर ! पून निकळगी क ?

चौधरण बोली— हा लाली रा बाप ! अल्लादीन जी हाळा बेटो पीरदान, भगवान री दरगा सू आयो हो । आपणी लाला रामजी रै घरा चूडो पैरया बैठी धमड विलोवणो कर । जक वगी पीरदान साग ' चौधरी वान बोटर— अरे रांड ! की दे को दियो है नीक तेर बाप न ।

चौधरण—'हा लाली रा बाप ! लाली वगी पूर परला अर गणी गाभो तो घाल्यो है । छोरी में हर वगत फोडा पडवोकर जक वासतै खुल्ला टका पइसा अर स रळार सो रिपिया पीरदान न दिया है । जु बाई खातर कामळ पटूडो साग घाल्या है ।

चौधरी कियो— थोय राड ! तरै बापगो सिर ! लाली अब कठ बैठी है ? वीनै तो बाळर राख ही कर आया । डूमडो मन ठग लग्यो । बता तो सरी, कुन्न गयो है सारी जाऊ ।

चौधरण कियो—'दरगा गियो है लाला रा बाप ' अकूरडी ऊपराकर खोड हाळ गलै ढळयो है ।'

चौधरी— 'जणीतागो सिर गयो है तेरो ! खळबच !

मठबच ! ऊँट नै न्यिो पीरदानिय र मारै । गांव सू निराळी हो चौधरी रै परकै पीरदानिय रा माजो भू पर निगत्तर फटाक मन्चोड़ा रा खोज माग्या ।

माडी गौ पण डांडी गायां री गौ यो मायनेत सान्नैं चावता ख्पेज टो यो ! ऊ काठो काठो हुव ! गेना गु ऊध (दूज) मारग क्या चाल ? जन चौधरी जवाण र फोगां री मोगी मोटी पाय मात छडी तोड नेवै है । कामश देखर ऊन डाठी सूयो हुनाव है । मठबच ! मठबच ! पिनाय रै घडा रा राडरा हुव ।

निगत्तर फटाक ! निगत्तर फटाक ! पीरदानिया भार ॥ नद्द पद्द हयोडो भूम मरण न नागयो । मिरचां रोटी गळगी भर मीठ पर जीभ ढळगी । फनेरदान खोन्यो मगद अर कीटी खावण धळ्यो । धापर दठ हुयो ढेओ उघग्यो । गोला गीला सुवाद सक्र पाटा ठोकर हात हुयो । पड सू धरपोड (पीरदानिय) न अन री घळ पावण न लागगी । भ्राख घुळगी भाळस भाग्यो । भ्राड नढ फरण री जीमैं फरनी । बठै री मीट नागगी । ऊजळी रेवळी मार्थ कामळ विछा गउडी सिराण मे नी भर लाग्न भावतो मुडतो पको अपूठो फुरर म्राडो हुयो । लागै मू ड माम ऊव घोर पर फ्रवरकाळी लीनी बन ! जनी गाव री भ्रासा रडियो बाज । उघ र नीच बर गाव री गला भ्राव । बो इकळग गाव सामो देख । सभरूक नीन सव नही ! चारडर म माव नही भ्राड पडन पीरदानिय री भ्रामा रडिय वानी करडी निजर व घगी । मोफक सु नींदडी उडगा विड रगा । गाव कानल घोर सू ढळन ऊट माथ दोना कानला लटकता पाछळिया बोरा री खानी खुज अमी पर उतरतै चील कावळ री पाख्या सी हालती दीसी । मठबच ! मठबच ! मठबच ! अेडी पर अडा वानी मारी रा भचाड भर कामडी रा सबीड उपडता सुणा ज्या । पीरदानियों सूत्यो ही चमक्यो । सला मोलर भाज भीर

यो।

चौधरी पटपडै र हाथ दे र हेलो मारयो—"धोरे ! डूमडा रे ! खडो रज्या, नी तो तेरो बाबलियो ही नाखू ।' जाड भींची अर तडातड ऊंट र कामडी मारणी पळाई। पीरदानिय ढाण छोडी अर पाछो भाक्यो पछै थूक मुट्ठया में जोर री तडी दी माज्यो। चौधरी ऊंट नै ने धणा बीधाळर ताण मारयो अर कियो— 'रहकी हाळा डूमडा खडो रैज्याई जाबण दयू नो कोनी भनोक। बिल में बडयो नीं छोडू लो। का सारै माम मानज्याई। तेरा च द-रमा मोय नेई, मार बिना का छोडू लो नी।

पीरदानियै दूजै मळे लारनै देख्यो अर—'तुरत जुढी तुर कडो पिच्छम बुढी जाट हाळी कवत र अनुमार साधतो थको मारग मायल मोट खेजड माथै चढ बैठ्यो। उगाणा पग मगरा में गठडी अर आड लामै डाळ माथै लूग मालर लुक्यो भाकै। चौधरी कनकर कठै टपै जद खोज मिट है। भच्चकैर भाजन ऊंट नै टाम नेवै। बुचकारी दे र दोरो सोरो ढाबलय। चौधरी ऊंट सू ऊतरै करडो करटो चालै, आकडीज्योडै डगर नै सर्चै है अर खोजा पर जावै है। अचाणचकै ही खेजड रै डाळ माथ दीसी गाभा री गठडी डाली, दात पीस्या अर गाळ काढी। कियो— अरे डूमडा ! नीचै माज्या।'

पीरदानियै अगूठो दिखाळयो—'श्रो ले वडा सो ले ! धोनी मातू !' जाट नै आई रीस ऊंट न ही जठै ही नाळै नीचै छोड्यो अर आप जूती खोलर खेजडै चन्ण नै लाग्यो। जोर जोर सू दूकै है गाळा ठोकै है। पीरदानियो हमैं वटरी गाळ घी री नाळ सी समझै है। चिडाव है अगूठो दिखाळ है—'श्रो ले वडा श्रो ले।'

चौधरी दोरो सोरो उब र खन जा पूग्यो अर लगायो सागी डाळ रै हाथ ! पीरदानियो लटकग्यो, थक्योडै ऊंट पर धाल डाळै

र बापर छिटकग्यो ! ऊंट गण्यायो, पीरदानियो पलाण पर भुरग्यो । घोड़ी पकड़ र सामो फुरग्यो । आगल आमण बठ र गठड़ी आग घाल ली । नस पर हाथ देर मोरी भाग ली । फीपा गीत गाव ही सौस भाग्यो । बोल्यो— बडा दरगा जावू ! दे बठामिय पगर उगर टिचकार दियो । सपेड़ हाडां ऊंट सागण ही पाछो पकड़ र लीनो । अब द में तीमू पावडा जा लडग्यो । चौधरी डाळ ऊपर बठ ही हेलो मार्यो— अरे ! पीरदानिया पाछो आ'ज्या ! बड न मत फोगा घाल बेटोगा बाप ! परणो ही छोरी है, [illegible] रो पू नी ! पण पीरदानिय तो पाधरो घट्टो अंगूठो दिखाळ दियो । जद चौधरी सिसकारो नाखर कियो— ऊबो चड तळ नै दस आ धन गिया साली सब ।

●●

४

# आंधियो-पंगळियो



प्राभै माथ धु धोडी र्हई रा फमसा भूरा धोळा बादळ सीधा ही भावै जाव है। मारचा फाड धाप्या पण छाट तो उडर ही नी पवै। भोमी पर लाय सा बरसै तावडाळा हमी विरढ पढ जाएं काळो वभाळो है। सावण मूको ही जावै भादवो अधावणो आवै है। फोगा री मूक्योभी छडचा रो तूळामतूळा सू सढीब ऊपढ। ऊमस भापरै तातै सास सू वसरायला बाटका रा कोयला वर भाकरा उछाळर काना में गिलगिली सी भरै है।

आंधियो पगळियो सून घर सू साम्हर बार भाया भर बारलै गावरी गळी रै नीम री ठडा गीली वेळूधूड माथ गुडकगिया। सिसकारा नाख्या, उबासी खाई भर बोल वतळावण करणी पळाई। धमका पाम्या भर डसका भाया पण उजड गाव म कण ही नही वन ळाया। लकीर रामता भर रासमा स रुखाळी किया करता, जका माईत रातारात लदग्या। उचाळो घानग्या भर भाधियै पगळियै न राम र डोरै सूता ही छोडग्या। कैवत है क 'काळा रो क डर है वाळा रो डर है। विमा बाळका नै लोक काळा स नी बाढ सक्या। वेअर खाग्या मऊ माळवै पटक दिया तिया परभोम म नाख आया।

सूना सगळा न घरां छोडग्या जरा री तो कळ में नैणा ही न है ?

टीळो मारो किळो करी पर माथळा ही नाना में मार हाको मचायो । दोनवा गिर योदा मार लिया पण ठेना रा उगळो टढो वगी सू थान री लापटां मिनको दियो । घोरा र तारां में, गाम री गा रा में माधिय पगळिये री दुगी उजाज सू हुया न्या सूकग लागगी । वगळ जरळ करती विरर मळळा उगा, पण ' मण हा ब आर दिया रा सागू नी पूछ्या । मा र गा पुन वारा गिया अवी वात माधियो पगळियो जाणग्या । थान रा उणर भोजण लाग ग्या । मरता क्या नी मरता ?

क मरा रे भाई माधिया ?

मैं मरा रे भाई पगळिया ?'

पगळियै कियो— था नो मर माऊ सो रान र पन मऊ थानी उठग्या लाग ! आपा न सना ही छोडग्या ।

माधियो बोल्या— भाई पगळिया । थू म्हार गमोळ ब क्या मर मारग बतातो र ! म्है लन लर माईना र लार वानू !

पगळियो वा यो— था तो भना ही पण मा बाप आपा न के हाप माथ ?

गान सू गनो कढ्यो माधिय माथ पगळियो चाल्यो । रीध थानरा रा राम अर भोला रा भगवान ! घर सू चा घर मजला ! चालता रिया । हागो मीं नाख्या हिम्मत राखी । आगल्ला दिगना चालता चानना बिधा र मारग में एक सूनो गाव आयो । गावरा माणस तो घणखरा रावसा खा नेवट्या तिया ऊबरया सूबरया भूख र विज मऊ माळ्व भाजग्या । सुनाग पढो भूत वम मिनख रो नांव ना गडवडा सुस । भूख र सारण सू पगळिय री सुवारी बढी । मारग में लाभी पसरी लाव सू टिपलो माधियो उळमर पड्यो मर

बोल्यो—"के है रे भाई पगळिया ?"

पगळिय बताई— कूव री लाव !"

'उनमना !" कै परोर सरड देणी लामी पडी लाव नै आधियै खींच लीनी हर बोल्यो—'इ री तो मेरी तागडी करमू । लाव न सावटी नाकै म बाध्योडा कोस आयो । जद आधियो भळ बोल्यो— इरी तो मेरी टोपी कर मू !' भूण उतार परोर काख म दे लियो अर भा-पा— आ ता म्हारी माळा रो मिणिया है।'

पगळिय न चडा परोर आधिया पाछो ही चाल पडया । गाव सू वडता ही अेक ब्यायोडी कुतडी री पुरी आयो । ऊडै दरडै सू आळड्यो अर कूरकूरिया चू चाया ' आधियो बोल्यो—'अ क है रे पगळिया ??'

पगळिय कियो— 'कूरकूरिया !

"उन भला म्हारी पू थरू ! आधिय कियो तिया कूर-कूरिया पकडर काम म घाल लिया । कामडो जच गियो, भटकर भीर हुयो । घर मू था ! घर मजला ! चालतो रिया । मारग में अेक म री यु ी आई । स री मूळ वा तो सुणी अर आधियो चौक ना हुतो थका बोल्यो—"अै के है रे पगळिया ?

पगळियो कदै— से' री मूळा !'

आधिय किया— उन भला म्हारा पटिया कर । यट्टो भरर से' री मूळा मार्थ में टाम लीनी अर टुर पडयो। वगता वगता मारग में अक दूजो गावडा भोजू आग्यो। ऊच ठठ पगळिय अक घर मे अेक बूढी डाकरी न विलावणो करती बैठी देखी अर आधिय न बताई। आधिय, पगळियै समेत आखो अटबर डोकरी र घरा उतारया अर विसू णी मारण न बळ्यो । डोकरी भापर घरा वटाउ आयोडा देखर पाणी न चाली अर बोली अर री स्यात राख्या । म्हू पाणी रो घडो

ले धाऊ हूं । पगळिय हुवारो भरयो, डोकरी सिर माय धढो परयो अर प्राधिय घर में मोया फिराळा सद भरयो । दा रो पिरायगा भो परोर— भो के है रे पगळिया ?'

पगळियै कियो— द्वारो बिलोवणो ।

प्राधियो बोल्यो—'उनमम्मा म्हारा दूब नक ! मारा चौजा र माय बिलोवणो भळे माय मार पगळियै न काप बटा लियो अर आगनो पग्ग मडो कियो ।

उज्जड़ मेड़ा सूना घर मिनख ना सुगाई रागस अर नर! नरी रो रुळो रागसा रो टूळा, गावरा गायगानी कर दिया । मिनख खा नवड़या तीन रा काम तवड़या । रागसां री जमात जुगत सू र व है अर मावळा मा मसादा उडाव । घाडा दौड धर फोडा करै अर दूर दूर री दूकाना फाड ल्याव है । रात्यू ढाल्या अर ढोरा ढोरा पर लाम्बा कतार सा वर्गे भूता री लगर सी लगै है । खाड रा कापा अर घी रा घडा री राक्सां रै घरा महामोड होरयी है । सीरा भोजन राघ मोरम प्राव प्राधियो पगळियो हापरा सा मेल्या सीधा जावै है । राक्स आपर ग्रायोडा पदाउवा न केरै मू घला धण वेगी नीसर है । लारै सू प्राधिय पगळिग न सूनाम लाध जाव है । घर रो कूटो खोनर माय बड ज्यावै अर माडी भोगळ जड लेवै है । प्राधियो आप रो सारो भार उतार परो पचघोडो गुडक ज्याव । पगळियो होळ होळ राक्मा रा रा घोडा सीरा माबू मळकाव है । भूखो मरतो सगळो मरजाम सामट लेव है । ऊदरयो सूवरयो भळे भापर वेगी मू णा खचू णा में लको २ सोव है ।

प्राधियो बूझ है— भाई पगळिया ! भूखा मरा की खावण न है कें ?

पगळियो बोल्य— प्राटो पडयो ला धो है जका रा रोटिया

पोऊ, तू दरुज रै किवाड सार सिरदे परोर सोज्या । भू टो काठो राखी तकडो रयी तिथा दबडक मारी । राखस धर में आयग्या तो आपणो अक गबळको अर गटको कर जावला ।" पगळियै परात में भाटो ओसणर चूल में वासते जगायो इत्तै न ही तो बार सू राखसा रो बोलारो आयो—

"मायनै कुण ?"

आधिया पगळियो समर बैठ्या अर जोर री दाकल सू पड उथळो दियो—

"बार कुण ?"

डरता सा राखस बोल्या—"बारै म्हे राखस !"

ललकार सू—'मायनै म्हे बडवाखस ?"

राखस होळसै— बडवाखस के कर ?"

सामा बोल्या—( चिरडी भींचर ) 'राखस के कर ?"

राखस— मिनखा नै खाव !"

बडवाखस—( दोनू दात भींचर )—' राखसा न खावै !"

राखस बोल्या— तो दिखाळो थारो कांई सैनाण ?" जद आधिय पगळियै रै किय मुजब साळ री सिर सू ऊची बारी सू लाव नै बारै पटकी अर कियो— आ देखो म्हारी ताग्डी ! राखसडा घबराया ! इत्तै न ही बारै छन कोसडो जार पटयो अर सागै ही उ थावळी दवाज गरणाई— आ ल्यो म्हारी टोपी ! अब दा देणी भूण भळे बगायो, जका र नीव अेक दो राखस आयो । आधिय बतायो—' ओ है म्हारी माळा रो मिणियो !" राखसा न धूजणी छूटगी । जित्तै नै ही बारी सू से री सूळ राखसा र खुभाई चुभाई तिया चपी, जबी बिया रै हाथा पगा म गुडी बडी अर टूगे । आधिय ऊपर सू भुकरिया भळ पटक्या अर पटिया तिया जू वा रवा रा नावटा सागै ही बताया । उपरोथळी छा रो विलोवणो खिणायो,

मेळावायो अर आप रै मूंड रो भाग मिलायो। जागमी रै हूंगै माय पनो अर बड़ाई आगी। हुज्जी कर पच हांगो।। पर्हे भाग बारनें ऊभा दर है। घेहड बरनै दानी कर परो गाळ री बारी नाळी भीम रै मारै बेई मोडी घोडा मम्पा पर बंई ऊपर चम्पा लिया गाळा रै मन्चोंन मन साथ ऊभनो अब रागग बारी म मूंगो बावर माळ मैं दरपण लाग्या। अब बगन हो आधिय पगळिय री सवा दिग्पो। पगळियो रोटियां तवतो यदा बोल्यो— उपरलो सधीव नाजनो (रोटियो)?

आधिय भूल मरत निरडी भींनर दियो— होय म्हू तो सगळा ही खानेगू र!' बोर न पानबो खाजो ही पगो! नामभा भीम रै सारै सू बहाएड! नगाड! ढ पटपा। बोथीं सू आग अर थी थी सू आगै भाज भीर हुया। पत्ता तोड रा गिया। मारन ही नीं भाज्या! देख्या ताण! तेतीसा अर तरो! सावरियो सवळो हय ता अवळा हुवो अतेक!

, याव में घोबो चसघोड न जोवो अर बाळक न वोबो आपे ही आस्याव जिया ही माया पगळा न राखसा रो भेळो करघोडो धन हाय आव है।

आधियो आलो, पगळियो पापी अन धन मोवळो पण दिवसा म धापी। आछो ऊजळा खाव अर मौज उडाव। आधिय न मूंडे ही परसाव, मारणो चाव। जाएा श्रो अर ज्याव तो म्हैं अेकलो बैठो खाऊ। केई आटो फकाव कदरी बाटो बणाव। पण चग्गा कर अर चूरमा जीम। अक दिन आधिय नै मारण खातर पगळियै न दाव नाध जाव। एक काळो जगी साप आव अर बनकर नीकळ। वी सरप न पगळियो दोरो सोरो मार नव है। सागोडो काटर तेल मे तळ मिजाव है अर आधिय न आगला घरा मेलरा री जुगती जचाव है। आधियै न पापड वडी रो साग बताव अर आज घपार

जीमावण रो कोड लगा वै है। नाग म छ्रमर्थ ''तूज चाढै अर देगची ठकर मोडो माडो हुज्याव हे। लगडिया नीद म लापालोप, पगळियै नै डर ना वीरो ही कोप! भूलो मरता भाऊफा मार है। हांडी ठाकर हिनावै वरतण माढा गिटाव मचकाव है। माग हाळो देगची री ढकणी उघाडै अर वाफ में मूढों दे परो सोरम लव। साई रा सजोग मिराणा हुव तो जिसरी वाष्प मू आधियै री श्वास्या उघडज्यावै है। सरप न मीजनो रेवर लूलियै माथ भूज मर है अर नीदा म सुलांवनै पगळिय रै कडद् र, पुरव में लात री मववावै है। लात रा पश्ता ही पगळिय रा सूला पग सीधा हुज्यावै। चोळीतरा चालण साग आवै है अर आपरा सू था सु थाळका पगां न देवाळर आधिम न कवै— म्रो के है र! भाया?

आंधियो दगची कानी हाथ कर परो पूछ है—"भो के है रे! पगळा?"

पगळियो— म्हू तो थारी आंख्या करणी चावै हो!"

आधियो— 'म्हू सा थारा पग करणा चावै हा!'

दोनू राजी, काई ना नाराजी! जोध जुवान हुग्या, बूदडी हाळी लात साव भागी अर धन रा धणी बणग्या।

मेह बरस्यो जमानो हुयो। मळ गयोडा मानवी पाछा मुडग्या। खेती करी तुलर नीपज्यो मोठ-मतीरा रा ढिगला लाग गिया। कीनै ही वेटो चनै आयो कीन ही बेटी खेतै आई। बध्र ही जुगाई री ओळ करी अर कैण ही मोट्यार वगी मूग्गा घोमो। पण साची कहीजै— वेटा बाजरी रा है। बाजरी ही नी जद पेटां रा ही मासा पडग्या हा, बेग कीन चेन मावा हा। केइ सूता छोडग्या कई वेचर खाग्या। कया न र में डबोया कई घरमादै में द आया। आप आपर हाल री ही कास रामी। जद ही ओ काळ बच्चा खाणो

वाज्यो है। स्याणा मिनखां मुळार मापरी लुगायां न पची, मोटा मिनख लुगायां र हाथां सू ऊमर भर रा हाळी भोगळिया मड्या। इण तरां सू म्हासा परवार दुरभख काळ री काट-बाढ सू सेरू वांहू हुग्या। पण माधिये पगळिये रा मा बाप तो सजोड़ म्हा र गांव में पाछा बड्या। हाथा हृळिय सू मनचार गला करी निनाण काम्डो लिया रात दिन घत रुखाळयो। लायणा करी, अर दळा कातर माठ बाजरी सू धान री कोठी भरी। घर र तिला रो भळ्यो तेल, गाया भस्या रो धारयो घीणो। पण निपूतो घर सूनो होणो। रात दिन बेटा नै चेत कर। माधियै पगळिय म पूरै सराव। पर माधियो पगळियो कठै? अब ही कोई ना'र गादड़ा खा पीग्यो। हाड्या ही गमगुदराग्या! मा कोरा सिसकारा नाख! बाप म्हाली हुडक्का न्याव। सुरत माग माग फिर सपना आव है। पण निजोरी बात!

मरद मल्यार दालद चल्या! माधियो पगळिया हुया मावळ षण्या कमाऊ अर लाग्या धन भेळो करण न! कारा ही बळद पच क्या कीरा गाडा लाया कीरा ही बोठा फाड्या कीरा ही गाभा मभाया। सोनै चान्दी रा जेवर भगन्यावण री चोळ्या, बीटी छल्लै री बुगचड्या अर मोरा भाज री पेया छल परीर घरा लदा दीनी। ऊटा पर पालळिया पलाण मा'रा अर वल्या! कारवै कसीद री झूली अर ऊपर घासिया धालर टिचकार ग्या। हिणहिणावता घाडा सार खव लिया। रणभुणता रथ वल्या समत आत लिया। हाथा म कडा कठा मे गोप खव दुनाळी बन्दूक अर गळपद चांदी री मूठ हाळी तरवार म मुघमनी वाढ री ओप। पूटरा फररा राजा रा कुवर सा गैल बग हा।

बादस्या री फौज सी चाल। गाव धणी री सुवारी सी नावळ। विणज्यरा रा भरी बाळद सी दळ। माघण दिनग रै पडाव म पातिय राजायती जमै। पार रो परवा तम्बुआ रो इतजाम,

दूर दूर तांई डको पीटीजग्यो। आग सू आग सघ री हूलवग फूटगी। गावा रा लोग मारग मे सामेळै आव, देख देखर जी मोरो करै। मावा मायो भुवाव म्हार ही इसा वेटा हुवै। लुगाया कुढे वव —म्हारा मोम्यार ही इसा वग! बना लोच म्हारा ही भाई इमा खिल। भाई मोच म्हान ही इसा फूटरा वीरा मिलै।

सुग धा सुगन बताया, ओलक्या टीपणा फळाया। भोदा मिर भुवायो, पडा परचो दिरायो। ग्राधियै पगळिय री मुदो उव डियो! माईता रै सोन चान्गी री दुघडियो। भाजता नासता हाफी जडा दो मिनख ग्राधिय पगळियै र घरा वधाइ म्वण नै ग्राया। लू ग री डाळी टागी ग्रर बो'या— थारा बटा घरा ग्रा ग्या है।' मा थोनी— म्हारा वेटा कठ आवा माई? बापडा ग्राधा लूला न कदे ही कोई जीव निनावर खा पीग्यो है। नधाईगार बोल्यो —'ब ता दोनू दूधिया जुवान वण्धा ग्रावै। सोन वरणो सरीर है कचन वरणी काया है। लूला है न लगडा है, ग्राधा है न पगळा है। भडरा मडबा री मामा गाद ल्यारिया है। मा र मन म ठडा वायरो ग्रायो सपनै रा सुख ग्रालरयो ग्रर ग्राश्ठळ विरख फूल्या। थाबा म दूधरी धार कडी जद ऊवको ग्रर उपराड चनी।

उद्यम रा प्यारा, माईता रा खारा ग्रकर री उजोर, हिम्म तरा हीर ग्राधियो पगळियो डावर नैणा भटावरा थ णा कोडभरया ग्राया। हार्यो री तरिया भूमता भावता घर मे बडया। मा ग्रारतो करयो, बाप मिर बुचकारयो। ऊजड लेडा मुडवस निरधनिया धन होम गयो न ओजन बावडै, मुवा न ग्रानै मोय।

●●

म्हैं मर ज्यासूं जद थारो के हाल हुसी ? थोम रिपियाँळी चीज न बे आना में न आरयो। रास्यो करना अ मर था थमन म्हान घणा चिताररया। ( भारभो न अर हाथ मूं ऊंची मर पराट ) यो बा तो चाद रो चन्दरमळियो, बा धना सूरज नूहयो। है अचागना—बा तो चाद रो पूरो पाठो बटो चादहळिया है बा थानन सूरज मधूरो गरम माख ल्यो है। गुवाळिया न ग्यान धर ग्यानो माया जबा सूं घणा राजी हुया अर अेवड था परा पाछा रोही न टुरया।

पण थूमभुभावन्जो न कुण मास म्याण देव हो ? अेक दिन मोज केइ गुवाळिया घरा भा बैठ्या। बारणा में बडता ही हैना मारया अर बारला माचा माथ सळ्या। थान तो थूमभुभावडजी सागीन्न लाल हुग्या। हाथा में भाग्या आपो लो मळ्या। बोल्या— के बळग्यो ? थारे ? थो जाणाक मी ? का बोरो ही घार रो नास करो ?

गुवाळिया हाथ जोडया दात काढ्या अर अेक मिनला र पैरण हाळो नट्ठ रा धोळो सूथणो दिखाळता थका बोल्या— म्हान म्हो रोही में काई लाध्यो है ?

थूमभुभावडजी बळने भूजने सूथणो लवण न हाथ माड्यो अर कियो— था न था जाण्या हा ? म्हे मर जासूं जद थारो के हाल हुसी ? विया तण दण बगरया ?

गुवाळिया बोल्या— म्हान कठा इसो चीजा रो ! म्हे तो खोड में फिरणिया जावक बागदा मिनख हा। म्हान बतावो—यो क स लो है ? के भमनो है ?

थभवभावडजी सूथणो (पायजामो) टटोळयो चोखी तरा निग करी। डोरो लोभी लामो करो अर तणकाई। देरो भाळो भर मटक्ळ उपाई। पण वात बगो सो नी जचाई। जित्ते नै गुवाळिया

भळे वूम वैठ्या । कियो—वूमवुझावडजी—"यो वाऊ है।'

"वूमवुझावडजी आपरा माथै स्याणै पण रो मोड दिमाळता थका बोल्या— का तो वे खणा री कोथळी है का वई (जळी) रो म्यान।' का तो दो खणा वाळी म्रांटै री कोथळी है अर का जइ रो म्यान है।

गुवाळिया बाल्या— हा ! हा ! थो ही ! ओ ही ! वस आ गी ! जद देगीतो म्हे लोग भाज्या भाज्या थां कन आया !'

वूमवुझाकडजी बोल्या— आवो ! आवो ! जी आवता न ! या न आवता नै कुण पाल्नै ? आवणो जावणो ही तो वणायो है। म्रौर के सागै चालसी।

अब तो वूमवुझाकडजी री अक्ल री बात च्यारू कूटा म फलगी। आसा पासाळ जनल गावा रा पाडोसी गुवाळिया ही कोई ग्यान तिया ग्यानाळी वात वूमवुझाकडजी न वूमण खातर उफण्या पाणी पीय।

अेवड रा गुवाळ उजाड मोम म रळ जूनी-सूनी जगाजोव अर जुळे बुळे हाय घालता र व। अेवड लारक म बठा दव अर टाला ठामी खावता फिर। खेता खोहा तिया ऊअड खेडा मे खडभडै। अेक न्दिन वठ ही अेक टूटडा सो तदूरो हाथ लागग्यो। जकै म तार न सू टी सफा रदसळ खोलो पण किया न तो मजो तिया तमासो हाथ आग्यो। मिलर मवकाव साथ्या नै न्दिखाळै अर गडिया सू मिनाव। जाणै न वूझ समझ न सूझै अचूमो कर है। सोच—गडिया घणा ही वान्ना कामडी मोकळी काढा अर पळूड डाडा ही डाडा रयावा हा। पण ! स्सी लक्डी तो कदे ही नी देखी। वूकर ऊगी है किया वणी है अर किसीक मु ताळवी हुई है। काटा न गाठ अ ळी न आट, जाग छन्नी छाटर छोली है। दाम तमाम अेवड हाळा री ज मरचा सोच घाल्या पर तदूर रो नाव कोई ही नी वता सक्यो ! जद वोल्या—

चातो बूभवुभावडजी सन चाना अर इय सोट नै निसाळा ।

बूभवुभावडजी ऊफोळमम ! नोवदार ~ती पैर यर चौवणी भान चोळो राय । दरलादार ध ती काध चादरा लपट्या गप्पा नावना फिरै है । ~ाय गयै न उथनो दव अर गायाळा माथै मापन मोटो मिनख जताण रो थाव राम है । पू डी हाळो जबां ऊँटवी दाडी, माथ साफो मू छां व ढो हर वगत आर्यां रा भटरका करतो र व । पा म क ~ा वडरै म योनी मागळी म वागे, हाग्डी खोळो आपरी पाळी पर ४ळो गो ळी जाडै ~ । गुगाळिया न सद्रा नियां मामा पर्यां आयतां ~ले जद फनर कुप्पो हो ज्याव ~ । व नै वटयां मिनखा न वर्दै है— व वतावां रागे पावां घर री काम करा पारको । पित्ता दिन निमन्या ट ा मी ! थांवतां मिनखा न व्वर—~ देखो ~ आया, थाइ न गो पच ~ो पपाळ न परर !

गुवाळिया— बूभवुभावडजी येन म ~हान जव ~कडा लाधी है । जको वठा ~वरकी है ? सिर माधो ही बोना । छानी मू छी चीण्णा चट्ठ है । अर ~ ।

बूभनुभाव~ी ळरळा हुना यवा बीच म हा बोल ज्याव है— हुवा ! हुया ! रनणदवा ! रवण~वा थारी वाल ! घणी मुण्डोडा है । ~न भनायो वणो मी यनाय टाळू ! वना यनूर ~ारो छुडाद्र । गुवाळियो हून्यो~ अट्ठांरय न बूभनुभावडजी र आगै धर । बूभनुभा व~ना सद्र न हाय म ~र ळ न बुन फोर अर च्यार मर सू देख है । गू~ा ~ा न ऊ ारस पास सू पकड है ।

य~ र नाट ~ा पद्य रोगी रैं परहाळा घाई रा दांत दमनां ही दगाळ अर घान री वानकी वनार दुकानदार पारसी र मनहाळो वान बूलणी पाया कर है । वियां ही गुवाळिया बूभ व~पा—'बूभवुभावडजा आ ~वणी काऊ काम आव ?'

बूभवुभाव~ी हत्त न ही महीव हा । जियाल कोई सासू

आपरी वहू री भोळी वात माय कोई न कोई रोव गाँठती ही र वै है, त्रियाँ न ही बूझबुझाकडजी गुवाळियाँ नै मुछट माल्या ठोकणी सरु कर दीनी। कियो— थार मार्देता र भाड ५ काम आव है। जाणो ता की वानी। आ (तटगो) का तो कम्बागो दवता रा घूपियो वणायोडो है घर का टनगडे री हाना है। सावग दुस्ट देवतां न घूप खवणो पद जद इयै धूपन रै चाढै पालै म धूप निथो शागवती घाल्न अळगै मू ही खे दव। का पागेम्न न हूमी दवण ग उगत पर काम पडै जणा रन र आगोनलै गोळ पानै मै मार मगद घान्र दण्ड परा कर ही आपर घरा खटया ही आगलै री आळी थपाळी म सिणा ऐवो। इसो ही को जाणो नी अकारी नाग वधी पार पहमी ?

बूमबुभाकडजी री इसी अमोलक अकल रा वातां सुणर भाभा गुवाळिया मायलै लाड-कोड मूं उछळना कूदना आप आपरै खेवड म चाल्या। मारग म केर दूजा सामा दान काढता राफा सेळता, बूमबुभाकडजी री जै बोलता थका आभ न अकास माथै उठा लियो।

६

# पंचमारखां



खेत मोकळो मोटो साथ चोडो खोड ही कब्जे कर राख्यो है। क्याह मर खुल्लो मर बीचवर एक मारग बगतो हो। पण गांव र खेत होसै र कारण बटाऊ आता-जाता रता लिया खेत म पालते पालने उजाड कर जाया करता हा। कतारिया मर गुवाळिया रो घणो मोटो दुख हा। काकडिया छोडता न मतीरिया, कचे कदे भेळ बाड रा टोकाक गाया भरया ही बाड लिया करता हा। लुगाई टाबर री तो परवा ही नी राखता। जद वेगी ही खेमल पुरखियै री मा खेत म कम्ही अकली ना रती।

हमलै पुरखियै री मा खाला भर भर वेगा वेगल्या। पून सीनरी चान, अबरगी माद तो उपण नाखा। खेत र धणी खळ म मोठ उडावत आपरी चोधरण न उतावळ-ताकड दी। भळे इसी बाळ (पवन) नहा चालनी। बगामा बाढ-बूटर घरां जावां। आया गया अधार साग्या आगलिया। माठ काढ लेवा नीर री घद लगा देश पछ मा खत पहया आगी कर देवा। काई आवो अर कोई जावा। टाबर मळ बटया नीरो दवाळ बोकरसी। फटक र बीचाळ बीचाळ फिरणो छूट जासी।'

चोधरण कियो—"अेकरगो काम सो हुयो । मोठ धरा ले चालो ग्रर नीरो ढक दयो, होळै होळै सजास्या। दिन भर म उपण मास्यो, नीर रा ढिग लागग्यां । फळया रा दिढम चढाया ।

जाट कियो—'इया ही करस्या !'

इत्त न मारग मू अक ऊट चढ्यो सिपाही आयो । जाट रै खळ म बियै बढिया चारै री धड (ढर) पडी देखी ग्रर म्हापरै भूखै ऊट न चरावण खातर जी चलाया । ऊट नै खळै खानी मोडयो ग्रर मोरी ढीली छोडर चारै माथ ढको दिया । जाट कियो—'क्यू भाई ? म्हारो चारो क्यू खडावै हैं ?

सिपाही कियो— म्हैं राज रो सिपाही हू, मनै खुल्ली है। म्हैं रयत री चावू जिकी जिनस जबरन ले सकू । कोई पालै तो राजा नै खबर कर दयू । राजा जी बिय ( पालणियै ) आदमी नै बनारै भरवानो या कैद कर देवै । नही मानै तो मनै पालर देख !'' जाट नै जतायो ।

चोधरी कियो— राज रै सिपाही न इत्ती वाता री छूट है ?'

सिपाही कियो— 'हा ।

चोधरी वाता वाता मे ही जाणग्यो के वातडी सफा पूनी ता कानी । जद चोधरण नै कियो—'धान राड कोथळी म घाटो म्हैं ही राज रो सिपाहो बणस्यू ! मजा करस्यू ग्रर गावा मे फिरसू !

चोधरण कियो—'इया सहाखडो के सिपाही बणस्या ! खेती रो काम सामल्यो, घास फूस ग्रर धान धरा ले जावो पछ मना ही वण जाया।'

चोधरी बोल्यो—"कीगो म्हू तो ग्रवार ही जास ।"

पाच चार दिना म खळ खेत रो सारो काम सळ्या लियो। मारग बगतो सिफाई ही दूज दिन आपरँ पापे पु ये लाग्यो। पत्तँ ठुड ठुड बारो गियो। पण चौधरी र मन म सिफाही वणनैं वाळी वात घर करगी। मोठ वेच्या नीरो लियो लुगाइ टाबर सागैं लिया भर राजा रै गाव गियो। दरबार म हाजर हुयो नौकरी री मरजी पेस करी। राजा जाण्यो कोई वार राजपूत है। जद वामत नगर म घर दिरा लिया पर ठर जाण रो हुक्म फरमा दियो। भळ क चाहि ? सिर मूजग्यो। करडाणम म छनाजग्यो।

चौधरा नैतो डसगुणियो डिगाण जुवान मोटा भर पोटा सा पग हाथ लिया काळो-कुराण डरावणा मिनख हा। वडा वडा दात रप रा दिखाळा भूत प्रेत री मूरत ब ली री छाळो हो। गप्पा म भागळो पण काम म सफा पागळा हो। मूकी घड सदू-दू वग असधी जगा म क्र वडाई दर्तं ? आपरा सुज्योडा सा हाथ पग पोट परा दात बार काप्पटार भान्दी री दावळ मारतो जणा लोग लोट पोट हो जाया करता।

एक राज चौधरी नौकरा वगो राजा र खनैं जावण न भळे त्यार हुयो। ज पाळाया हुसी टळा म रा लियो। कियो— भाई म्ना दर ! वार भठ आवता ी राजाजी राजी हो परार घर वता न्दियो भर राजण ■ समान भिजरा दियो। नक ■ टाबर टीकर जच वरा वग्या। अ म व ता थारी ीरता र जार ही हुई है। नही मा तन कार पूग्ता े कोनी। राजा कर भर मिनख न दिळाण है। भर भठ जावरोर नाम टकां रा नौक ी माग। थारो नाम ही मन दिया र जाजा चाय। राजा न बहादुरी रो घणो टर रव है। थार जिग तुयना रो मोवळा चाव कर है। वणा मो दरबार ■ पूग भर मारी नौकरा माग ! भग्वार करयो तो फौज रो सनापती वणा देसा।

चोधरी रै अ स वातां जचगी। बो समझ नी सक्यो के अ पाडौसी त न अठै सूं काढदेणो चावै है। घर वार खोमणैं रो जुगती सदाव है। पण बो ता वैण रो वीन सो तुरन्त राजा रै आगै जा खड़ा रियो। राजा र चूभणैं पर कियो—'अन्नदाता ! म्हैं सर बीर अर भादर मिनख हूं। मन्नैं काई माटी फौज म लाख टकाळी नौकरी दिरावा। छोटी नौकरी में म्हैं हाथ नी घालूं अर बडी नौकरी बिना म्हं री पार ही नी पड़।

राजा ज्याणग्या बीरा ही पोमायोडो है, सो अेक बार आपरा ही थोडो ऊचो नीचो ल्यो। छेवट रासणो ता है ही अर फौज म इमा हा मिनखा री जरूरत है जिका आपर मत्तै मार हकारो भरै। राजा कियो— कोइ थारो मोगो दिरताव तिथा काइ बीरता रा बताइ बता।'

बताव के हो ? सिपाही बण्न री जी में आगी अर आ घम धधो। नीं जाणैं तो बतावव। नीं करैं तो कचक ? बस ! ऊप रलो जाड ऊपर अर नीचलो नीच ! लेतिय कान सू तो वार बज्योडी ही। खूंटो सो खडो रियो। गाव में घणा गप्पा मारतो पण अठ ता राजा रो नज ऊपराकर फिरग्याव ठा नी ! उथळो नी आयो। जद राजा कियो—'आ म्हारी बात रो उथळो परमूं तांई द जाई नही तो कद में नाख देयू ला।' चौधरी रा कान खूं सर हाथ में आग्या। नैण मू दणो बधग्यो। घरा आपरोर आपरी लुगाई न किया— ओय राड ! भ्रमकाळ खोटी हुई। अर आपा अठ नी रवा। राजा कियो है वा ता काल थारी मादरी री नाई वात वताज्याई, नी पाणी में घानर पीहा दस्यूं।'

लुगाई स्याणी अर समझदार ही। बोली—"धीरज राखो कोई बात कोनी ! किसो इयाय करयो है ! मागो ता नौकरी है। रोटी पोई, चौधरी न जीमाया अर मांचो बिछार सुवाण दियो। पण खेत

री निकळग्यो चेतो ! नींद गई सारसी गळी ! मूतो सूतो मुळक मुळक मार कोड्या फोर भर काढ है ।

चोधरी रै माचै सार रात र रा मोड दळिय री एक हाडो मेली पडी है। हांडी ढकणी सू ढक्योडी तो ही पण ढकणी मवड नही ही अधवाली मी हा। ढकणी रै सारै वर हाडी में माखी वड नीसर ही। रात री निजर हाडी माली गई अर माख्री जाग पडी। रीस में आपर हाडी पर मुक्को मारो ! मुक्की सू हांडी तो फूटगी पण साग च्यार पांच माखो ही मवळोजगी। चौधरी माखी मरयोडी देखी अर मुळक्यो। माखी गिणी अर घूज्यो। बोल्यो— अेक मुक्को में पाच ! अक मक्को में पाच ! सुगाई नाई वात बताई अर पूतर ऊोय हुयो। तुरत राजा र कन जा पूग्यो।

राजा पूछ्यो— विरलव तिया वीरता री वात बतासी ?"

चोधरी घणै घमण्ड सू कियो—"बतासू !"

राजा—'तो बता !'

चौधरी बोल्यो— म्हैं एक मुक्की में एक सागै पाच जीव मार नाखू

राजा— जे नही मार तो ?

चोधरी— न‌ा मारू तो कोई काम पडै जद मन आप बतळाया मर देख्या कित्ता मारू ?

राजा र सोळ थाना वात जचगी। चोधरी न नौकर राख लियो अर फौज रा मोटो आदो मळा दियो। 'सागो घर में रो चीज वसत रा मो पण काम पड जद तुरत हाजर हो जावो।" राजा रियो चोधरा हुकारो दियो अर आप आपर काम जा लाग्या।

अक समै री वात नगर में पाच चोर हिल पड्या। चोर घणा धरफोडा कर कर धाडा दौडै है। कीरी हेलो पाडै, कीरी

तिजूरी तोड़ तिया मोरो ही धन काढ माजै । थाणाळा खोज धाप्या, चौकी वाळा सोध थाकग्या अर कोटवाळ र नाक में दम आगयो । चोरी बिन अेक दिन ही खाली जावै नहीं अर चोर हाथ आवै नहीं । बात राजा र आगै गई पुळस हाळा साची कही। 'चोर पकड्यां नहीं, मर पच सख्या पर उपाय न ी चाल । ऊभो पोरो लाग कोटवाळ री गमत आधी रात जागै । रात आन्या माखर कठ पण पार पड़ कोनी ! अेक न अेक घर फाजळ घाल भी जाव । अेक नैं अेक आदमी री रपोट आ ही जाव । हजूर म्हारा तो हाथ पाधरा कर दिया । आप कोई मटकळ बताबो दूजै ही जावतै मूं चोर वेगा पकड़ावां । ना तो नगर नैं थोथो कर देसी अर नैं जोजरो घालर उजाड नाखसी ।' कोटवाळ राजा आगा हाथ जोडर अरज करी।

राजा आपरै ओहददार फौजी अफसर ( चौधरी खेतै ) नैं बलायो अर नगर में चोरी होण वाळी सारी बातां समझाई । चोर पकडन री ताकीद करी अर दो दिनां रो समै बखस्यो । अफसर हकारो भरयो अर आपर मुकान न पाछो टुरयो ।

अोय राड ! आज मरग्या !' चौधरी कियो ।

'के हुयो ?' चौधरण पूछ्यो ।

बोल्यो— हुयो जणागागो भोड ! तेर ठियरी फूंडा है के ? सैर म आहिलग्या । थाणा तसील अर कोटवाळीहाळा लम मरग्या पर कीर हा हाथ नी आया । सर म खळबळी मच रयी है हाको हा रियो है । सगळा री हार है । जद अब राजाजी मन बनार दो दिना र माय ही चोर पकडनै रो कियो है । नहीं तो कद कर न्सी ।'

चौधरण बोरी— तो इमी म वात है ? आपां पलो ही ठोरा द जास्या । दो दिना म आपणो गाव नडो लस्या । छाछो इसी

नौकरी नें ! कूनगा अफसर बण्या हो !'

चौधरी कियो— हुवा तो !

रिन बिमू ज्यो रात पडी अर अफसर र घरां घाला मनी सरू हुई। पईसेरटा अर नाण्या बोटा बिसतरा बाध राख्या अर सावी चीज बहता हाथबसू कर लीना। जीम्या जूठ्या अर टाबरा नै सुवाण्या स काम अधार में ही सुवारया। गुडरी पात बाना चूरमा चूरणो पळायो। सैंग काम र उठाय पटक म अेकना चौधरण पात री पूरी निग नी राख सकी। पात म अेक काळो साप आ पडयो अर मीजतर गुड म सागाळो घुळग्यो। रसर सागै जर अरा मरू हुग्यो। चौधरण रीद म कुच हुयोडा गुड री पात छाणी चूनसा अर मापरी हड सबळ परिया बणाई। दरयो न माळयो पात मू मोवळा चूरमा चूरयो। पाठिया वाघर मेल्या अर थाडा थाडा लागै कराग लारर मावैं मावैं गुटी। आभरत दूरण ते बात त ही। आज जोरा री री अठै थाजो हो। सोपो पड गो वडया अर बोल्या— भान्डा आज तो सुगन लेर आया हा। चूरमो चूरेडे माल पत्तर बाधेडा राम नाधग्यो। चूरमा जीमो अर उगावो। हाथ लाखा पडया है। पीटिया खाया अर पोल्या थाडा पडया (माया) इय घर में तो दिनगैं ताईं काढ् नी हुया खडचा।

सूरज उगया चौधरी बात कटफडार उठ्यो।— अोय रा मरग्या !

बोना— के हुग्यो।

चौधरी किया— राजा कद कर देसी !

चौधरण— तो अ कुण पडचा है मरेडा ? कै दिया चार घोर री ठानी म्हान तो अ ही लाध्या है।

'ता हुवा —चौधरी कियो।

सिपाही आया चोर माग्या। चौधरी सावै पडी पाच मुड्या री इनाम वता दीनी। चोरा नैं श्रेळ्ख परार सिपाया मूट में घागळी घाली। बोल्या— आपा तो आसा सिपाई चोरा न पकडण वैगी मर पच गिया पण हुया तो अेक दिन में नी मार नाख्या।' वात राजा रै स्वन गई। राजा घणो खुसी हुया। चौधरी र घरा मोकळो इनाम भिजवायो अर पचमारखा नाव पक्की करायो।

कैई दिना पछ नगर में अेक सिनब आवणा सिंघ आवण लागग्यो। सिंघ रात पच्या सर नै सार आव अर मिनखा रा नुकमाण पुगावै। कीरो ही गाभर न आव कीरो ही धन पसु ना ज्यावै तिश वया रै थाट पट पूचा दव। दाता रै तोही लाग्यो हाथ प्राणो दोरो हुयो। धा अटोनल दना तो बात बगानल पास। गाळी गाव न पकडाव। आस नगर म ओटा नाख्यो सिकारचा रा पग पाछा पडै सार कवाणाळा मारा नक तिवा सरदार सरह्या हाळा बागदा सा लुगिया है। सिंध तोजा घना रासो है कूक मचा नाखी है। बात राजा सनै गई। राजा पचमारखा नैं बुलार सिंघ मारन री हुक्म फरमायो। पचमारखा हा अरी घरा आयो अर आपरी लुगाई साग गरळायो। बोल्या— राड प्रवक मरग्या।

'के हुयो ?'— लुगाइ कियो।

"हुयो क आजकळै सैर में अेक सिंघ आव है। जक सू स सिकारी आना गाव है। घणा उजाड करे पण कोई नी पकड सकै। सिंघ न मारण वगी मन हुक्म हुया।'

तो क मिया मराग्या अर वे रोजा घटग्या। के आपण मठै री पट्टी है। आजरक हो चढ चालो। कठ ही औरे दूर पटक स्या।' लुगाई कव।

'तो वायो टीक' पचमारखा राजी हुयो है।

राम पड़ी पंचमारखां न पूरा भाद मह्यां आई। पर्चा री हां पूगरली धाम्यो। जिमग पनर भार बाघो जणाधारा त्यार ही जदा सदर्णं बागसी धाग गूगा घरां में गू गहा बाई गरेठी दवड़ स्मारग न गियो। तिण भाव री धागर रचा मगर अर पुर्डेड़ नमइर में घाडरेष घर रिया हा। धाग भीच गूडा भाव गुना हा। पचमारखा भचनक र लार गू जार जुद वार भाग लिया। तिण धाग में पतग्यो। जाणग्यो क अ हुव सो यो काई घर गू ही बटगारा जारायग है।' पचमारखा पन नार्या बाघा में मारग्यां पीहर पीन पर घन धमग्या अर कोरडां रा गडीड घाणा गड कर दिया। तिण र धतां रा गडीन पडया जन बो बाघडो गूगो बावळो हुर भीर हुयो। पचमारखा कन बाघ दीरो ? बारो लवबार गूग रै बाध दीनो घर आप रा लुगाई न जगाणी— अरे ममल पुरतियें री मा! धार या, मार त्यां। अेक गयो पकडर त्यायो हूं। उचाळो बानर।'

बोली— राम निकळग्यो क ? आगू तो सोरो ही पग्या है, डरा कोनी के ? भाग फाट बारस्या। इगा ■ उकळी में करणो है। थोडा सो जावो।

हुया तो। 'पचमारखा भाडो हुयो। धोयारो सो फिरग्यो। दिन चढ आया जद राज रा सिपाया बारण बाघ हुलो मारया—

'पचमारखा जी सा ब भादर! राजा जी तिण तरे आप न दरबार में भबार ही बलाया है। पचमारखा घर में जा लुगाई आग रोयो— राड आज मरग्या! अब तिण फिर बाप रो देखा।

बोली— क हुयो? ओ पकडर ल्याया होनो! जको खूट र बांवडो खड्यो है। थें देखो म्हांने तो ओ ही राख्यो है।' सिपाया सिध न बाधेडो देख्यो तो मूंडै मे आंगळी घालनी। राजा घणो खुसो हुयो अर कुरप बायदो जिया तिणरा वधाई।

थे डा दिन तो अमन चन सू बीताया पण पछ राज्य पर एक नूवा बखेडो भळे आ पडधा । अक पाडोसी राज्य लूटी फौज लिया थका देस नैं आ घेरयो । पचमारखा राजा रै आघू तो अफ-सर घर आप री सेना रो सनापती, घरा बठो ही सामणो करण रो हुकम करतो रियो । बरी री भारी फौज र आग राजा री सारी सेना लड लडकर काम आगई । देस भर म हाहाकार मच गई । जद जी रै उकराळय राजा पचमारखा नैं कियो—"आप री मौजूदगी म इसा फोडा म्हारै म पड आपन भर आपर नाव मैं सोभा नी देव सनापत्तीजी ! आप इय मुसीबत नै भळ टाळदयो तो म्हैं आधो राज्य आप र नावै लिख दयू।'

इत्ता दिना सू दरबार म आणा जाणा रियो जक सू पच मारखा में ही थोडी अकल आ गई। जाण्यो— आछो मौको है ऊमर भर री मौज है।' जद राजा सू कियो— मन आप अेक चोखो सो घोडो अर हजार भेडा मगवाकर म्हैं कयू जिया त्यार करवायदयो । राजा री सेना तो मारी मर चुकी ही अब पचमारखा हाळो अणोखो लडनो ही बाकी हो।

सिझया पडी, पचमारखा र कियै मुजब भेडा र माथ अेक अक दीवट बांधर धरी । दो चार आगीवाळ भेडा न दुसमण र पडाव खानी टोरदी । अेक र लार स भेडा भीर हुई। सगळधा र लार पच मारखा आपर घोड माथ आपन काठो बधवापरा चाल्या। घोडू सू डरधा पच्क नी नाख इय वासत दोना पगा र चाकी रा पुडिया बध वालिया । घोडो खोडो देखर पकड्यो हो पण इय तो तेजी म पग उठा रास्यो, जको चढणं सू मालम पड्यो । आधीरात, वैरी रो सेना वेफिकर होयरी सोरयी ही। जक वखत भेडां र सिर माथ बाधेडी दीवटा, पचमारखा चास परी दुसमण र डेरै कानी टोरदी । आगीवाळ भेडा चाली, बुर्नै ही सारो अेवड उछर गियो । सारया रै

लार पचमारखाळो तेजी घोडो चान पडयो। ग्राप र डेर ॥ ग्रणगिणत चिराग़ा जगती ग्राती देसर गीद म भोटा खावना वैरया जाग्यो— ग्रवक गेख न भातो ग्राग्यो।" दीवटा र नीच थ धारो हो सो भेडा बिया नैं जावक ही दीखी नी। हलवलो हुयो भेडा वमडको अर बरीडा आपस म ही अेक दूज माथ टूट पड्या। की भेड रैं दीयैं सू बिया र डेर म लाय भळे लागगी। च्यारू मर हूहल्लो सुणर घोडो चिमक भा्यो। ज पडग़ रैं डर सू पचमारखा अेक साम आवत सूकैं खेजड रैं डाळै रैं सैंठी गपपी घालली। घोडो ठम्यो नही, डाळो वध्योड पचमारखा री बाथ मे ही रयो। जक न डरत पचमारखा आप रैं ग्राडो घोडैं माथ ही मेल लियो। दुसमणाँ रा तार वरह्या ग्राया जका डाळ र लाग लाग खाली हुया। कइ वरी डाळै सू ग्रइ ग्रइ हाथेही मरबोकरघा! इण तरा उजाळो हुयो जित्तै म वरी री सारी सेना खप गई। पचमारखा जीतर नगर म बड्यो। राजा बाथ घालर मिल्यो। आधो राज दियो, पचमारखा राजी खुसी रयो-वस्यो

●●

७

# पिडत अरनाथ



"रामलाल न कानी जाणो ? अ है है ! मानख मं माज्योडो मोती है।' गोरधन जी मोकळँ इचरज अर अचूभ री भोम बरसाता थका कियो— जद काई मायो कथा सुणो । के भाड रा भजन गावो । धरम री धजा है रामलाल ! मूढ सुरसती बोल । कथा बाचण बठै जणा सुणनिया न भाठ री मूरत्या सी बणा देव । काना री खिडकी खोल देव है । साग्यात वेदविग्राम रै रूप में आव्याव । थे कोइ ल्टि धू जिया पिडता न देख्या है। घराणा रो मिनख अवान रो सुप्यार अर रतनपर में भण्योडो नित्य कासी फिरयाडो, बाहार कुसळ भागवत पाठी है।

थानै काई ठा पडघा क कसव में काळीदान रामलाल नाव री अेक चोखा पिडत आयोडो है। आ बात तो बतावो ?', नेमीचन्द पिडता री काट करत थकै गोरधनजी सू सुवाल कियो—"लारल दिना तो थे इया रो नाव ही नी लेवता । काल पौरू री बात है थे तो गाव हाळा पिडता री बडाई करा हा। आज ओ नूवो अलाप कठै सू ल्याया हो ? कदे कथा सुणो न भागवत ! सदा बीडी सिगरेटा माथ ही जोर खावो।"

'भाग री बात है पठ आप न गा पड़ । म्हार राधेश्याम री मां तो इयां न गुम ही बणा लिया है। बिना तकदीर र पैसना रूपी इगा मिलगा री गजाग मिनणा दोरो है। गोरधनजी कियो।

'थारा बारा मतो हुवा हुव जिगी बवो। थाव रग ि नां म हा थे इसा किया पुरग्या ? मुरकी नाम्योग गा बणग्या। थारा घरां तो गुमानजी विहत थोर दादो जो घरां सू मानीजगा पूजीजना आया है। हमैं बूग जाणर छाडो काई ? मोंची कहीज—विग्न गाम मर ऊग मुतळब सू ही मानीज। रामलाल गुण क बनाय है ? म्हू तो म्हारै गुमानजी न ही मानस्या। म्हां सू बो मूढा देखर टीका काढाज नी। ज गोलीग्मणा थान ही मावै। म्हे तो बो टग पज आगा नी।' —नमचन्द कियो।

काल व म्हार घरा आया। गोरधनजी बोल्या— रोब दार आदमी है राजनीत री ही पूरो ग्यानी अर खिलाडी है। बोलणो जाण मनरी विछाण है।

निमक उजाळनो आदमी लखाव है। खाव जकी हाडी म छेद जरूर कोनी कर। वाणिया री ढाल है म्हारी ही अेक चाल है। इसै आदमी र साम म्हैं ही थोडो ऊधो अर आग आवणो चावू हू। जमाना सफा माडा आग्या। बूढिया री तो धिकगी पण आपणी पार पडनी दोरी है। इस मिनख र साग की थोडी घणी पच पचायती करणी सीखा नेतागरी भाला तिथा न्याव-तपास करण री मन मायली काढा। अेकल री धिरग जमारो है। जनवळ री जुग है जनबळ साग राखस्या जद ही जीतस्या। इयैं म राड री काई लाग ? बा काई कथा भागवत कराई अर पिंडतजी सू रामसारी बूचाई। काई दान दिखणा दीनी अर सेवा चाकरी लीनी। कोई सराध न तो दियो, चट छाती तोडण न आग कियो। आ म्हारी चाल है म्हारो दाव है। वाणिय रा बेटा हा दोलडो फायदो उगावा हा। गुमानजी बूढा ओड,

आज रा काम व किसा पर घालें ? म्हें तो दुकान म मनीम ही मन साराम जी घास्वें नें रास्या है। जका सारो दिन दुकान में बैठा गप्पा मारे गुनघ्घररा उडाव अर म्हारे घराणें रो वडपण नामून वखाणें। आज री राजनीती अेक मोटो चालण हाळो वोपार ह। पुराणा वोपारा सू अब काम नी चाल। बूढियाँ दुकानदारा म भोळा नें घणा ही रोग्या काठ्या अर खा नेवड्या। पण वो काम न आज दुनियाँ जाण्गी। बदनामी र सिवाय पट ही चाल नहीं। दानी अर धरमा घारीरा वडा वडा मनवारड गुमानजी जडा पुराणा पिंडता रा दियोण्ण थोथा हुया पड्या है। भिमारणां खाराच्या है, ऊपरा काट नाम्या है। जक वगी अेक जाळ माडू, भोळी पगेल फसाऊ हू। गाजर हाळी पूगी है, वाजनी जिरो मजें सू बजास्याँ नीस तोड खाम्याँ।

'पण जाणतो वूमता जाळ म पडलो कुण?' दोमत नेमचद कियो।

पिंडत रामलाल अर मज सू। गोरधनजी कियो। 'अरे भूख मरतो गाँव छोडर भाज्यो है जकी तो मन जी री सा सागण कै दोनी। छोरी छोरां रा फेरा भळे करणा है। गाव म गुराजी रो व्याज ही भरीजें नहीं। गाँव रो छोरो अर बारलो बीन हाळी कवत साँची है। भो तो आपणी मो री मे सोगे सोरो आ जासी। नाटैलो नी भू डी भडी किसी! थे सब हाळा हो थोडो सा रो दवो तो अेक क्या बैठाणाँ गपको करावाँ अर चेला चाँट्या सू थोडा पीसडा वणारदया। बूढी ठेरयाँ भोळी विघवावाँ तिया बुग्याँ धरमातमा मिनखा में रामलाल री पिंडताई री गैरी छाप मारदयाँ। अरे! इ साल ओजू मे नी वरस्यो अर परो काळ पडयोडो है।

भिरसाणा म मेह रो परचार करो। क देवो पिंडतजी क्या बाचैला जद मेह रा खाळा भौर हुवला। वण्याडा जाट अर धनवाळ लोग मेह रै गाँव सू कथा सुणन वेगो वामते माय था पडनियाँ कस

टीडिया गा भाग्या मानी। घरम गी वातां मुणमा अ बारी पास दसो। बीना तूज्याली सीना पर न्यानी जद म पसधी कूप म लिइन रो काम वण ज्यामी। चढाव रा त्यि लाग जीतो। गारा री सवक व+ रा भारो प्रापणा म साम्यो ? भुपान मादू जिना मना ही मरजी वाळ है, टरडीवाळ वामळ गगना रा वद मना नामी। वोरा जवान सा रो ! विइन ऊमर भर गुण नी भूल बडाई करनी मूल नून ! मा बापडी विडली रो मा हा नुम है। ऊनी नजी गाव ! आपणाळ (बाणियाळा) गाव पव नी जाण मूपा गऊ है। याना जाडा नाम पर घाऊ री दूघ वाडो। मू गाजे करसो मर मारी री का सारी।

गीरघनजी मसरी माणियो जात रो भवर —! दमथी फ पण म्हैंदरो वडो मोवणो ! मिनला म बोल अ अज जोगीनो घ मच न्याव ! छवालो डोल गारो रग मर मू रो मुळकाई मनो हारनी है। नाक ता अक तानार्र मू पूटनी है। बाळ छ न्वाळा है जर व माथ माथ वमरिया गाळ पाम बाव सव ज कानां र सा वाळा रा गुच्छा मोर जाव। सफाई म मिनल जात रा अब ऊजळ मनूनो है। गोळ ऊनर कोर हो पर। सफाई मिणगार म नू नू द सली र सट रो चलण है। वी रा व आर रा गाभा म म रावै ह। माल्या पर सुनजी फरम रो चसमा मर पू च पर घडी नाक पर अेक तरफ काळो मर मगळकाग मस्म जो फन्राव म साय है। विरामनी धाना अर वमनर ! बूट हा दसी ना पर !

न्या री वन्व रो उपरलो कमरो सोपा सट सू सोभायमा अर आगण पर जळ री कारीगरी हाळो मोटो गलचो ! गोळ मेज प अक कांच रा माड है। जका री न्मीलो चमकीलो मिछळपा मायन गया री निजर चुरावव है। कमर म वडतां ही सामी गाधीजी र तसबीर दोना कानी न रू बोस र लिया सगी है। बिचाँर सामर

आपरी मोटी मूछ्याळी सीदी टागी पड़ी है। कमरो हर वखत धूप वत्यारी सौरम वसर है।

पिन्त रामलाल पैली कारो ग्रामण हो पण ग्रब भागवत बार्चाणिया पिंडत है। पल्या मोट दट हाळो सूगलो सरगडा टीगर हो, पण ग्रब मारणा भमो या माडो सो सु मानणिया मोटो मिनख है। कदे हा बद्य वणन न वाड हो पण ग्रब डाक्टरी वैगी पण फाव है। कन ही चाली ग्रर मूछ्यां मोगी राखतो, ग्रब ऐंकामेक ग्रर रावी है।

सपहाळा भोळा वाळा छोग, ग्राम्चां रा ग्रावविसवासी ग्रर काम ॥ ढोला नमच द रा कियो कर। दवी र मठ म कथा वैठाण दीनी। मडप मजायो विच म पिंडत रो ऊचो ग्रासण लगायो। पर रिया टोगी ग्रर धूप दीप जळायो। गाव मे हुला मराय दियो, ढान पुरा नारयो। कथा मुणनवेगी बच्चे बच्चे नै वला ल्याया। पिंडत बोल्यो विड्यां म भाठो पड्या। वचकचाट वद हुग्या। सरोता लोग गेभ ग्या, पसेव सू पूर भीजग्या। पण ज्या छोडर नीं जाव, ग्राख दिन वेठ्या सुणै है। ज्यू ज्यू पाना, थाल है म्यानीं ले न गुणै है। सात दिन सटकर बीतग्या ठा ही नी पड्यो। होपायत हुई सिणगार चोकी वणाई। मे तो नी ग्रायो पण चन्ावो तो घणा ही ग्रर पड्यो। रिपड ही रिपड विलक ग्राया। लोग म्यान वावळा हुग्या म हाळी यात ही भूनग्या। ड रो ही नाव सावलो परचार है। पिंडत रो माळा मिणियो चालग्यो गाँव म म्यान गुण हाल्यो। कमाई रो गैनो बन्यो रामलाल थपोट चढग्यो। मोरधनजी र घर मू परमाद ग्रर दिखणा ग्राई। पण कथा सू उठ्यो माय यग्यो। ग्राणन्द उछाव भरयो मन सू मोटो पिन्त वगची मे जा वड्यो।

वगची र आगण म मोंकळी भीड़। मिनख लुगाद ग्रर टाबर टीकर जम्या वठ्या है। भीड़ सू ग्रातर सामल चौक म ऐक माचो

धूणा जळ रियो है। च्यारू मेर बनफाड़ा जोगी बट्या बाणी गाव है। अब बाळक बाप र बाप न पूछ है— बापूजी नाथजी किसा है ?

ब देख ! धूणीवानी हाथ लिया आंगळी सू इसारो करत थक सेठ बाळक न कियो--- ब नामळ माथ बठ्या है जिक्या ?
टाबर बटकठो खाई करडो हुया घर डरपो। पापो समझगे हुय मऊ कियो—

डर कयारो है बेटा ! नाथजी तो देवता है। अब म्हैं थनै बिया र खन ल जासू। ब थारो दुखतो पेट आछ्यो कर दसी !

नाथजी री आख्या इत्ती बडी किया है ? लिलाड इत्तो चौडो अर चमकणो क्यू है ? मूड अर माथ पर इत्ता बाळ क्यू है ? रग काळो किया है ? डरत टाबर सुवाल करया। नाथजी गरज उठ्या—लोग बोला रव्वा ! आज इत्ता ही परचा देस्या। सामण अेक दूजो सेठ बठ्यो धूज है। नाथजी बिण माथ भूज बळ है अर रीस मे जाड भीज। सेठ रे हाथ मे एक पाच रिपियाळो गिन्नी है।

हरामखोर निरलज्ज ! नाथजी गाळ्या ठोकणी सरु करी— साळा फक्कड़ा न भागवानी दिखाळ ! गरीबा रो गळो रोसर जोग्या री धूणी चढावो कर ? दानी बण्यो घणो हो ! क्ण कियो है क म्हे रिपिया रो गुलाम हू ? बठ सुण्या के म्हू चादी सोन नै लर बरदान देऊ हू।'

मोटो सठ कापण लागग्यो पसव चानग्यो अर हाथ जोडर माफी मागण नै लागग्यो। बोल्या— मूरख हू।

नाथजी—बाळक गोदी निचोड सठ कानी भाजो ब रर— अरे ! इयरो ( बाळक वेगी ) पेट थार पापा सू दूख। कीन हो मुसीबत म च्यार उधार देव तो पाछा पनर उधाव हैं। छोड अडो कोभो घघो ! ब्याज लेणो बद कर अर धययोडॉ री सेवा कर ! बाळक भलो चगो हो जासी। जा अठ सू !'

सलक्षित भण्योडो पिडत गाया में जावणियो पाडो मर साग्नी मूलो पडयो टाडा डाढो सोरो पटै तिथा सावै भाव है। भोळो हिडद, मूग्नो वदन, सटकैर ढालो हो ज्याव। पिडतजी री वडधा म दोनो रिपियाळी याळी जुळवळावण लागगी। लाज सी भाणी सरु हुगी। नाथजी री राबोज सू सागोडो पिघळग्यो। योळो खानर सूप दोनी। बोल्यो—'बावा म्हैं अठै अेक भण्योडो बामण कथा भाग वत करण भगी आयोडो हू। वस्ती रो पुण्य बधाऊ, भर गुजारो करू हू। कठै ही माळा, कठै ही जप कठै ही पूजा कठै ही गप्प, वडो नगर है थाव्ो निक। सारा दिन घर घर गीतां खातो फिरू। आयण दिनग थापरा दरसण करण लिया सतसग वेगी जी ललचा जाव जद बगची म आ बठ। काळ चतारी रो वरस है घरां टाबर है। काम तो चनाणो ही पड। अठ आपरी दया सू अेक कथा हुई। जका मे चोलो चढावो आग्यो। भव कणा ही गिरै गोचर बतार पूण पावलो पत्ल घालू बद ही सावो मूरत निकाळर मजूरी बणालयू। आज ताई मिनार दो सौरू कमाया है। जका बारवास जाणर कडघा र बाध फिरू। हमैं आपर भठ ही राखस्यू, सौ सड भळै भळा कर लेस्यू जद म्हारै गाव रो अक गडवा थाट भासू। टाबरा न दाणा मळा लसू।'

ग्यान नाथजी आपर लिलाड में तीन तिरसूळ काढनी। भूजर मी गाली सूजर। 'बच्चा रिपिया रै जाळ नै साधुवा म मत नाख। कठ ही सटा री हेला म जा मेर। माग म लिख्योडा है तो कठै जाव काली, नही तो वाणिया रो पीछो वाणिया र हो काम आयो। पाछो कोनैल आवण दय। रिपिया रो मो छोड भर भजन कर। नायजी गरी गम्भार उवाज सू पिंडत नै कियो।

ना बावा ना! म्हू अजाण आदमी धीन जाणू ? था म दूजो म्हारो कुण धणा है ? म्हारो तो नगर मे थोजू की माथ ही

सिपाइ ही ! नालू म गो बरु रा ग्रो !"

अच्छा सो ! आपर लिखो— र्याई म । भर गाम घरा रेगी म सन्द !

हो माराज ! सिंहजी ब ना — गो म्हारा लिग्वा भट घर गहू गो मान हा ना पतार मतो " भार ।

धणी र गरलाता न धन बन्द रै दागन बाल वे । घर ठै र ब्याव वाड़ मो जिवो नगा पर निरान हुणार ! विमा हा र ग्रामजी र घोड़ा म नर सिंहजी रुठरा हुग्या ।

रामजी ऊपर मू बातर म्हारी निपा सिंहजी सिपाहग री पतम्या करी जका बात सिंहजी र मगी म उणग्या । रुण बात जायर ऊपरी ही । रामजी सिंहजी र सगपी मू बा र हुवा हा सिग्वा गिणर गुनब म धरया । काढा बर मारा नवार मय राना । मान म्यान डिकारग्या सफा निकारग्या । पाटयी बस गन मू निजूरा म रतार भाडा ऊठो ताळो लिरा लियो ।

सिकारी न नू यो सिकार भाव शराबी न नू वा शराब भर्णी भर चोरा न रोज रो रोज धन मिलण री उम्मेद लागी रय है। पिंडतजी आपरा लामा नावर बधाया अगीन धावजी नू वा मरगा मुरगी फसाया । नायजी गु डा मैं रियोगो मार पारयो गीरव दा अेक उजड भ्रन्ड तिपा धपड़ आदमी है । जगी ही ना जमीन नाव हो ना नामून ! बाप र रान हाली मजूरी अर गरीबी पल बाधेगो ही। म्यान नाथ रो नाव बोभा राम हो । अट्ठाव बरस रा उमर में ही बाप छोडर चल बस्यो । जद बोभा राम इकळग आपरी लुगाई न अपा वण लागग्यो । "या हुती ही मारो पोरो परणो मीस नियो हो। गाय रा भग हैंठ भग रा गाय नाच ऊधा साथरा मद पर दीना। लुगाई क धापी पण बोभा राम घोपा राम नी यप्यो ।

थोड़ा दिना पछ पिंडतजी बगेची जार रिपिया माग्या ! बाबोजी जाबक नटग्या। पिंडतजी रा हाथ पाधरा हुग्या। "या रा बाद धाप्या पण नाथजी क्व है अठै तो रिपिया रै नाव सुसियै रो चोथो पग ही कोनी। पिंडतजी उदास अर आमण दूमणा सा होकर मर म गिया। सारी बात गोरधनजी मूं कयी। पण गोरधनजी नाथ-जी सू डरता छेरा करै डरता रो जी जाव। काई मूठ मार दवै तो कठा ? कूण्डी दुगाई अर मू डेड माथै रो वे ठा पडै। पिंडतजी नै वालो टरका दिया। लारलै बजार म पिंडतजी रो अणमणो मू डा अक भगतण देख्यो अर पूछ्यो के पिंडतजी के बात है ?' जद पिंडत जी सारी बात बताइ।

भगतण कियो— 'महाराज रिपिया तो थारा म्हैं सारा कढा देमू। थोडी ताळ न थे नाथजी कन आवर म्हारै सामा थारा रिपिया माग लेया। पिन्तजी पटकैर हुकारो भर लियो। जद भगतण आप री दासी वानी न कियो— क मोटोड सदूक म नीचे दो तीन इटा घाल द ऊपर आछा आछा कपडा सजाय दे अर आखा र ऊपर म्हारो सोनहाळो मारो गणा मेल दे। ताळो लगाय दे चाबी मनै ल्याय द।

भगतण न्हाणो धोणो करयो, तेल फलेल लगायो अर चाखा चोखा गणा गाभा पर कर सेठाणी बणी। रथ जोड़ा लियो, सिंदूक मेला दियो। बादी न सारी बात समझायनै अर पिंडत नै सेन देकर रथ बगावी काना टार दियो। रणझुण करतो रथ अर झणझणाट करती सेठाणी बाव री धूणी खन जा रुक्या। नाथजी गुफा म बठ्या माळा फेररिया हा। बाकी आखा मोड धूणी माथ चिलम चोसा [illegible]। सठाणी नाथजी कनै जायरी डडोत करी अर किया—"बावाजी महारा सन्जी घणा दिना सू परदस रव है। बाको आज अचाणचको ही मन बनावो आग्यो। सो म्हैं परन्स जा रयी हू। काईठा काइ अड घल हुगी व ? केठा वे कारण बुला लिया है ? वडो सासो लागग्या।

आजकाळ चोरी चपारी रो घणो डर है। सो म्हारै सग सर रिपि याळो ओ मारसो आपरै मठ रगाय दयो। पाछा मारया अ म जास्यां। दूजो जगा भरोसो कोनी मा राज!

सेठाणी इसो क परोर मिन्दूक गोयो मर आपरो अक सान रो करमोळो मळ माय मल्यो। माल अर मत्ता न्दर बाबजी म् ठो ढीलो छोड दानो।

इय वगत रामलाल पिडत मायो मर नाथजी मू रिपिया माग्या। मोड जाण्या इय पिडत म जा नी मोन्दा नी अर सा े काम विगडगो नी! सेठाणी र बैम पड ज्यासा मर आप रो मिन्दूक पाछो उठा ने जासी। ज बोल र योळी त्यापगीर मिन्नजा नै सू प दीनी। पिडतजा रिपिया गिण्या मर योळी कडचा र बाधी। इत्त म हा तो बानी भानी भाजी आ पूगी मर सठाणी सू बानी— सठजी घरा पधारग्या बाइसा! बधाई दजो घरा चाला!

जद सठाणी नाथजी न हमर कियो— बे बाना मय म्हारी सिन्दूक मेलण री गरज मिटगी। सन्जी घरा आग्या। पिडतजा मुट्ठ कर सिन्दूक रय म ओठी मनी नायजी हमर कियो— गत होनी। जद बानी बोली— हसी सेठाणी साहू आया विप्र हरयो गयो धन पायो। तू वयू हस भरडा भेरवी ( नाथ ) अब बातडी दूधकी सीखी।

●●

८

# सूध अर जालसाजी

०००

सश म्यो म मे‍ड माथ ‍न्द थि‍ी अर एक कागतो भेळा रिया करता हा। घणा दिन सा‍ रणौ सू ‍ोनवा म मोकळी मित रा‍ पडगइ हा। जद आपस म दोनू धरम भाई अर धरम भण बणग्या। चाम्रो मान घणो उमाव तिया मा आया मा हत भिमता सू रमा नाग्या। चिडो पुग धरमना पाळ पण कागनो कूडो अर टानी ठग हा कदे ही कोइ काम कर परा नी टारसो। वो सगर चिडी री सूध सू नाजायज नफा उटाणो चाया करता हो। गरज हुनी जणा मीठो बाजती अर नटवा करतो तिया नाचण लाग जाया करतो।

गिरमी री रुत खेत सुधारण रा दिन! सगळा मता रुटिया बूनी काढे अर आप आपरा खेता म अळपाट कर! चिडकली ही आपरै भाई कागल न खेत सुधारण वेगी कियो। बोली—'काग भाइ! ऊपरनो रुत माथो है। आपा ही खेत बीजण न जमो करा! अळग नीद उटावा धापर सावा अर सेनी जावा, धान हुज्याव तो भूपडी माडर बैठा!'

कागल उथळो दियो—"चोखी बात! चालो आपा ही खत

आजकाळ चोरी चपारी रो घणो डर है। सो म्हार गए अर रिपि पाळो ओ बारमो आपर मठै रखाय दनो। पाछा मारया जद ले जास्यां। दूजो जगा भरोसो कोनी मा राज !

सेठाणी इत्तो क परोर सिन्दूक खोल्यो अर आपरो अेक साने री करनोळो मळे माय मेल्यो। माल अर मत्ता देखर बाबजी मू डो ढीलो छोड दानो।

इय वखन रामलाल पिंडत आयो अर नायजी सू रिपिया माग्या। मोड जाण्यो इण पिंडत न खान्नी मोड्यो नी अर सा.े काम विगडघा नी ! सेठाणी र वम पड ज्यासी अर आप रो सिन्दूक पाछो उठा र जासी। जद बोल र थोळी स्यावगीर पिंडतजी नै सूप दीना। पिंडतजी रिपिया गिण्या अर थोळी कडघा र बाधी। इत्त न हा तो बाणी भानी आजी आ पूगी अर सेठाणी स बालो — सठजी घरा पधारग्या बाईमा ! बधाई दवो घरा चानो !

ज" सठाणी नायजी न हसर कियो — बे बावा घर म्हारी सिन्दूर मनण री गरज मिटगी। सेठजी घरा आग्या। पिंडतजा मुळ कर सिन्दूर रय स पाटी मनी नायजी हसर कियो — सर होनी। न" बाणी बानो— हमी सठाणी माह आयो विप्र हस्यो गयो धन पायो। तू मयू हस भरडा भेरवी ( नाय ) अेर बातडी दूधकी सासा।

••

# सूध अर जालसाजी

●●●

एक खोड म मिन्ड गावँ रै चिड़ी अर एक कागलो भेळा रिया करता हा। घणा दिन सारू रगाँ सू गोनवा म मोरळी मित राखै पड़गा हा। जद आपस म दानू धरम भाई अर धरम भैण बणग्या। चोख्या चाव घणो उमाव तिया मा जाया सा हेत मिमना सू रवा लाग्या। चिड़ी पूरो धरमनो पाठ पण कागलो झूठो अर ठाना ठग हो कडे हा कोई काम कर धरा नी टारसो। वो सदा चिड़ी री सध मू नाजायज नफो उठाणो चाया करतो हो। गरज हुयाँ जणा मीठो बोलता अर नटवा करता तिया नाचण लाग जाया करतो।

गिरमी री रुत खेत सुधारण रा दिन! सगळा खेता वटिया नूजाँ काढै अर आप आपरा खेता म अळखाट कर! चिटकली ही आपर साथ कागल न खेत सुधारण वगी कियो। बोली— दाग भाद! उपरली रुत आगी है। आपा ही खेत बीजण न जमो करा! अळग नींद उडावा धापर खावा अर खेता जावा धान हुज्याव तो भूपडी माडर बैठा!'

कागलै उथळो दियो— 'चोखी बात! चालो आपा ही खेत

चालाँ ग्रर काम सारां । मैण ! तू चाल म्हैं थोडी चिलम तम्बाखू करर ग्राबू । टाबरा न सवा प्यावू ग्रर समळा आबू ।'

नूवाँ काल हूळा उठ ग्रर उनाळो आग बरसाव । पखेरू ग्राळा म मिनख साळा म ग्रर पसु रूखां री छायां मिसक है । ग्राखा पाणी रा ठाव टाला पडया ठणका मार है। रात दिन कूवो बग जद कद ही पाती आयो गुटको लाघ । पसु पछ्या स दा दो बिरिया पाय ग्रर मिनख जात तोड़ र ही सार जीव है ।

चिडी जगळ म गई ग्रर फिरघिर चोखा सो खेत जोयो । सार खेत रा फोग काट्या ग्रर सगळ खेत रा बूजां ही बाढ नाख्या । फोग ठ री करर मिटिया बाळ दिया । पण कागल ग्रोडू ताणी खिड क्लो न समाळा ही नी । जद थापी ग्रर अकला खडी ग्रमू भी । कागल न हेला मारयो— ग्रा रे ! कागा भाइ उत ग्राव ।

बो'या— ग्रावू जे ग्रावू आमलिया गटकावू ।
दो कावा पाका तन ही त्यावू ॥

दया कतो रियो पण खेत नही गयो । दिन बिमू ज्यो सिझ्या आद ग्रायण काम सू परयोडी चिटकनी घरा ग्राइ घर रो काम करयो ग्रर टाबरां टीकरा न चुग्गा नाखो दियो । आग्यां भारी हुइ तिया मीठी नीद म सूती । रात न मागाडो मे पडयो । पाणी ही पाणी कर दिया । ताल ग्रा डा ग्रर गत ग्राखा पाणी सू भरया । फागडा पूरण लागग्या ।

भाग प ना न न्या चिडकली चुगाई ग्रर कागल वन गद । बोली— काग भाइ ! तू तो बोनी ग्रायो पण म्हैं तो खेत साफ कर लियो है । ग्रायणनाणा तनै अडाक यारो पण थू नी ग्रायो । हमें मदूरा तूट गिया है । भाजी सू हे उमर न उमरो नीं नाच्ड । किसा पामा काम हुव जदी ग्रापा दोनू भण मार्द मिलर

खेत बीज देवा तो । स्तरा वायोग माती नीपजै ।'

याच ग्लाई अर पास फडफ्फाई। कुळा कुळा करयो तिया हुवारो भरयो। दियो— 'ठाक है भण ी म्हैं जाणू के काले म्हैं नी था सक्यो। भूल हुई आळस करग्यो। घर रा कामा म ही दिन ढळग्यो। आज थू चान काम नाग अर म्ह प्रायो हा। थू भला ही बैठी रयी, म्ह अेकला हाफही हळ वा नास्तसू। तू क्यू डरप बैनड, तेर लार काग जिमा भाइ भूप खडया है। खत न ऐक सरजाट बा द्यासू।

चिड़ी भोळा अर मूधी वाली बोली खेत वाली भीर हुई। मत जा पूगी अर हळ बावण न त्यार हूगी। हळ जोडयो आज गोडयो अर काम चनू कर दियो। मारो मेत वा नाख्यो, पण कागला काडी नी पोन्यो। जन अेकनी चिडकली आपजगी। भाई नै उवाज दी अर खत बलायो।— काग भाइ ! बगा आवो खेत बीआ। सगळा लोगा खत जाता चान दिया है। आपणै म घास रळै।'

बोल्यो—'आवू अे आवू आमलिया गटकावू ।
ढोकाचा पाका, त न ही ल्यावू ॥

सारो मेन वगियो चि घरा आद। बचिया म घूण दी सुवाव्यो अर आप ही मूती। भाख फाटी काम सळग्यो। जीमा जूटो करयो अर भाइ चत ग्रायो। चिडा वागल वन गई अर बोली— भाई खेत सगळो वा लियो है बीज नाख दियो है अर जोतां वाढ ल्यो है। तेर नही आग मू मन अकनी न सारो काम करणा पडयो। सार बिना खत डाढा दारो नयो है।

थोडा दिन अया स ही काम चालतो रियो। पण कागो मत नी गियो। चिड़ी जाव मेत स्याळ अर फोग माठ। वाड करै खाई देव अर चियो भू पडा माँड लेवै है।

मोठी रोटी सा'नी घास जगळ म मग्न व्हगा किया है। पगु चर करता निनाण घर मग नगरया गहरना घर्री एक-आध कर राखी है। रमीना राग हरया माग मग चना पुना सू घास-पाती सी नाग रया है। मोठ रा टोप चढ़ दिया है गवार रा गाभ गड गिया है अर बाजर नपना दिया है। घास रा भार इत्या बदवा है बाजरी रा बाल झारिया है अर आगा लाग निनाण शरुण न लगु झारिया है। जद चिड़ी कागल न कह है— कागा भाई! बाजरी बध रयी है घास नद दिया है। थाने चगा मा निनाण कर आया। माड़ी कर दियो तो बाजरी रा बूटा बधना नी दळगा रूक जायना।

पण चिड़ी न रा बोटी पाछा पडउथळा मिल्या— तू चाल। म्हे चिलम तमाखू पी आवू टावरा न चुगा पाणी द आवू अर छाया बठा आवू। चिड़कली चाली कागला कह है वानी। गत जा पूगी अर निनाण चान्ण न सूधी हुगी। क ओर कर— आप कमाया कामड़ा किण न दीज दास भकाभक बनिया वाव है अर निनाण काढ। कागलो सजड़ माय घरा बळ्यो दिन पण गत नी आव। जद थापी चिड़कली गत सू हलो मार—

कागा भाई आव! निनाण काढ्या।
बोल्या— गाव ज आवू आमनिया गटकावू।
दो काचा पाका तन ही ल्यावू॥

चिड़ी कागल री अड़ाक छोडर सा निनाण काढ्यो, घास चुग्यो तिया जटा करी। घास री बूडो (फिगनो) दानी पर बाधा। धान न सारो आग्या बाजरो फर खाग्या। पूरा काम करर आयण घरा आई। बच्चिया न चूण पाणो दियो अर विया न सुवाण परो आप हा सूती।

अक दिन चिड़कली कागल न भळे कियो— कागा भाई बाजरी पाका खडी है सूकी सिट्टया लुळी पडी ह। आधी है चरी

है न्हिी है, फाको है। लोडर दाणिया तो भेळा करा। "मू आई रोजी है, साग साग पेट ही तो काटता रस्यां। पण चनाक काक भोळी चिडी न क माढ दवै हो। तिरी दिमावता रियो। मळमा मळमा करन थक बिच सो बो ही आप रो पुराणा गीत घगीर दियो—

तू चाल ! म्हे हाको पाणी पी आवू टाबरा नै सुवाण आवू।'

चिडी बडी मिणत सू काम करयो पण कागलो खेत नी गियो। सूकी निम्या री मोटी पू जळी लगा अर सेवण दूर सू छा, मिझया खोरस सू थवयोडी चिडी घरा आई। घर रा काम भळे स पूरा करया अर ! बचिया र बीचाळै सा रयो। दिनगै उठ परीर पाछी कागल कन गइ। बोली— भाई काग ! बाजरी सारी म्हे ताड ली है। अब गहा कर खळा काढणो है। आज बळ बाळ ही चोखी चालै है। आज आपा दोनू मिलकर इ काम नै पूरा कर नाख्यां। म्हू मळो बुहारस्यू पू पू जळा सू सिट्या रा बोरा भर भर मावा। मढ रोप परा गावटो करनस्या अर हाथो हाथ सडा नाखस्या। सावद टूठ जासी सारो छूट जासी। नी तो आभ माथै म ओलर रियो है काळा भूरा बाग्ळ भाज्या वग है। बाजरी भिजो दी तो आपण भारी उजाड हा जासी अर फसळ मे खोटळ पड जासी। आज म्हार सायै चाल।'

कागलै सदा जिया ही मीठी बाली म उथळो दियो— आवू थे आवू आमलिया गटकावू। दो चाचा पाका तन ही ल्यावू।

कागलै री सागण ही बात सुणर चिडी खेत उठ लगी। सारो दिन काम करया सिट्टी गाट कर बाजरी ऊपणी। गाया रो बाग आयो अर बाजरी र खळ माथ गाया ढूकी। चिडी रै उजाड करयो जद चिडी गुवाळियां न गाळा टाकी। गुवाळिया आया अर चिडी न जेक गाय अर बळद दे गिया। चिडी बाजरी अर चाचड धोधी दोनां रा, दो अळगा अळगा ढिगला लगा दिया। काम निप

टाया घर घरां धार्ं । घर रा मग काम पूरा करा पराट मोगा। परभात राम वेगी उठो अर कागसँ कर गर्ं । धोनो—'काम बीरा ! माज माणा न पान री पांती करणी है। गो टिगना लगाया पद रा है गाय बळ" स्याया गडपा है। पू पास तो दोनू चीजां बा" लवा।

कागल उतावळ होवर कियो— हां पात ! पगी पात। कार्ड पायल्यो तो उजाड हुयावना। कागनो मरण्यटो उन्परो पल्यां ही रात जालग्यो। पण भोळा रा भगवान ! कागल जातनै पाण ही चाचडाळो मोटोडो टिगना धिणाप लियो। कियो— पू ! पा ! बडोडो बडोडो टिगलो मे रो !

चिडी बोनी— हुवा भाई मरे दाटिया ही पोसो ! पण माज तो अक ही पांती फरस्या। चिडी सुमी सुसा पधी गई घर माप री वाजरी मोटी म भरी। चिडी नै बडो मो हो के कागलो पाती करण म भारी मोड पासती। पण भोड नी पडघो सटकर काम सुळभ गियो। कागलो चाचडांळ ल्गि न नी छोडै। भगवान कर जरू आखा काम चोखा ही करै है। वियसू के दुसटा री दुमटता मोल थोडी है ! दूजी दुसटा न करणी रो फळ ही तो मिल। चिडी दूज ल्गि खेत गई जग" फकळी ज्योड कागल वडोडै बळ" न देवर भळे कियो— थू ! था ! मोटोळी गाय मेळी।'

चिडी बोली— हुवा भाई मेर छोटकी भला ! माप आप री पाती प्रायोडी चीजा ल परा घरा आया। भूपडी माडी घर वठ्या। सीर सवारी चाकरी राजीप रो काम ! चिडी माप री गाय अर वाजरी हाथ वमू करी तिया मौज मज स रएा लागी। मणन रा फळ मीठा है।

कागलो बळ" रै मूत म चाचडा मलो मलोर खावै पोव है।

चिडी वाजरी धीम खीर राधै अर लबकावै है। आप आप रो दाव, आप आप रो जुध आप आप रो भाग, आप आप रा जुध !

यक दिन चिडी र घरा मोकळा बटावू आया। चिडी दूध दुया खीर राधी अर चावळ पत्ता री जेट लगाई। साग छमकण वठी ज्या हींग चैत आई। माई काग र हींग री झूपडी है जको कागल खन मांगण वगी गई पण कागलो करमा रा कीट, कीरै भाडो पाव कीरो काम काढै ? कीर ज्ञो सू कीज दणी क उतरै ? जाकव नट ग्यो उत्तर दे दीनो। चिडी नामरी निमभर ल्याई साग छाछीता छमक्या अर बटाऊवा ने तिरपत कराई।

रात पडी बाग्ळ आया वरमा वरमी जद कागल जा घू धाया। काडो री हींग हाली झूपडी सा गळर वै गई। कोरा मगरा धोर वळ्यो भीज, चिडकलो हाळी झूपडी पर सीभ है। धाधा रो भाग्यो र चिडी रै घरां आया अर बोल्यो—

चिडी चिडी तेरो भाट भीज !

चिडी कियो—'हींग वगी क्यू उत्तर दीजे !

कागलो बोल्यो—स्याणी भण है पाळै मर रियो हू वेगा झूपडी म बठाण।

चिडी कियो—झूपडी म मन भा नागडलाग ! तै मन मागी हींग ही नी दीनी। पण कागलो धिगाणै हो चिडी री झूपडी म धमग्यो अर कियो— माई नै चूल्है बटण द, का चाकी जगा दे चिडी गई करी अर कागल न झूपडी म बैठाण्यो।

जेव दिन चिडी पाणी र घड नै चाली। चूल म सीजती खीर री हाडी कागल न समळाई अर किया मैं वगा भाऊली अर रोटी पोर तनै जीमाऊली। पण कागल लार मू रपतो खीर हाळा हाडी चूलै सू उत्तार ली अर ताती र खीर गटका लागो। साभीडो

घालम्यो घर हांडी पूछनागर मूंधी मार धरी नूटी गाम र गोदियो। चिड़कसी थाई घर मोर हाळी हांडी खारी पड़ी देखी ज  तिण्णनी नै ही माळ उपड़ो ! नरग सू सी, हाळो सावळो काढ्यो अर पून्हे म सातो दीयो । गरड़ी रै गोरा म सावळो माम घुट हुग्यो ज" बिर कली निधड़क सूनै बागल  री पुडायठ माय घरट देनो  वप न्यो। तातौं सावळो चिप्यो घर बागनी ऊछळपो—

'चिड़ी चिड़ी मेरी पूछड़ी न्याज'
चिड़ी— थपू  सोगां री सोरड़ी खावै ।

●●

९

# नाड़ी वैद

●●●

सूरजो जाट सारी अेक सा ऊट राखतो अर खेतरो काम करतो। बाकी चौगग रै नात घर म खाट ही नीं घारतो। हकम हवा, रखो भखो, दो पोई दो काख म राखण हाळी कैवत लागू करतो। कदे ही सीरो घुटा नाखतो, कदे ही खीर बणा खातो तिथा कदे ही लापण ही काढ दिया करतो। कदे ही घी घणा कदे ही मुट्ठी बिना बाळो फुवावत छ जाट पर पूरी फवती। कदे ही एक वखत कदे ही दो वखत, कणा ही फाको भुजिया अर कदे ही दो दाळ सागरी सेवड लगा लिया करतो। ऊट घणी रा कोड करतो धणी ऊट रा बुचकारिया भरतो अर घास रा बगाळिया तिथा लीलै रा गवा ळिया ऊट र मूढै म जाट वडै ठाठ सू दिया करतो। ऊट ही सिफाया री सूक दाई बोलो-थोलो ल लिया करतो हो। चिलम पीवतो जद साग पावतो, जीमतो जद टुकडा खुवावतो। ऊट सू घणो लाड प्यार राखतो उनाळ में मण मण घी सीयाळै मे छुछो चारो, मेथी अर फिटकडी तेल गुड प्यारो, मीण रो मीणा वच्योडो पड्यो हो। थोडो घणों उणायलो रै जातो तो घान छोड देतो अर ठाण में बठ्यो हाथ फरतो रतो। थोड़ो घणो खेत वावतो बाकी रा भाडा कमावतो ऊट र ताण खच्यो-खच्यो फिरया करतो हो।

सुरजो जान जगा निया जु याद माई साथ मू हाथ म राठी धनखबाण गोठ माफा, ऊ माथ चढाए रो पिनाण, देवना पर घासियो तिया आपरो वन्यिा घोनो र गत म अणगिणत मळा रा उमरा री लर वणाया आवतो जगा मिरोमान ऊ दवना जी वग्ना ही उरणावण राग जाया करतो। सुरजा सरकर गुड गाळ लिया करतो, तगारी भरर आम मेन देतो घर ऊपर मोकळा गामा वीर दया परतो। ऊ घरड मरड गुड रो रस पी परार उणाठी मारग लाग जातो। पड रो मालो थकला उनर जांना अर ल्निग नै ढोन रा काटा सा काड लता तिया कवळो लाग करमा वण्यावना।

सुरजो जिया दूजा र घरे दा। उटर जीमता जिया ही आपरै घरा माय गियै न वाडा गोट खुना दिया करतो। क्या दाई नी हो। जिया कई मिनख पारक घरा तो च्यार च्यार मानी माथ कमर खोन अर जीमण न बठे जद मर पूरा दर्प। पण आपर घरा कोई वगतो वटाव आ्याव जणा सित्या सो कढ ज्यावै। पूडा उळाव अर ओलो खाव। कोई घर हाळा र इकवाबर री वारी बता देव। कोई कडमै मे सोग साबित कर देव। पण मरया ही टुकडो नी घाल।

सुरजो बा माखीचूस मुडदा मिनखा मे सू नी हो। वो कतो रतो तोप रै गोळ रो लढीक पचास कोम ही सुणीज। पण तोवै माथै पडतो रोटी रो दडीड पूरो सौ कोम ताई सुणीजै है। वीर घरा पटवारी हवाल ार ।गरदावळ अर थाणदार, माया गिया कुन्घो वजाना ही रवा।

अेकर री वात सुरजो खेत में खड्यो मोटा रो लळो बार रियो हो। ऊट न डेर र सन चरण वगो छोड राख्यो हो। खेता मे नावणी हो चुकी ही अर घन पमु चरता फिरै हा। मिनख भेळवाड खवाव हा आपरै खेना म आप आपरा पमु चरावै हा। सुरज रो ऊट दांवणा दियोन्ने खडयो घोडा घणा रहासुदा ताड हो। मलकणो

ायो हुव ज्‌ घोळ मन रै घारै माथै ऊभो भोप हो। मवाणचको री अक तू म री वल माथै जा ढूक्यो अर मोळाय तू वा माणा मरु कर न्िया। थक मायोर, बेठा दो माया ? पण भाग जोग सू अेक मोगे सो त बो हग्गे र क्ठा म पजग्यो। तू बो क्ठा म इमो जद पस्यो जको आगै जाव न लारै बढै न गिटोज। ऊट बठग्यो, अर आमण-दूमणो ह्या। माम सो माव पण भाग अर थूक क्टा सू पळगा ही रख हा। दू टर सगाल्ा बोट दानी, नस पसार दीनी अर गणधारण नागग्यो। ऊट रा दगा जावक माडो हुगा। मुरजै न टा प्न्घा तो भाग्या मायो। बोरो जी ऊचो चढग्यो। सुरजो जाणग्यो क ऊ्ट बचाणो दोरो है। जे हुव तो की राईकै या वैद्य न देखाळणो चाय। पड पड र के मडचल माई ? सेत म छोडण हाळी आज म्हैं क कुबध क्माइ ? बिरताग के हुयो ? ऊट रो अग अग क्र नी कियो ! मुरज मळो बीचाळ ही छोड न्िया भर ऊट नै लपरो हेदकी री पड ताल म भार हुयो। सजाग सू हेदकी ठावो हाथ आग्यो। हेदकी ऊट दस्यो गळा टटोळो अर सारी बात समझग्यो। सुरज न आपरै खन बलायो अर पूछ्या—

"धोळ खत म चरण छोड्यो के ?'
सुरजो बोयो—"छोड्यो !"
हेदकी—'दवको न्यो क ?'
सुरजो— न्यो हो सा !'
ह्न्की— सेत म तू वा री बेल ही के ?'
सुरजो राजी राजी—'घणी ही सा !"

जणा हेदकी (वद्य) कियो—'ल्यावो तो अेक मोटो सो ममळ। जाट अेक मुसळ ल्यायो अर हेन्की न भनायो। हेन्की मो री दूजा मिनखा नै मनार ऊट री नग नीची कराई। नाड पपोळा अर गळ म तू बो अडघोडो देखर मुमळ न जोर सू भाल्यो। मुसळ

न पु धार [illegible] । [illegible] गैवर [illegible] । [illegible] पुवो फूट [illegible] [illegible] में [illegible] दियो [illegible] मूढ म [illegible] अर पाणी [illegible] पड़ियो । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] पाणी पर जमा भ [illegible] । [illegible] [illegible] हुणो [illegible] [illegible] । फिर [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] कर [illegible] दीना ।

> [illegible] होना [illegible] मद [illegible] अर [illegible]
> [illegible] पूरा पुरुख [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] [illegible] रा गुण है [illegible] [illegible] रा [illegible] है । [illegible] मरत है [illegible] । [illegible] [illegible] पर पधारी म हुणी है । [illegible] रो [illegible] है जो आप र आर ग्रू जिनरा में जाणी ग्रू धाम [illegible] है । [illegible] [illegible] हाळा [illegible] मन में [illegible] धार लीना अर [illegible] [illegible] [illegible] कोई दुवारकाजी जावणियो [illegible] आप रा [illegible] ग्रू [illegible] [illegible] जामा कर है । [illegible] आपर अर आपरी गिरस्थी रै पेट [illegible] हिवमत रो भूखा [illegible] गावां मे [illegible] [illegible] फिर है । गाळ-गाळ म [illegible] [illegible] है ।

[illegible] गाव में [illegible] डोकरी घणा दिना सू माँदी पड़ी ही । पटा में गाठ ही उमर [illegible] साठ री माच म पड़ी [illegible] ही । पण बटा पोता बहू [illegible] [illegible] है ? [illegible] परवार नै [illegible] [illegible] है ? डाकरी र स हाजर [illegible] खड़ा है । हुकमा में [illegible] है । मागै ज्यू देव है दवळा सी [illegible] अर छोटा मोटा सारा जणा [illegible] है । [illegible] भाड़ो नाख हाथपग [illegible] लिया सार घर रा मिनख बोल्छी माथ पाख दिया बैठ्या है । करेड़ो लुगरियो घणा ही रोर । [illegible] ही [illegible] [illegible] हवा री हिवार [illegible] म फूकाव है । सुरज रो हलो डोकरी हाळा बटा सुण्यो मानल्यो आदमी सिर धुण्यो । [illegible] घरा बलायो अर पीढो [illegible] [illegible] रै माथ सारै बठायो । [illegible] डोकरी रो

सीधो गळो जोयो। गळै र अेक मोटी गाँठ डोवरी रै केई दिना सू वड रयी ही। वी गाठ न वद मा राज म्हाळी तरा देखी भाळी अर टानी। म्हापर ऊट हाळी सागण अडचल जाणर बोल्यो न मावळ कर रैणी री हामळ भरी। मगळा सू मोटोडै उट न म्हापर कनै बरायो अर पूछ्या—'घोळ खेत में छोडी के ?

बटो बोल्यो— अर! वैदजी! सा' थाडी है ?'

वद—म्है कहू हु जिया ही करणा पडसी! नही ता म्है इलाज करू नही अर थारी मा जीय नही।

बेटा बाल्या— ता ठीक है। (जाण्यो कांई जादू होसी)

वद— घाळ खेत में छाडी के ?

माटा बटा— धोळ खेत में छाडी के ?

वद— म्हारा मूरख है ?

माटो बेटो— म्हारा मूरख है ?

वद— अरे! मा न ठीक बणाणी है ना म्है कवू जिय बात रा उथळो द्यो। पूछू जको जवाब दवो। कवू जिया मत कवो! नहा ता थ जाणा थारो काम जाणै!'

मोटा छोटा सगळा बटा वद्वा उथळो देण रा हुकारो भरया। जाण्या माऊजी ज्याव तो हुकार म म्हारै के नाग है। बोल्या— ठीक है अब पूरो जवाब दस्या!'

वैद पूछयो ही—'धाळ खेत म छोडी क ?'

बोल्या— छोडी!

वद— दवको न्यियो के ?'

बोल्या— न्यियो हो!'

वद— खेत म तू थारी वेल ही क ?'

बोल्या— 'घणी ही!'

जद थ॰ लिया—त्यावा सा अर सदा भेजर मान्ह ! घर हाळा मुगळ लगादो जाव। बाई भाग अपणे करैरा। पण थ॰ सो हा थना न ना थरा ! पराणपणा ओ कुन्डी र गळ माथ ताळरा नाग्या। डावगे नीम मारा अर राम नाम गरै गुन राखी। घर गाळा थाप थ॰ रा मुरगना माथ पना भन ता दर शरी भारणा उनारी। नमा मू ताळरो मराद लिया। माथ पर भगतो दरगण न हो म्हान्यो ना थर रा मामड़ी म पाना।

पण मन के जोर माल ? कुडळो रा प्राण पन्क सो उदाया। हवड जाण्शो मथ थिमी गाड पाछो माव ? अर न्नि ना मरणा हा हा ? भगतग मू टूटी। मूगी न थ॰ टूटी ? पण घरै ना मार तिया जुगती होणी माय। मा गानर मन वहू न्रा थान्ळा र वजै म सायथा। व॰ न नाग तीनो मर थ्यारी काना चीआ थमना न्याग म भाग्या। घर मू नगण ल्याया कड मू गावरा मगाया लिया दारी मोरी पाग्ळ री नवडा री गोज मगी। आग्णना मर मुपाडिया न्हावण री बुगी तिया मीयोगो नवा साडियो गाभा म टाश कर दीना। दो हालडी दो धाम थ्यार थ्याता मर पूळो गे भाम मू मीढी थणार त्यार कर दीनी।

लुगाया घर म हाणा धाणो कराया मिर घोदो मर गु थाया। ढाकण दीनो अर आग्व वास री भेळी हूनरार हट रा गीगाळो अगीरयो। सीढी माथ सुवाणी ज॰ वटी पिरकमा देणी पछाड़ पाना डडान सह करी अर वहुर्या हाथ जोडया अर माथा निवाया। मोम्ना रा दाढी मू छ्या नाख्यी टावरा माथा अर लुगाया घूघटा काढ्या। वन्ड जाण्यो कुन्ळी मरी
माण ताण सू पाछो सुघर है।

सेती री रुत, मळी रा ि
पण मोट्यार पूरा काथ देवण हाळा

अब व" मिलर ही प्यार जणा हुवै है। कुण बांध देवै कुण वामन लव अर घी हाळा गवणियो तिया पिडाण हाळा पीढियां री कुण साभ ? म्रोजू तो वाठ री मुमाणा नी गियो है। मरयाडा माणग मिमा घरा थोडा ही रमो ? हुवै जिना मू हा सारा ! टोरगा रा माटी बिरान तो मनी बरो। जुगाया भाषरा जाणरारा नाम मोट्या रयाँ न सीव दाणी।

कुण रा मे वटो मर अेक व" पैल्या सो सीयां मारे थोठ मुमाणा पुगायो। पछ मीढी नैं काठो बांधी अर उटार धारया। पण व.सत हाळी हाथ लखण हाळो पाद वस्तो पावचा मिनख नी हा। पोता जका दम बरमा रो टावर बांध न ही पूरो पू वै नमी, कारो हाथ लगाया बम है। आगरी बिरिया वामने हाळा हाडी वद रैं गळ म माळी। कियो— म्हारी मा ता थ मारत्या पण अब दुरी जुगनी मुगनी न तो करा। म्हारा ■ नाथ नानी नी है। पीपळ हाळी लकडी घी अर दाणा कणको दारा मागो न राख्यो है।' हाडा म बामत घाल्यो मू जेवडी बांधी अर वद र गळ म घाली। व" रा नाती बळर चमडा उपडग्या। मुमाणा तार" नाया ता मरी पण सग छावा फडफडीजगी। फाना ही फाना उपडग्या। डावरी रो नाग हुयो अर वदडा पीडो छुडार भाग्या। की दूजै गाव ■ गिया अर भळे नाडा वद रो कियो। बिय गाव म ही अेक मिनख माडो पडया नाया। वद नाड वसी अर कियो— थ्य न म्राछो ता म्हू मर दमूं पण मरग्या सो वामने हाळी हाडा हरगज म्ह नहीं लवू ला।

नार्गा कियो— मर ठिठकारया ! वमूण ता पल्या हा वरै है ! इसा के वेकूब नाडो व" वण्या है।

१०

# डफोलसंख



म्हारै मठै मारवाड़ माय मात मनीरा रग रगीरा चोखा धनीला पशु पखी मर जीव जन्तु होवै। वैभी जगळ रा धागी बसी प्रवास रा प्रवासा मर बसी जळ थळ रा निवासी माय आमीर नोप रया है। रोभ अरलड़ा नरजा कुरजांनळी मर मैळा यानी विच्छु भीग मर मामानिया आम्पा माप आपरी अगा पगा दूजा फर्र छि। बसी बसी ता दोनही अगा श्रा धिणाम रागी है। आप जिरा नै तोम बगम भी मब जुडाम रा मर निराग री दोनू थळा मीत गाला है। बनेरी मीर मर बम्दी मीर आप ता | माड सा | मानना री मिल। मिनमा री बधाव परनामी पाणा माय मर पाठो फेर माय बन्ना पा ताणी दुम माय रोट पोर बगळी पांख्या पनारण लाग जाव।

मवर रा बात!

टावरा री टोळी मो र कोनात किसी मीर रै कराई रमण मतन न गयी। रमना गमना पी युगर अर कुरातान लुकली। नन रा न्दु माय अर आसी माड दुम-दुमना थकी तावडो बर रयी ही। बाउता मुगन दगी माला मर व्याकमेर घेरियो

वणायो। पण ग्राड री कमजार पाख्यां ता जावक भाग्याडी ही। बा ग्रड नी सकी त्पछगी कुडकुडती मा बणगी। बाळक ग्रुणनें माटी न मरयोडी जाण र सकडी करण लाग्या भाळा-पछी ग्रर ग्रिग्याना बाळ जीव न वै न जाणै ? ग्राड रा वै घोर के लाड कोड करै ? पाणा न मींगणा छन्ी चिरमन्या ग्राड रै ऊपर नाम्व ग्रर हमै राजी होव। ग्राड पाग्योड म्वायियें ज्यू पाळ रै कूणें माय पडी जमी मी दीस।

पिरयें मौकै, गैलै बगता बठीन ग्रेक किरसाण ग्रायो। बो बाळकां न भातरा समभाया। क्या क्यू बापडे जीव न फोडा घाल रया हा ? जीव जीव तो सब माय बरोबर हाय। ग्रापान कोग्री मार तो किस्याक लागे ? आ के बोम र वाडा ग्रा कैंयें ? छोटो बाप" न किणीन ग्री दुख नी दवणो ? टाबरा अण मिनख रा बात मान नीनी। ग्रतम रो लागो दोड दीयो। पण बतम्व र मन सू टावराळा डर ना निवळयो। बा निया ग्री भेळी होयोडी पडी रैयी। पण अण बतम्व रै मन री सका किरमाण जाण लीनी। बतस नैं ग्रापर हाथ माय ग्रुठाग्री ग्रर लय आयन भील री बोम माय डोव दीनी। पाणी तो ग्राड रो रवाम ग्री हो। बठै डर किणरो ? पाणी माय पग्ता ग्री ग्राड मुख री मास लीनी। किरसाण बठ सू टुरण नाग्यो जद ग्राड कयो किरसाण बीरा थोडी देर ठैरो ! थे म्हारी ज्यान ग्रुजारी है। जिणैं र बदळ माय मैं ग्री थारी थोडी चाकरी करणी चावू हू।'

किरसाण ग्रेक पळ ग्री नी सरकयो।

ग्राड भील रै ग्रथाग पाणी माय चभी मारी ग्रर छिण भर माय ग्री मुण्ठै माय ग्रेक मस नियावार निसर ग्रायी। सख न बा मान रै किनारै मेन दीयो। किरसाण सू कयो किरसाण बीराजी थे ग्रिण सख न ग्रुटा र थार घरा लय जावो ग्रर ग्रिणनै

है। मिण रा माव डफोळसन है। थमी जणा मिण न ग्पोरमम भी मया कर। मिणमू जिरी श्रीव मांगोगा मा अुणनू दूणा धात धानै दमी।

किरमाण बोल्यो न चा यो मग सब घरो र न्यिा घर बानी ततीसा। तहो न्यग्या। मारग माय माज पन बान हाळो भायलो मिल्या। बा माज किरसाण सू भळ डफोळसन हाळो बात सुणी तो मन माय लाभ र धोमो मायम्यो। वो गाच्यो घरो सम माग जितरो मा तो न्व पण डफोळसस माय जिरनू दूणी चोमणा देव। बा 'माज किरसाण न पन्न आपर घरा न्यग्या। मावळो मान-तान करयो मर होलियो डाळ न सुवाण दीया। किरमाण न नींद आयी जद हाळवाळ डफोळसन अुगाय सी यो मर अुणरी जगा खराडो सम ल्यायन मन दी यो। किरसाण अुठ्यो मर घर न टुर-ग्यो। दिनतो भिगतो वगन र बळ आपर घरा आय मट्यो। डफोळ सख हाळी सगळी बारता आपरी लुगाओ नैं बताग्री। पण लुगामा अुणरी बात रो भरोमो नी करया। बा जाण्यो क ठा फाल हाळी मी होव। पछ किरसाण मर अुणरी लुगाओ दोनू हाथ धोय नैं सन्न म्हाराज रा पूजा करण माग्या। हाथ जोडया सिर निवाय मर बोल्या मस न्व म्हू घणा गरीब हा। घरा पूरा नाणा भी नी है पूर नी है। मेन्रबानगा करन वीस रिपिया दिरावो जिको घर माय अन बपरावा।'

सन्न वीस रिपिया काढ धरया। किरसाण र अुणरी लुगामी होया हरया।

बठीन किरसाण र गलाळो भायेलो डफाळसन्न सू मरज विनती कर रयो है श्रीमान डफोळसस! मन दस रिपिया री घणी जरूरत है। किरपा करन आप मिण थडवो रै मोज दस रिपिया दिरावो।'

डफोळमल म्हाराज बोल्यो "अरे खाली दस रिपिया ? दस रिपिया सूं कांई होसी ? मैं तो बीस रिपिया देस्यूं !"

किरसाण रो भायलो राजी राजी बोल्यो 'सखदेवता ! थे तो घणा न्यालु हो। लोगां रै मन री बात जाणो हो। बीस रिपिया देय दवा तो म्हारा सगळा काम पूरा होय जावै।

डफोळमल दूजै भळ बोल्यो 'अरे भोळा ! बीस भी क्यूं ? पूरा चाळीस लव ना।"

भायलो कयो बोला म्हाराज चाळीस भी दिराय देवो।'

सल सूंगळो दीस्यो 'बस चालीस माय भी धापग्यो ? अरे चाळीस ! चाळीस सूं तो पांच दिन रो सीधो सराजाम भी नी होव। अस्सी क्यूं मागै नी ? '

किरसाण रो भायलो धूपग्यो। रीस नै रोक न बोल्यो "बोवो म्हाराज, अस्सी रिपिया भी दिरावो। कांभी देय परा गावतो करो ! '

डफोळमल कैयो ना भभी ! ना ! अस्सी नी, मैं थानै अस्सी रा दूणा-पूरा अक सौ साठ देस्यूं ! पूरा अेकसो साठ ! चरै साभी अर सिवकै दीपता !

मवैं तो किरसाण रै भायलै रा जावक लाचा ढीला पडग्या। वो लाल होयन बोल्यो म्हाराज कांई पूणपावली देवणी है क नी ? क, कोरी लपा-लप भी करणी है ? कांई थोडो घणो देय दिराय'र लारो छुडावो नी !"

डफोळमल ऊंची हथी नूं हस्यो अर हसतो भी गयो। कयो। 'अरे भाभी तू तो निराठ गिवार लाग्यो। जाणैं कोनी मनै ? म्हारो

न भाव है ? पर लोग '[illegible] [illegible] [illegible]' कहा करें। कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो [illegible] करना है। फिर पर [illegible] [illegible] और उदारो [illegible] [illegible] करना की [illegible] [illegible] है। उसमें यथा-आरम्भ है निबाह केवल लेखक में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भाव है। इसको लेखकों तो मानना हो काम है।

••

११

# कलापिरा बतासी



मीयाळ म सी पडै, उन्नाळै म लूवा चालै, जका फोडा जगती र हिवडै म सन्न सालता रैव है। पर मुरधर रा माणम इया फोडा न सू जित्ता ही नी गिणै। सीयाळ न जावत जमाम रो सुग्न समभै अर उन्नाळै नै आवतै चौमासै रो चोळ-बबोल मानता थका रूडा रस बस है। नीर भरै चौसै अर कळायण नै अडीकै कोसै। बरसा आव वाधो पडै धन पसु छाती सू ऊतर अर हाथ फुरण लागै। राजब्यारी रोजी चालै खट दरसण ने मागयो घालै। वाणिया रै व्याज सूणा आवै अर बीजोडा ही आप आप र काम रा पूरा दाम पाव। इय वूमी म ही भडी रा दिनां मे ही तीज तिवारा री लडी सी चूपी मावती जाव है अर लुगाया गावती मनावती रैवै है। मोर बोल, मिनख मिल अर वोरा तोल तिया घुरिया ईलै खेता घघो मिल किलविलै है। वा रा दिन है, रोही रा बरतारा है, गावा म सूनाल है, घरा रा मजा खारा है। बूढा ठेरा लूला लगडा, पडघा सई का कोई अपग आळसी अर मद कमाऊ खडयो गळयां मे गट मींगणों सो गुड रूड। की सू जिलो जोडै? की स गुरबत करै, एक सू दो हुवै तो दिन काट नही तो माच चढयो मरै मरै। अ

मन रो प्रेम [illegible] कायो है ? हूं । इसी बात अबार ही के बुधमल रिमं में पत्रो ही [illegible] लागगो ।

बुधमल [illegible] करो [illegible] कायो [illegible] हो । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लिजाज [illegible] हुया । बुध मन री मोवरी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पत्रा [illegible] [illegible] [illegible] । रोवांनी [illegible] [illegible] [illegible] अर इसी [illegible] रै [illegible] सू कुंवर [illegible] री कूंडो [illegible] [illegible] आ । [illegible] रै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ऊभी आ रयी ही । कुंवर [illegible] कोवनी [illegible] [illegible] देसर बुधमल री मीठल [illegible] । मन [illegible] लियो । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पड [illegible] [illegible] [illegible] गई । कुंवर [illegible] रै [illegible] ■ रायी पन बुधमल हुयो पोन-मोन [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] गर करी बुधमल री [illegible] पुरा । [illegible] पर [illegible] कुंवर रा [illegible] माथ [illegible] दे [illegible] [illegible] पर छुरी [illegible] [illegible] लिया ।

कुंवर [illegible]— 'भाई जी इमां किया ? मन चाहीज तो ल्यो । गैना [illegible] ता रानो पण इयो मामून ना करो । पण बुधमल भाई गहीं [illegible] मानो, [illegible] मनुनय सुणी अणसुणी कर ल्यो ।

कुंवर रोवणी-कूवणी [illegible] तड़फड़ायो अर [illegible] बचावण सातर घणा ही तरळा कीना पण बुधमल तो गोडा [illegible] दाबर [illegible] तोड़ हा दीना । मोत्यां रा माळा सोनै री [illegible] [illegible] गूंठी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लिया अर लाळ भातर [illegible] म [illegible] कर दिया । म्हाग री गाभ म पढोफ बाधी अर आपर [illegible] माळ म [illegible] री गन्त करदा । बुधमल सारो काम [illegible] लियो परदेस कमावण रो मगो उणा लियो ।

कुंवरर नौं लायण सू बूढा टाकर ठुकराणी ( मां बाप ) दादा रोया अर गूंगा बावळा सा हुग्या । गोडा टूटग्या डोमा फूटग्या

घर भू ध माथै पड़ग्या। जिनड़ी सू जळग्या दुख म गळग्या तिया तीन मयान सू जाता रिया। बुधमल सू कु वर रो पत्तो पूछ्यो तो दुव सू क केठा दर सू ? ढेर होग्या। आसू ठम्या नही, ढाड़ै न्हाई अरडा उठ्यो। जद लोगां बी रै आगै कु वर रो नाव लणो ही छोड दीनो।

कु वर रै लोप होण हाळै दिन गाव भर म हाडी नी चढी। माणसां मे करळ-करळ माचगी। कल्ळोपना सी हुगी। फिरणो घिरणा छूग्यो काळो बादळ फूटग्यो सारी बसती बिपता म डूबगी। इसै मौक बुधमल नै सुन लाधी, गाव छाडण रा मतो पक्यो। बो जाणग्यो के अब अठ रणो ऊनरै सू खाली नही है। लोगा न पैल्यां सू ही कवण लागग्यो के 'म्हारो नी अठै मठ नी लागै। म्हैं कणा ही रातर पन्न ही निकल जामू। भोळा मिनखा ने बोजू बुधमल री बद मासीरो ठा नी पड्यो। उळटो आछो बतायो— के कु वर बिना बापड़ै रो जी नी लागै।"

अेक रोज आधी रै बखत बुधमल गाव सू भाज भीर हुयो भर आगल गाव सू ऊट भाडै कर परोर परदेस रो गलो पकड्यो। बठै (परदेस मे) एक भारलै गाव म हाट भाडर बैठ गयो। ताखड़ी बाट खरीद परार लेणो दणो सरू कर दीनो। गणो गांठो वेचर वोपार पळायो।

मिनख री दिन दसा। समै री ओगबाई। दिना दिन सूई वाली। मता री मुकळाई पाप रो पीसो लूण दाई जमग्यो, भूख भर गरीबी रो गाव निसाण गमग्यो। पीसो दीनो ब्याह कर लीनो। टाबर टीकर हुया अर आपरै देस जावण री जी म आई। हमैं बुधमल ब सग वातां भूलग्यो। देस मे आवता ही तेतीस करोड़ देवा री धोक-पूज करणी पळाई। भोग-चढाई मरधा आड़ोसी पाड़ोसी परघा। आख गाव र घरा हाती-नू तो दरवायो भर गाव

रेत बतानो । वाह ! वाह !! पाई अर अफिकर हुयो, मोहन [illegible] अर सा[illegible]ी बात बतावण न लागा ।

तब [illegible] री बात सोमस री रात [illegible] दिन दिन [illegible] लागा गु । सोमास रा [illegible] भुव ! [illegible] सेठी म सट [illegible] गा ।। हया देर । वाग बारणा जोरट पन अधेर [illegible] ! [illegible] मळावण र साथै चोजरी चमकता आय ही ! चादणी चस [illegible] ज्यू झुपमर झम ।

सेठाणी बच— 'आज मन मन म ही क्यां हुसो लिखो ?'

सठ बोल्यो— अयां ही ।

सेठाणी— अयां ही तो नही कोई न कोई बात जरूर है ?

बोल्यो— बात ठा है ? या आपणी माया (धन) क्यां आयी ?'

सेठाणी— नही ! बतावो क्यां आई !

बोल्यो—बतावां नीं थे किणी न कै नाखो ।'

बोली— मा ! स्याणो ! पाल्या पाछै क्यू क देवू ! भोळी थोडी [illegible] । अर नही बतावो तो म्हें था सू आज बोला ही नही ।'

सेठ—'नही ! नही ! भा, भवरू री मा ! थाने बतास्या पण सागी बात बतावणी है ।'

बोली— अ बाता माठां सू फोडो । म्हे हो तो रोजी न सेर पक्क धान रो नास करा ।

बोल्यो— नही ! नही ! था सू कदे ही कूड नहो ! सोगन खावू थारी । नही ! नही ! म्हारी ।

बानी—"क्यू कूडी सौगना खावो बताणो है तो बताबा, नीं जणा थारा म्हारा दा भाग्य ! नीचा जावो।'

बोल्यो—'नीं सा न्या मा भवरू रो ! कीनैं हो कैं दिया ता जावन मारया जावाना।' सेठ डरता कांपे !

सेठाणी—"हा क्वो काई बात है ?

सेठ— बात काई है। इयैं कळायण न देख परा हसी आवैं। घणा दिना री बात है, आज वाळी सो कळायण बरस र्यो हा। म्हैं अर म्हारा भायला कुवर दानू इय ही मैडी म सोरया हा। म्हारो मन बढ्यो भायल कुवर न मारण खातर उवरी छाती चढ्यो। जद कुवर कियो— भाईजी काई करो ? म्हैं मर जासू थान कद हो आमी म्हारैं धन रो कं होसी ?" म्हैं उव बखत भायल रा बात मान जावतो ता मफा भून करतो। आज इत्तो पीसो कठ सू आवतो। पण फट मिणिया मोस नाख्या अर मारलो नाळ म भाडो खोदर गडत कर दीनो। मरत-कुवर भळ कियो हो या बर सती कळायण हा कं म्हारैं मारण री सारी बात बता देसी। पण इय कळायण ओजू उवा बात किणा न नी बताई। अद मनैं आज हसा आई। आज थान म्हे ही साची बात बताई है। कदे कया मत।

सेठाणी कियो— स्याणो ! म्हैं कीन कवू भोळी थोडी हू ! पण सेठाणी काठी छनीज गई। माम दोरो पडग्यो। सेठ री नाड हाथ मे आगई। आखी रात आग्या स काढी। भोरे उठी अर हाथ धोयकर नख चख गणा गाभा पैरया। पछ सारली पाडोसण बखतू नायण र घरा गई अर आपरा साग गणा री बडाई करी।

बखतू बोली— बुधु रा बाप मा मरया जद थो कितोक हो ? छोटो साक तो हो। रोटी रो ही गासो हो। आज आधो दिया

पाड़ो मांय । पण पापरी अवखन र पाण ।' सेठाणी मूं भागर मन री बड़ी आगलूंणी बडाई सुणी ना गई । बोली— अवखन क पाव हो । बापर ठाकरां र कुंवर न गऊ गाडा स्यां जका इयां रा घरम आर्ड हो । इणी माथ अर आयो रा मागपा । गाडा गोर भारा नाळ म दूर दीनो । उण रा मग भली बन परार बोसार कर्या । जन मूं पाप रा पड़गो बध्यो है । कमायो धन कन हुव ? मगणी री बात सुणर बगतूडी र मन म ग्लाणी हुग्यो । उठै सटैणी मगणा मूं मूंडो फोर मानो । मगणो मागर कना फासी बगतूडी बध्य पर बाटड़ा मानो । मूर ठाकर रवरांणी भाग बसतू रो नहछळ आय जाग उठयो । बगतू मारी दुख री कथा सुणाई । ठाकर थाणा रपोट भिजराई । थाणागार मन सिपाही आया नाळ खोदर कुंवर रा हाडरा कढाया । सारा र सांची कथा आछी बुधमल र हथकड़ी घाली । सागी कळापण मूं कुंवर रो कर्यो खून उघड़यो ।

१२

# मदुओ

•••

वीकाग रा बास भाळा ग्वास, अठ सुग सम्पति रा देडा बस। पुराग राजपरै री बात एक चोधरी रो गुवा‍ो। चोधरी सुगना पुरख अर मतवाळो। दिन रा ‍रियाव तिया जा‍ री वनाय रा वाहळो। ‍य कारण दो बटा परणाया पताया जका दोनू ही पारा हुग्या। बटो आप जकी सामरै गई। दा डकमडका घणी लुगाइ घरा वठा गिलरा कर अर ग‍ा नारा। माल मत्तारी कमी नही जरै बाम्न दोनू लाग लुगाई वेफिकर होकर रवै। घर रो धान मोकळा खाणो वरतण न पीमो सफन जीणो। चोग्गो खाव माछा पर अर नगो ‍ैण रा उजळा बात्र कर। गाव र भोगतै री ठुकराणी ‍या र माळ धा‍योग्गी है। ठुकराणी चोधरी न वाको जो अर घोधरण न राणीमा कह परा वतळावै। अ दोनू उव न जायोडी बेटी ममान जाणै अर बाईमा कवता थका पत्तीणै। इया रै इथै मुरजादी सभाव रा मान गाव माथ घान ह।

सुख सोमती रो दियाळी। ‍ेता म राम, रोही म चारो मागीडो कालीसरो जमानो प्यारो। देवता रमै जिसा घरा म चैळ बळ लाग रयी है। चावळ-ल्पाम्मी रा माल मलीदा बणरिया है।

नू व दिन रा नू वा भोजन चौधरी र घरा ही सीरो पुडी हवला। काद गू दळी रा साग मगाया है। चौधरण सुघिया ही बाईसा न रावळ जीमण रो नू तो न्वण न गई है। नेवगी चौधरी र घरा भोजन बणा वण म्रा डूक्यो है। चौधरी सीधो ( माल ) भलाव नाई खुरपो हलाव है।

चौधरण ऊनावळी हुई रावळ आई सामो गू घटो काढे उवाणा पगा धाई। रावळ री ब्याह वूटा भाव धापी। रावळ री दारोगण्या अर हाजरणी मिनखा कियो— आपरी (टुकराणी री) आसण कोनी, ओलद मरिया हैं। मायन सो गिया है चौधरण किवाड र कोचर मायकर देख्यो। दोनू मोट ढोलिय माथ बठा है। जु वाईसा उकाळी पारिया है। ला सा! सो'सा कर! पण बान्सा प्यानो पाछा करता थका सफा नटै है। चौधरण फट फुरगी। देख नी सकी!

घरा आई अर चौधरी सू कियो— पुरखिय रा बाप! बाईसा तो अणसारी है डील कोयनी! जु वाई बठा दुवाई पारिया हैं। जा सू भगडा लाग रिया है। जीमण री वीरी सरधा हैं?'

चौधरी हसी भरी रिगटोळी सू बोल्यो—'आछा न्याल हुया। पाधरी आड है। बाईसा तो राजी खुमा है। म्हे मखावटै ही मिनर आया हू। रावळी रीत न थू क जाण? जु वाई काई मनवार करता हुमी? नू वो दिन बारा मीणा रो त्यू हार आपरो काई मुसळ मनावता होवला। चतर आदमी कोई भी काम कर सो पूरी जाच पडताळ करके उथळा देव पण तमास्त मुढन्द दये विना ही सूई रो मूगळ बणा व। गोड घड लव तथा अणचीती अणभारी क नाखै। अ रा घण न्यास पण रा पुन परताव है।'

चौधरण सूज गई। चूकर री सी ज्यास्या काढ र बोली— देख्या कोयनी न्स्या स्याणा? भमावट ही वणू कै आयर ना? म्हा

रउ पगा सूं कोई वैर हो के ? एक पथ दो बात आव तो ! म्हारे ना गाडा में घाळ रो के मार है, दूज जा ग्रासू । इतो क परा माणो पगा रावळ वानो पाछो चानो।"

चौधरण कोटडी म बडी, ठुकराणी भाजकर पगे पडी। बोनी—'वाको सा सुखिया था पधारिया म्हू मिली नहीं । मतवाळ माड राखा । चौधरण—"हूँ तो चोखी तरा हा ?

ठुकराणी—' रयू हार मायँ म्हा लोगा म दारू पीवण रा रिवाज है, जको ठाकरा साग दारू लेवणा करा हा कानी सा ! मोर वाई नारप कोयनी ही । चौधरण—' केठा बाई म्हूँ तो घणी नी ! हा ! तो बाई सा थाडा दारू म्हानैं ही धानो जको थारे वाको सा साथ बैठ न पीवा !"

ठुकराणी बोनी— हा ! हूँ लादू सा ! मोल थाडो ही मावणो है। रोज रोज नहीं तो इवयातर दूज होळी दियाळी ता निया करो काको म्हारी ! हारी थानी, थाकी चूनैं तो पिया करो । मीणा सू रयू हार माव थोडो घणो राग रग भर नू वापणो नीं ह्याव ता के टा पडै ?

ठुकराणी माय मू एक वडा बाटकियो भर ल्याई । चौधरण पल्लै सू ढक परोर आपरै घरा कानी चाल पडी । बाईसा न मिज्या जीमण रो नू तो भी दे आई । सीयाळी माळ र मोटा मावै नाव उतानार दारू हाळो बाटकियो ढकर मेन दानो अर चौधरी मू लुवत मजनिस री वात मूळकती थकी मसीन मू कही—' पुरखिर रा बाप दियाळी मदा ही थाडो आवै ? रावळ म तो जु वाई अर बाई दोनवा दारू रा प्याला पिया है । जु वाई सा मदवा वण रिया है, मजा घाल । बाई घणै हरख सू मनवाळा हुया मानै ! हमक आपां ही दारू सू दिवाळी मनावा ! बाईसा मनैं कियो—' कदेही

कदेही तो कांकीमा न ही पाया करै। आज आपण थारी मोकळा मनुहार करसां। ताण लियां मनाल'

चोधरी — 'तो आपणा घर दारू पीवण पुरखियरी मा ? गावड़ी म तो घणा ही घडा दाटया पडया है। भभक चढै अर उडा उडै है। आपण तो दारू राखणो मना है। माधो दारू पीन्या (कर) पडया हे ?' चोधरण — दारू री फिकर मत करो मनुहार जगार री फिकर करो। म्हारू रो ला एक माटा भरोनो (बरतण) भरार ल्याई हू। पीलपाण्य छ माथ ढंक मल्या है। त्यार हवो मारूजी धान आज छिंटार दारू दा पाऊंली। मागोटा मनकाळा वणार हलुवो जिमाऊंगी। म्हारू मगर भंस माथगी है। दूध दूहनाऊ मोड़ नी मर। थाह आज हू बाईसा प्राव ता परास दिया। नी ता म्है आपरीर जीमा रमू। आज थारी र म्हारी वात है दिवाळी री रात है।

चोधरी रा मूंको मैंदरा (मून्न) हन्या हुयो। उब र जी म हनाम री लग आ गई। भसां आणन्द घर मन्या पण री जोत सी जाग पडी। बोल्यो — 'पुरखिय री मा! तग तो बणी रई मजा है। लुगाई दव तो भगवान बीन ही इसी देव।

चोधरण भैन दुवण न बाड गई। न्दणी सीधो वाधो त्यार घर परार मल्यो। बाइमा सिझ्या भू अधार मरोमण म पधारसी। गल वठ चोधरी र ठाल माय म जू सा खावण लागगी। — कद पुरखिय री मा मन दुह परा आव अर दारू मिळ। पण भंस रो दुवणो नारो गाडो ह्या है। उणा पातसँ मन्न अर थारी भेन जद हुव नी। आठ दस सेर दूध भी तो काढना नाळ गाय। ओ सारो काम चाटो गाटो खाया पछ ही भंस सारैगी। नन्न न दारू पीवण रो वखत ही टळ जासी। सिझ्या पछ बाईसा ही ता मरोमण आसी अर नाइन

भा जीमण न पाछो श्रावला । नवां सगळा रै सामण दारू कँया पीवाना ? अ काम तो गवळा बावळा रा है । 'आम देख न कुनो भ्रम ! कोटड़ो में कोड़ आवै न जावै पड्या गूगा हुया गुडर । पारमरा में हुधी मुमम्बरी करै । पार दिन पड्यो है ओजू तो सूरज म्वरा माथ पर ही खड्या है । म्हूँ तो बगो भो पा नवड़ । पुरविय रीमा मागर स श्राइ तो खायो माथा पीपरा टटा मट्ठ । श्रवना भी मारो सबला ममट्ठ । लुग या न दारू कम (के चवै) ? व ता काल रा काम करो अर टावरा मू घर भरो । चौगी जनी जनी बाना साधतो थवो सामली खाळ म बड्यो अर माच नीचपड्यो मारगिया र पाणा रो भग्याडो सजनो घरट चरड चोम गिनो । मम्वो बगाया अर घूमर घालण नै लागग्या । बूडा नमा दिवाळ है । भावगो जाग्णी न कूठे री ठगणी चाव है । टिप्पा खाव आगन आगड पड । बतळाया चिड है ।

भम दुरा मर जाटणी घर म आई । पाळी म बडत हा मन्व चौधरी जोर री ग्वची लगाई । दिय र माठ जावर पड्यो अर दूध रो गवणियों ढुळा दियो । अब चौधरण बानी — इया के हाथा ? मिनखा र मायन वधू पडो ? उजाड कर दियो । दस सर दूध ढुळा नाख्या । दारो घणो काढवा मिनखा नै इत्ती छाछ हा लाध नही ।

चोधरी—'मन्वग नड इस्य (अठ) दूध लिया वे कर हा ? मनै क ठा तू दूर लिया इतग (अठै) मर हो ।'

चौधरण बोनी—के इतो दारू ये अकरा ही पोग्या आ पुरविय रा वाय । माचो ढाळर सो जावो । बाग्मा देखना ता हंसना । य तो पूरा गमबाज हा ।' चोधरी बोल्यो—'इतो मेर गळ-ताळव ही कोलाग्यानी ! आजू तो अथाग नसो ही नी आया है । कोरा आरूणा रा डारा, लान हुया है । पण कड हैं अर थक्का

उपरला दिन है, धाको घिमावां । अबै कितीक धाजी है ? राम बरसाण हाळा है । मेह बरस्यो नी अर बाबो आयोनीं । एक्र री बात है । धानडो ले आवा । सेम रा टावर बातडो मन में अचावें है ।

चौधरी री बडोडो बेटो चूनियो हरखू री हाट गियो अर मोठ बाजरी मांग्या । हरखू भाडी चीज लेवणी चाहा । चूनिय कियो— "अबकाळ तो उधार ही तोल देवो काको जी । बाबो आसी जद थोरा सारा पइसड़ा दे देसी ।"

हरखू— 'ना भाई ना । इमो काम नी करा । गवार थोड़ा ही हा । घी ऊन ल्यावो अर बाजरी मोठ ले जाओ।

चूनियो— काका सदा ही तो सामणै चीज देवा हा। अब काळ जे नीं देवा तो बाबो आ पराः दे देसी । थानै दुकान मू धान धून तोलण री भोळावण है । म्हे भूखा थोड़ा ही रस्या । दूजो म्हान कुण जाणे ?'

हरखू—'जकी बात री मनें काई ठा ? म्हें तो उधार हर गज तोलू नहीं । म्हारो किसो घर पाणी मे है ? उधार किसें किस नै देवू ।'

हरखू री बात सुणर चूनियो बोल्यो न चाल्यो चुपचाप आपरै घरां चाल्यो गियो । मा न सठ गी सारी बात सुणाई अर आर उदरपूरणा खातर कार मजूरी री काई जुगती सझाई । अठीन पाच सार दिना मे सेमो बरसाळ री रत आई जाणर घरा आयो । टावरा नै विलखा जोया अर बूझ्यो—"फोडा तो नी पडया ?

चूनियो बोल्यो— 'इत्ता दिन तो ऊन अर घी रै बरोबर काकाजी मोठ बाजरी देवता रिया । पण अबकाळै मोलै ऊन घी तो आपा र परा हुया नहीं अर कोरा दाणा काका सेठ दिया नहीं । जक

मन मजूरी करांहां, पेट भरांहां। गुजरान तो करणो ही पड़ै।
म्हा छोटा लूण ही खावां हां।"

चौधरी खेम नै, सेठ री चाल बाजी सू घणी रीस आई।
बिन आपरी लुगाई सू पूछ्यो—"हरखू कितोक धान दीन्हो ? आपणां
बर बि बिय री दूकान थी कतोक गियो ? उन रा भाव फळायाक
नी ? थ नरमी दाम विय सू किसो बिरिया ली हा ?"

खेम री लुगाई कियो— 'म्हानै तो दाम दीन्हा कोयनी।
ती बर उन न बाजरी र भाव ही लगा लिया। म्हतो घर री पैदा
थोड़ी चीजां दे दे'र ही बाजरी ल्याया। चीजां री काट हुई, सठा
ी खरा नाट हुई। बपार म्हारो आगलै रै खत्ती नहीं जद म्हे म्हारो
मां हग वाळो करयो। ई मोण कळाप करता थका दूजी जगां स
न चून लावा हां। हमै ए था गियां धान ही अडावां हां।'

खेमै नै आज हरखू पर जिसी रीस आई बिसी बियै नै कदे
ई बरी माथ भी नीं आई। जाट तो सत्य सू थको तरत जवाबी
राळियो अर बदळो लेवण । झगड़ो उसवाद जाणीजै। बो
भरोस पर पीढ़ां सू परतख ठगावै पण ठगणियै री हुस्यारी अर धार्व
बातो रा ठा पड़ जावै जद छूरी रो खायोड़ो नासा सू पाछो निकाल
लेवै। साच ही खेम रै होयै म बदळै रो उपाव सूझ आयो। बो सैर
बीकानेर कानी बीधड़ी रो थड़ी टुर दियो। बठै जायकर। एक दो
रुपिय मे लोह रो एक लाम्बो लक्कड़ सो माटो नाळो खरीद लियो अर
बिय नाळ नाथ एक सुनार सू मिल परोर बीस तीस रूपिया री
चान्दी रो पात चढ़ा लियो। ( पुराणा भावा मुताबिक ) सुनार नाळै
नै पात सू इसो जड़ ढक दियो क एकरखो आवगो जात रै आयोड़ै
बन्च न हो लोह गो ठा लागै नहीं। जोर सू देखणै पर गौर न्हदै
अर बणावट री कारीगरी रो वसक नावो रै वै। लो लुका दियो एक

१५

# औब



परताबमी सगा गनेतिया र घरा रया करतो। मा-बाप सुरग सिधार गया जद सू ही प्रठ ल्यायो गयो। इयरा माईत इय री छोटी ऊमर म ही आग न गया। सारो बोलणो चालणो अठ ही मील्यो है। हमैं तो यो दूधियो जुवान होबाळो है। म्हाछो डील घाल्यो है छलाइ री चाल चाल्या है। नाक सज रयो है वठ गाघो पड गयो है। बाळकपण रो नाव निसाण तक नी लाध। बचपण म घणै लाड प्यार सू ही नी आपर जाम्योड दाइ मा यणर बनेई (जीजो) री मुरजाई मोटो कियो। म्हाखीरास जागती थकी परताब नै राजी राखती। कित्तो ही ऊजडो कित्तो ही बीगडो पण परसग्या र माइत बार टाबर न डाढा सोरो राख्यो। नकर भी कूट्यो मारघोनी। चोखो खवायो पायो नर हवायो धुवायो। हमैं परताब मोटो जुवान हुयो जोयकर, म्हारा घर रो जन मन घणो राजी है। जक टाबर न पाळ पोसन जवान बणायो उणर वास्त म्हाखो घर पूरो हमदरद है। इयर बहनोई र छोट भाई री बेटी परमळ रो ब्याह भी परताबसी र पल्ल करण री ओल ओल बाता चाल है। परमळ इय र साय खेलबाळी सायण है।

परताव र बनईसा रो नाव अुगमसिंह अर उवारै वडै दाग भाई रो नाव जुगमसिंह है। नेनवां सू छोटकियै भाई रो नाव तुगम सिंह वाजै। तुगमसिंह नै बीचोटिय भाई अुगमसिंह अेक दिन सम मायो कि— 'परतावसी (म्हारी माळा) घर घराणै रो टावर सिरदार है। हाट मोडे पून्रो डिलाळ जुवान डावडो है। आपार घरा हा पळयो तथा रळयो रियो है। आपणे ही घरा दूयरो माल वण्यो रवै तो किमो विगाड है? जिसी परमळ विसा ही परताव। दिन रात री सी जोड प्रभात मिस्या रो सा मोड जोवता इसो टावर आपा न लाधै नहीं घर घराणा ता नैड निडाम दीसै नही। आतर कठ ही मजाण म आन मीचन आयारो करणा पडसी। कठ ही गोना म माथा लागग्यो ता ऊमर भर रो ससिया अर छातीपचा रमी।

तुगमसिंह रै तो मा बात घणा दिना मू सू गैसी खुभ रहा हा। अब तो सब सरम मे इत्ता किन काढया। ज्याण्यो दाना भाई हकारो भरला मा नही। मत्र नाखै— साख म माख जार सिर म राख।' इय वास्त डरतो रयो पण हमे बोल्या— परमळ री मा तो मन रोजीन आप सू अरज करण खातर कैवती रव। नकड राव कान लाव, अब— टावर हाथ स नी चल्यो जाव। घर आया नागना पूजिय वाथी पूजण जाय वाली कैवत था म्हा माथ माची नी हो जाव। भाई साहब! म्हें तो जाणू व आपर परमळ वाह दूजी पाड़ा है। पण उब री जिया (मा) न तो कदे ही ध्यावस नी आवै। भोरयो माठो ही मुरजावै। म्हें भी तो मिनख हू। रावळ प वडनो हो हराम होरियो है। वगीसी टीक री रस्म करवाय दो जको म्हार हा जमट मिटै।''

अुगमसिंह कयो—'जको तो मन ठा है टीकै टाक रो के डर है। किसो दूसर गाव जावै। मोटो मौजाईसा न बूझ परा थोडी

सिनस कर देस्या । घन दायजै री ही घणी चिंता नहीं । जान बरात अर तीवळ ताग सूं बिलकुल टळ सवा । साढ ना कोई करहल, गाय ना कोई भैंस, जच तो दो खीसरी (गाय) दे दिया । नहीं तो किसी भवाळी आव । अबार देव सूता है । देव उठणी इग्यारस पछ चोखो वार देख टावर र हाथ में रिपियो नारेळ द देसा । बसत पाच्यूं ताईं फेरा कर देसा । कठ जाव ? इयर तो कुटम्ब म कोई आग लार ही कोनी । आपा ही हा । आपणं ही घरा पळघो है तो आपण ही घरा रमो । बाकी अठैं तो चालणो सू छाल्या ही टावर इसो लाध नही । हजारा मे ही मुहगो अर टाळवो है ।'

दादा भाई री बाता सुण कर तुगमसिंह रैं मन मे घणा विचार आया ।

उधारी बोपारी बुद्धि अर चीकणी बाता सुणर तुगमसिंह थोडो सो अबरोसो करघो । जाण्यो— दादो भाई साळ न काठो कर मिजाज दिखाळै अर थोथा लोर स्याव । पण म्हारो मन तो परताबसीर फूल स क्हैर माथ मडरारियो है । तुगमसिंह बिया तो भाइ रो घणो मान मुलायदो राखतो थको बोलै पण जीभ आज गिचर पिचर करैं । दुपडदो पिवचर सो वणरियो है ।

मगर मे मढास गाव र ठाकरा री कोटडी म आज आधी रो हूल वलो पड । चानणो खिलक घोडा माथ काठी माड । दरोगी दरोगा न ही पूरो बरो पाटघो नी । ठाकर तीनू भाई लारल गळत मे पग काढ । घोडा पर जीन कसीज । ठकराण्या भेळी होरयी है । तुगमसिंह री बहू आसू ढळवावै है । घराण री बात, क्व न सुण मन ही मन कुढै । घर घर मे ही चीढ बाढ । पटाफट बार बणगी । तीनू भाई चढघा घोडा पर अर लगाई लामी ताग जके सूरज री उगाळी नैं ना पूग्या कोस तीस ! ठाणा ठरघोडा घोडा ऐड सनीं सवया । रातूं रात देम्या तवडका ।

मुधिया री वळा वन री रेळा परमळ नैं परताव मारग र एक ऊंच मगर माथ थोडी भेनी सू अळगा सक्कर नी म मूना िवाई पडघा। तीनू भाइ खौर दाई लाल हुय्या। पण भाई बडा घणा स्याणा न समभ र। धीरज सू आगलो पाछली सोच अर वाणिया बुध राखें। परया ही बाल्यो— भाइ सोगा सुण लवो। थोड़ी छानी राखा अर पग थामा। यान म्हारी आण है। राजाराम री छुआई है। आपार घर री ही बात है। घर री बात अर घर परमध्या रा क वर, यान न यधाओ मती। गुना माप ग्गे अर पाछा ल चाला। थाला माना यास बटाय न प रा लवाय दघा। बटा दणी ता राजपून र टा ड न ही है, तो भळ इसो जाण्यो पिछाणो कठ नारसी? का्या राता ा ही टटा है। बटै बेटी म और क फरक है? ग्दी ता वापदा आपणा बडरा वम्या न जामत ही दूध (अफाम) पा दिया करता हा।' बोलता बालता जुगमसिंह दुखी भिनख दाट मूंगा थणाकर सिमकारो नाग्या। भायारा रीस उतारी क्रोध हावयो। बठीन घोडा र हण हणाट सू हडवडाय कर परमळ नैं परताव री नींद टूटी। परताव, मायण लडकी रा बाप वाबा छाती माथ आया दघर मभडक्या पण उट्या नही। ऐडे विद्रोह रैं मोक परताव री अक्कल ठिकाणै आग्ई। बो बनेई गी ठग्गी निमर ताडनो थको समभ गयो, क— 'हमैं म्हारी मार पीट नी, मुद्दटीकै री वात हरनी। म्हारो परनो परमळ मू जुल्वालो है। पण मनै हमैं टळवाळो वुवार करणो चार्वे। नट्टा (न्याव) दणो है।' परमळ ॲकै पास उठ खडी हुई पण प ताज पमवान ही फीरचो नही। उर्वै र बनोई बतळायो— परताबसी टा घरा चालो अर थारो ब्याह करा। आना ग'ना वास बटाय कर बगा मदो बाधा। वात वधनी, जात रजपूती है। रावळा बावळा री रीन राग ही यारा वग। लोगा नैं रागडा रा गीत नेग ही अपरोखा लाग। कुण जाणैं के हुई? रातू रात मगळ

गुवाय देस्यां । गाडा हो जाओ । वेगा सा घरां घालो ।' अगरसिंह ( परताब रो बनोई ) बोल्यो— म्हैं तो बार मोणां सू परमळ रै सारा री थां वेगी बात बर रात्री लेकिन थां म्हां नु हीं घणी उता वळ करो । इमैं वपू सू मोडो ? वाना थोड़ी समाळो । सांड़ साथ परमळ रै साथ म्है चढ जासू ।'

इण भाते परताब रा बारी बारी सू घाल बर ब्याह करण खातर अगरसिंह अर उवर दोनू भायां घणा घोरा करघा । पण परताब तो आपरी सागण जगां सू हाल्यो भी नहीं । तव रो परमळ सू आबक मन फाटग्यो।

परताब एव घराण रो आम्मो है । इण रा पिता वेरीसाल सिंह जी आछ्या स्वभाव रा मिनख हा । मो ो गढ़ अर मोकळा खेत उणां रै हाथ हा । गाया भ स्यारा भी बगला उछळा उछरता । ऊट माड़ अर घोडा रा एक दो जाडा रया करता । इज्जत आबरू सू काम चालतो । ठाकर बात रा पक्का नैं घणा घणी हा। उणा रैं भेक बडो थाई जको मोमळी घूम धाम सू अगरसिंह जी न परणायनी अर कु वर (परताब) जलम्यो जित्त न आगीन गया।

कुंवर परताबसी साल रो हुयो मां न भळ गोडा मीचैं गी । कवत हो है— मा मर जका री मासी ही मर । बापजी रैं लार मा सिधाई । जद परताब री बडी बहन उवन आपर साथ सासर लती आई । लास मैणा मोसा सयकर भाई न पाळ्यो । बडी जेठाणी सार आपर तो कोई बाळ गापाळ हो नही दिराणी रैं भाई परताब न घण लाड प्यार सू मोटो करियो । अगरसिंह (बनेई) आपरैं सासरैं रो भौर तो सारो माल हाथा पगां रैं लगायो पण एक गढ खाली सभाळ न राख्यो । दो चार मिनखा रैं करणै सूरत दो चार खेत भी साळ री भलाई वेगींनी बेच्या । तीण मास मे परमळ रैं साथ ब्याह करपरार सारो फरज उतार देवतो अर परमळ परताब र माथ सारी

उमर आपरा अेहसान तथा करज लादे राखतो। देवउठणी ग्यारस नीं आई, परताव परमळ र मिलर भाज आर्णै री वेला आई। भाज आया तो भाज आया। टाबर हा ! हमैं चालर ब्याह तो करालणा चाय। अुगमसिंह तुगमसिंह अर जुगमसिंह तीनूं भाई घणा कळपता घरा खास करता कै धाप्या तो कोई असर नी परताव री सफा नाट है। वो पाछो उजा र घरा ही नहीं जाव।

तीनूं भाई थाग्यो परमळ नैं लेयपरा घरा कानी पाछा चाल्या। परताव कयो— म्हैं परमळ नैं नी परणीजूं। म्हे दोनुवा भाजण री मतो करघो जद राज र टोळ रैं रार्ईकै सूं कांई आछा विरवाळ (तेज चाळणा) मत मान्यो। रार्ईको हरमल बोयो— एक घा रात्रू रात म साठ कोस पींच सक। इय री नानी एक दिन मे पूरा ही कोस जाया करती। पण बिर्यं म एक अब ही। मारग म सीन (गीली जगा) आवती वठ ही नानी बठ जाया करती। छाटा छिड़को तथा ओस गळम री ठंडी जमी माथ ही चालती चालती बठ जाया करती। ऊंट साढ म मा नानीरा सभाव अर गुण आगुण घणा आव, सो थानैं (आपन) धोखो नहीं दय दवै। म्हैं तो मोळ बदण र लाभ म कूडो नही क सकूं। ले जावो तो थारी खुसी है। मन ओळमो मती दिया।' पण म्हैं हरमळ री बात मानी नहीं। साढ मगाली अर नेग चुका दियो। आण्यों नानी कानी री अब बठ थको आव। पलाण करायो अर सणक मणक सोपो पडता ही साढ माथ चढ बठ्या। परमळ बोली— घोडा घणा धरा ऊभा है सू ती रात ही लाग आवा जद पार पडै नहीं तो लावड लसी। म्हैं किया— साढ (६०) कोस र पल्ल री साढ माथैं चढ़े बठा हा घोडा री तीस कोस सूं वत्ती घाह (दौड) नही हुव। पण हरमळ अर परमळ रा बाल साचो हुई। साढ चाली तो चोखी मस्सा तीस कोस आया— के कुदरत सूं आगैं भीजी भू (गीली जमीन) आ गई। साढ भरच

घर पामती चालती मारग में ही धर गई। माता-गोरां अर काम
दवा री मार पाच्या पण लाडू जणा री गोद। म्हारा तो आज मान
गा मर गया। बोल्यो न चाल्यो प्राण रै आवरर गावण्यो। एक
परमठ री बात पण पावणी कि— ल्यै लाडू रै माता म तक अ
हुआ करता। बस। परमठ वाले ब्याह हाटी बात पर मारता मटा
इस र साथ इताए बग्गरार नहु किसी गुन नारू मा। इस लाडू री
सविता— मा पर पूत लिया पर बाहर गया रणी तो गोरा बाहर।
सान्ता न लोग जबी म्हारै साथ बाहर आवण र त्यार हुणी इस
रा नाम्बाडा बल त्याग करना? ब्याह रा ब्यासा री मनार है ता
परमठ रा पूत किमा इयाम व मार मामा र व बाडा हाता? एक
रा है ज्यो मार ज्या ही पाया दणो पार ज्या ही जाया। 'पर
जिणी टावरी मां जिणी डोकरा। तो बहू दुखिया म दुरनाव करा?
जिणा दूध बिना ही तोरा जिणा नार बिना ही प्रारा। पामा
पवन न बहू आण फूल'र घर म पाणा? उमरथन रा दुख हुए।
मा पारा परमठ सभाळा पर परा न आवा। म्हार नू मा दवारी
घट आया प, पूरा बात ही नहा हूं। साथ मात्र पाया सा री पास
नाम्या था। बाकी मा आया नू बमी टारया है। मीरा री पाप
बान री माण तो म्हान भी लागमी। पण म्हारा मन इस नू पाग
जावण जाग नहीं। जो हिरू राख्य तो बाळ राड ही उमर बाड़ इस
नहा सा एग ब्याह नू ही भूरा भाज न ै। मन तो एक साड नू पूरा
ब्याह नवाह जिन गया। यण परम्परा वातावरण नू दिराग है। एक
ही ता लोग अणदम्या टावरा न उण्यार नू ओळम्य लय न ओ तो
पत्ताण री बटो पोती दीस।

१६

# घोड़े रो असवार



एक अलवतो मिनख घोड़े चढ़ियोड़ो राजाजी सूं मिलण न जारियो हो। मारग में एक डोकरी री झूंपड़ी आई। डोकरी उण रास्ते सूं जावणिया बटाऊआं नैं आपरै अटपटा सुवाल जवाबां सूं धपाकर तथा हार मनाकर ही आगीनै जावण देती। हरायां बिना हरगज झूंपड़ी पर राके राखती। घोड़ै रै असवार नैं देखता हा डोकरी नैं आज अेक अजीब बात ऊकनी। उण घोड़ै रै असवार नै बूझ्यो— 'अरे घोड़ै रा असवार—लंका री बात जाणै काई ?''

असवार जाणूं हूं। लंका री बात सुणाऊं का साचेली लंका परतख दिखा देऊं ?

डोकरी— परतख लंका देखाळ देवै तो भळे मन चाय ही के ? डोकरी री इयै बात माथै घोड़ै रै असवार आपरै गूंझै माय सूं दियासळाई री पेटी काढ़ी अर एक तूळी फाड़ कर डोकरी री झूंपड़ी रै लापो लगाय दीनो। झूंपड़ी रो हबड़ोट होगियो। डोकरी री सारी मालमता वासत रै भेंट हो गयी। डोकरी करळ भरळ कूकण नैं लागगी। अर घोड़ै रै असवार नै गाळ ठोकती थकी बोली 'अरे नागड़िया खादा मेरी झूंपड़ी क्यूं बाळ्नी ?'

असवार कियो—"त हो तो किया लका री बात पच ?। जणा म्हैं त ने बूझ्यो लका री बात बहु का लका परतख दिखाळ ? जद थू बोनी परतख दिखाळ देव सो भळ चाय हो मे। लका परतख दिखाळ दी। सब इहान हा जळी ही।

डोकरी बोली—'म्हैं किमो नागदियैं थाने तन कूपडी बाळण रा कियो। जको थ मन बिना टापर करगी। इमें थान राजा मन, तन पकडायू। का कूपडी रो डंड लिराबू।'

असवार बोल्यो— चाल राजा कनैं। दोनू जणा चाल पडया। आवता आवता आग दोनवा नैं मारग म एक दूसरी लुगाई ओजू मिनी। उव रो छोरो रोरियो हो। उव घोड र असवार न कियो – घोड रा असवार म्हारो छोरो रोव हैं। इय रा कान बाढ ले रे।'

घोड र असवार कियो— बाई बाढ लसू। इसो कय परार उवैं भापर गळ बद सू तरवार काढी अर म्यान सू बार निकाळ कर चट टीगर रा दोनू कानडा काट लीना। टीगर चिर लायो अर उव री मा ठोकी गाळ— सापडो खाव तनैं मरज्याणा म्हार छोरै रा कान क्यू काटिया ?'

बोल्यो— म हो सो कियो के म्हारो छोरो रोय, इय रा कान बाढ ले रे।"

बोली—'म्हैं किमो साचे हो कयो। चाल राजा कनैं।

बोल्यो— चाल राजा कनैं।' तीनू जणा चाल पडिया। आग रास्त म कोई गूजरी दूध बेचण न जावती उवा नैं मिली। गूजरी घोड रैं असवार नैं कियो के—'घोडैं रा असवार थाई बात इसी क जको गाल रीगा अर गळगटका आवैं।

असवार गूजरी री वात रो हुंकारो भरतँ थकँ आपरी काठी म लाठी निकाळी अर गूजरी रँ माथ मेळघोड़ँ दूध रँ मटक पर दे मारी। घड़ो खळखाच नास्यो। गाले रीगा अर गळ गटका भोर हुया। गुजरी ठोबी गाळ। बोली— मर थारी राड मरँ। म्हारो दूध दुळवा दीन्यो।'

बोल्यो—तँ ही तो कियो के वात कँ। वात इसी कँ जको गाल रीगा अर गळ गटका आवँ। बता गाले रीगा अर गळ गटका आया क नी। इस तरिया गूजरी भी घोड़ँ रँ असवार री परियाद लेकर उवा आला लोगा र सार्यं सार्यं २ राजदरबार खानी चाल पडी। आग सहर रो बजार आयो। बाजार रँ बीचाळ एक कदोई री हाट आई। हाट भात भतीली मिठाया सू भरियोडी ही। नेमकीन चीजा रा थाळ घामा भी सजियोडा पडिया हा। घोड रो असवार एक थाळ कानी आगळी दिखाळतो थको बोल्यो— भाई! या काई चीज है?

कन्दोई पडउथळो दियो— खाजा'

घोडँ रँ असवार भळे कियो—' भाई इयँ मिठाई री नाव काइ है?'

कन्दोई भूजर बोल्यो—कहू तो हू वे खाजा।' घाडे वाळो बठ ही बैठ गियो अर खाजा रँ थाळ माथ खावण न दूक गियो। सारा खाजा खाकर थाळ ठालो करियो। जद ही पछ उठकर आग न टुरियो। कदोइ उव न भाजकर गावडघा धर खाजा रा पइसा माग्या। कियो मुफ्त रो माल खाय आणो।'

घोडँ रो असवार बोल्यो— पइसा कठ? तं ही तो मनँ कयो के खा जा नही तो म्हैं क्यू खावतो।' दोनू आपसरी मे हबोधबी हुया।

मदोई कयो— चाल राजा कनै, न्याव करावा।'

घोड र असवार कियो—'चाल'

क भोई भळ घोड र असवार लारैं सवा मिनखा साग हो लियो। आला लोग राजा र कन न्याव करावण सातर चाल पड्या। क दोईवाड मू कढ्या ही नहा क घाड वाळो एक दूसरा दुकान पर जाऊभो। हलवा दोवटा काढरियो हा। घोड वाळ बूझ्यो — मोदी जी अ काइ काढो ?

हलवाइ कियो— दोवटा।' असवार दोवटाळै रा दो टिरकड उठा माथा पर मारग लियो। हलवाई त्यार भाज्यो अर अस वार रा दूकिया भाल्या।

घोड र असवार कियो— त ही तो कियो दो उठा। मैं जे दो सू ढाई उठाया हुव तो बता।' हलवाई कियो— खा भल ही पण पइसा ता भरना।

असवार बोल्यो— पइसा क्या रा दो उठाया है थारा।

हलवाई—'चाल राजा कन।'

असवार— चाल राजा कन। हलवाई साथ हो लिया आग बजार र करार एक पनवाडी री दुकान आयी। घोड र असवार पनवाडी सू एक पान रो बीडो माग्यो। रोव सू कियो- राज दरवार म जारियो हू। पइसा टका नही मिलला खाली पान लगाय कर मगाय दे जका मू ढो रचावा। इयै बात मा पनवाडी हसर बोल्यो— जका रो मू नो लाल दीस उत्र र मूढ थारो मू ढा रगड लोने, मोफत म मू नो लाल हो जागी। हळ्दी स फिटकडी रग चोखो आसी। पनवाडी रो नै वारो ल परो म वार आग चाल्यो ता गल म पनवाडी रा ही घर आयो। पोळी

पनवाड़ा री भाळो ढाळो ढावड़ी सड़ी पान सा रयो ही । असवार आपर घोड़ सू नीचो उतरकर गयो अर पान चावती छोकरी रै मूढ सू मूढो रगड आयो । छारी जार री टोळी मारी तथा गरळाई पनवाड़ी आपरी धनी रो रोवणा सुण बरार आयो अर घा र अस वार न गाळ ठोकण लाग्यो । बोल्यो— हराम थारा थ काम ! मवान बाळक न वयू रुवाणी ?

असवार उथळो दियो— त ही तो मन कियो क जका रा मू गो लाल लखाव उन रै मूढ सू थारो मूढो रगड लाग । राड बधा पनवाड़ी मया— थान राजा वन ।

"चाल" असवार उथळो दियो । पनवाड़ी ही उवै परवादी टोळ माय हो लिया । इयै ढब रा स ग मिनख घाड र असवार री मिनायत लिया राजा बन जारिया हा । मारग में एक लामो दाडो ळो मीयो मिल्यो । उव मिय सू घोड र असवार बूझ्यो— मीया जी इत्ती माटी दाडी कठ मू बधाई ?'

मीया चिडकर बोल्यो— थारै बाप कनै सू ।'

असवार— म्हारो बाप बडा बावळो है जको थन तो दोनी इत्ती मोटी दाढी अर म्हारी ठोडी राखी सफा उघाडो । म्हैं तो इस दाडो नैं पाळी लसू । आ बात क वन थवै बटाऊ असवार मुडद मीय न उठार पटक्यो अर सिणियो सी सारी सूकी दाडी उपाड लीनी । मायो मळे खुदा रै भरोस नाही रा इ साफ करवाण खातर राज दरबार कानो भोर हुयो । थोटी दूर अळग गया जद मारग म अळ एक बाणिय री दुकान आई । बाणियो तेला लूणो री दुकान करै अर आपरो पट भर । पण दुकान म तेल रै घडै सू थोडो तेल ढुळग्यो । वाणिय आगण सू तेल पूछयो अर वो आपर सार कह मै री खैर (कामना) मनावण लाग्यो । बोल्यो— मरी खैर ! मेरी लुगाई री

टाबरा री खैर ! म्हारै घर री खैर ! म्हारी दुकान री खैर ! म्हारा धन पसवा री खैर ! करो महाराज !'

घोड़ै र असवार बाणियै नै पूछ्यो—'कया री खैर मनावै ?'

बाणियो कयो—'म्हारै कड़ूम री।

घोड़ै र असवार कयो—म्हैं ही खैर मनावूं।

बाणियो बोल्यो—मना।

घोड़ै र असवार तेल हाळ घड़ै माथै खैंचर मारी डाग जको घड़ो फूट गयो अर हाट मे तेल रा बाळा बवण लागग्या। बाणियो कूक्यो अर घोड़ै रो असवार आपरी खैर मनावण लाग्यो— मेरी खैर ! मेरे राजा री खैर ! सारी परजा री खैर।

बाणियै कयो— मेरो तेल क्यूं ढोळ्यो ?'

घोड़ै र असवार उथळो दियो— म्हैं तो म्हारी खैर मनाई है। थूं अकलो थारी थारै घर री खैर मनावै हो। म्हैं राजा अर सारी परजारी खैर मनारियो हूं।

बाणियै कियो— चाल राजा रै कनै।

बोल्यो—'चाल राजा रै कनै।

बो बाणियो ही घोड़ै र असवार नै मरावण खातर फरियादी लोगां सागै राजा र दरबार कानी चाल पड़्या। राज दरबार आयो सैं ग लोग बारी बारी सूं फरियादां सुणावण लाग्या। पछै दोनूं टाकरी आपरी कूंप री बात कयी बाना— मेरी झूंपड़ी बाळ्दी।'

राजा कयो— क्यूं बाळी ?

असवार उथळो दियो— सरकार म्हैं टोकरी मन सभा देखाळन रो कयो। म्हैं झूंपड़ी अनायकर परनग जलतो सभा देखा दीनी।

राजा डोकरी नै कियो— जद घोड़ै वाळै रो कसर नहीं । त लका दखणी चायी असवार इण वास्तै भू पडी जळाई । अब तू भूपडी दूसरी माड कर बैठ ।

इस तरा सू सगळा आप आपरो उजाड वतायो । राजा असवार मू सगळा र उजाड रो उथळो चायो । साची वाता म घोड़ै रो असवार जाबक लो चबडायो ।

बोल्यो—'महाराज म्हैं जका इया रा उजाड किया है वै स ग इया र कवणै सूरत ही पूरा किया है । डाकरी पछ मन एक दूसरी लुगाइ मिला जका हैणै (अबार) हाजर है' क्यो घोड़ै वाळा म्हारा छोरी रोवै वान काट ल । म्हैं छारे रा कान बचर दणी काट लिया । तीसर गुजरी मिनी जक उवै न गाने रीगा अर गळ गटका भाया । म्हैं हुक रै माथ मल्यो दूध रो घडो फोडाय कर गैगा चलाया इस तरा खाजा खाया । दी उगाया । मूछो रगडिया अर मायो रग-ड्यो । छेकड वाणियै र तल रो घडो फोडकर आपरा खर मनाई ।'

राजा आवा उवा मिनखा सू पूछ्यो— या लोगा असवार सू एडी वाता करी काइ ' असवार कूडो तो नीं बोल रियो है?" उवा सगळा लोगा एक साम ही असवार रै साबाट री हा भरी ।

राजा कयो— जद थे तो थारी कूडा वाता सू ही बधि याड़ा हो । घोड़ै वाळ री इथा म काई दोस है ? यो तो थारी वाता रा हा फरक है ।' इतो क परार राजा घोड़ै रै असवार न बेकसूर छाडकर पाछो मोड दियो । फरियादी लोगा आप आपर घर रा गलो लियो ।'

••

## १७

# पिडतां री टक्कर



पडित चेतनराम कासी री पढाई पूरी कर परोर पाछो घर आवण लाग्यो । बठ वेद, बामणा अर बोध धरम रा मोटा मोटा पोथा मोकळा प‍ड्या । घणा बखाण सुण्या अर कळा बिग्यान रा पाठ गुण्या । जोतिस तथा कम काड री जुगती पकाई । पडिताई र मुद साथीडो सरबजाण बणकर गाव नै टुरधो अर गर जजमानी रो हीलो करण खातर पाठसाला सू मुड्यो । धर कूचा । धर मजळा । चालता चालता आयण हुई तो एक गाव म वासो लियो । गाव रा लागा इधकमाण सू चोधरी र घरा पडित रो डेरो लगायो । घर धणी पडित जी ॥ पूछ्यो—'पडित जी आप कठ सू पधारिया हो ? तथा कठै रा वासी तथा कठ पधारोला गुरा ।'

पडित चेतनराम घण घमड सू कियो—'जजमाना ! म्है कासी जी सू घणखरी भणाई भण कर आयो हू । म्हारै लायक कोई काम काज या भणाई गुणाई री चावना हुव तो वेखटक बता देवो ?

घर धणी बोल्यो—'महाराज ! और काम काज तो नी है अर ना भणाई गुणाई री चावना है, पण म्हार गाव मे पडित पर मानराम वेद साम्तरा रा खरा जाणकार है । उवा र जोड रो नेड निडास कोई पडित नी लाध, म्हे तो उवा न महापिडत माना हा ।

थोंरी हिम्मत पड जको उवा रै बरोबर खडो हुवै। परमान री जोड रो पिंडत हुयो न हुव।"

चेतनराम चमक गियो—"हा हा! इसो वत्तो विद्वान कुण है? कठ पडयो है? कासीजी में तो बारै बरस म्है गाळया है अर अनेक विद्यावा रो ग्यान पायो है। वठै सू पळघोडा वळघोडा रा देस विन्मा म धानणो चमक है। थारै गाव म बठ सू स ठ रो गाठियो नाड पसारी बण्यो बैठो है?"

घर धणी अर गाव हाळा कोड सू कियो—'तो महाराज काल था दोनवा म सास्तरारथ करा देवां। ग्यान ही छोटै बड रो टा पडे। ग्यान तो परमानराम पीपळ सो पूजनीक अर मोटो लागै है।'

हा, हा! सास्तरारथ जरूर कराय देवो, पंडित री पू छडी न रगडर राख देमू। चेतन राम मू जतै थक कियो। दूज दिन गाव रा स ग समभदार आदमी पचायती र अक मोट ग्रासरै म भेळा हुआ। बीचाळ बिछायोड मोट गिदर माथ ग्रामण सामर्ण दो गाडवा र सार दानू पिन्त बुलाय कर बैठाण्या। चिडया म भाठो सो पडयो लिया आखा लोगा चुपी धारी। पली वात पडित परमान राम सास्त रारथ छेडयो अर पूछयो— वद कित्ता है। बतायो?

पडित चेत राम परमान री या छोटी सी बात सुणर रीस सू फाटग्यो। बोल्यो— वेद च्यार है। आधी राड ही जाणै। ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अर अथववेद। इया रै अलावा अट्ठारै पुराण अर छव दरसण सासतर भळे है जका स ग म्हारा तो खिरवाळयोडा पढ्या है।

"कूड सफा कूड! पिंडत परमान राम हाथ पटकतो थको बोल्यो— वेद च्यार नी गाधर लेखै ही स्राठ है। रिग वद अर उवै री वदनी (पत्नी) जजुरवेद अर उव री वन्नी। सामवद अर उव री

वेन्नी तथा अथरवद अर उव रा वेदनो । अ ग्यानी अर स्याणा रिसिया मुनिया रा बणायोड़ा थूरा आठ वेद वेदनी है । जवा एक साथ च्यार कया हो सब ? कोगे मोटो पगड़ो माथै मेल परार पिडत बणग्यो, भळ म्हार सू सासतरारथ करणै खातर भिडियो है । लाज नी आई ।' पिडत न छोडर पछ परमान राम गाव वाळा लोगा कानी फिरियो अर किया — अरे नालायको ! थे मन किमक मूरख साथ ग्यान चिरचा करवाण न लाग्या हो ? जका न वेदा री ही पूरो ग्यान नी है ? काढो इण नै अठ सू कूट मार कर ।

गाव हाळा खडा हुया, चतनराम म चता आपरियो । चत राम ना ! ना ! करतो रियो पण गाव हाळा अक नी सुणी । परमान राम रा बतायोडा परिपाटा मुजाबक चेतन पडित रा सारा पोथा पातडा खोस लिया अर गाता गळगोता देवता थका गाव सू बार काढ आया ।

आपड चतनराम रावत मूकन आपरो गाव घर घर नडा लियो । चेतन वार बरसा सू पाछो घरा आयो हो इण वास्त गुवै रा माटो भाई जादू दादो बगरान घणो घबड़ाया । उव आपर छोटै भाइ चतनराम स रोवण कूकण री कारण पूछ्यो । चेतनराम आग्न गाव म हुयाडै सासतरारथ वाळी सारी बारता बताई ।जद बग राज री घास तणगी, लोहो उबळ आयो अर बातडा हबरा बणगी । उव आपर छोट भाइ पडित चेतनराम सू किया— भाई काटो काट सू ही निकळसी । जिसा उबड गाव हाळा बिमा हो किया री पडित ! जड़ा गुर वडा जजमान । हमैं म्हैं जावू अर उवा आसा मूरखा न मजो चखावू ला । उतरो घर तो जूत हा हुवै । नक्टा देवा रा तो सूरडा (बिना मोरी रा) ही पूजारा । नष्ट देवा रा भिरस्ट भोपा बण्या बिना पार नी पड । इट री उथळो पत्थर सू देस । सर न सवा सेर बताया बिना मोकळा मिनखा म फोडा पड जावै । थार आप

मान र बम्ळ साग उवां नैं सामीडो म रा भी दे घास ।'

दूज दिन वेगैं दादैं (वगराज) एक बैंन गाडी जुडवाई । शाद प्र्माद र हाथा रा मैं ग पाथी पानडा अर घर रा सारा ग्र थ भाल नेतीरा गठडिया म बाधकर गाडी में नादया पछ ऊजळा धाळा वस तर पहिर कर वगो दादा खुद गाडीवान र बरावर जा चढयो । गाडी टोरी मोरी ढीली छोडी । पछियोडा बैंन जा पोंच्या ब्राथण नैं मागी गाव जठ चननराम रा म ग पोथी पानणा खोसकर गांव हाळा सूरम मिनखा आपर पढित परम न राम र कवर्ण सू पिटाई करी ही ।

गाडी टामी गाव रा आया । पाथी पानणा देखकर लो घणा चकराया । पढित जाणकर घणो मण मण करियो अर राजी हुया । गाव हाळा न गज्रो म्नकर पढित वगराज नी उवा न मास्तरारथ करावण खातर लभाड दिया । मजा रा दबू गांव हाळा लो या.ो चावा ना। पढित वगराज भी ता सूकिया रैं वटका बाड हो । गाव हाळा परपाट पचायनी र मिन्र म जाजम बिन्रा नगाय कर परमानराम नैं ल्याय मिन्यायो । परमान राम भी ता थार रा वद सास्तरा रा पोथा साथ लयकर आय बैंठ्यो । थोडी मोन रैं पछ वगराज परमान पढित र सामन ग्रनग्नी मकड अर नजारन र भाव सू फुर परोर पूछयो— वद किता अर किसा किसा है ?

वद आठ है रिगवेद अर उबै रो वेदनी जजुर्वेद व नी स्याम वेद-वदनी, अथववेद वेदनी —परमानराम आपरो ऊडो सान मू नाम तमाम नाम बताया ।

, आवव फूठ ! सफा कूड ! रसा बावळो कुण नावडयो ? श्रा विद्या कण बताइ ? अरे ! यू ग साम्रे सुणल्यो वदा रा सार्चा नाव म्हैं बताऊ—

भाया अर नाणा हाळी वाता सुणर घणा पिछताया। बोल्या—'घघ्धू कार जमान म म्हे किसाक ठोना भूना ठाली रया।"

लोगा कियो— थोडू ही परमानराम मन आओ अर पन पीठ तथा दोनू भाम्बा म जठ कठ ही चार रू गता लाध खाम त्यादा। भी नो तो बोमिया नासिया मूलो व वाळ ही नहो जावँ।

●●

१८

# दरबारी पिडत रो रोग



एक अेवड र गुवाळिया रो गाव हो। उवँ गाव मे घणा अभ्न षरावणिया ही रया करता हा। बँ दिन मे भेडा चरावता अर रात न गाव रँ करांई अवड नँ बैठाकर गल्ला करता थका रवता हा। बिया गुवाळिया हाथी रो नाथो तो सण राख्यो पण उवार हाथी रखण रो काम नी पडियो। व जाणता के हाथी एक मुणा जिनावर है जको राजा र मठै रव।

अक रात री बात ! हजारू भेडा र बीचाळ फम मर एक सुसियो (खरगोसियो) मर गियो। मधिया एक गुवाळिय मरियोडो सुनियो देख्यो अर जाण्यों के राजा रा हाथी किचरीज कर मर गयो है। बा गुवाळियो घणो डरियो अर घरा आकर आपरा लुगाई टाबरा न डरतो सो कँवण लाग्यो— गजब हुग्या। रात तो राजा रो हाथी आपनो भेडा म फसकर मरगियो। राजा नँ ग पडता हो फासी हा जामी।"

गाव रो चौधरी बुलायो अर उव आगँ हाथा जोडा करी। चौधरा घणो स्याणो समभदार वाजतो। बोरयो रोवो मत। मरियोडो हाथी हाथा मे ल परार राजा कनँ चालो। राजा स्याघारी

ई। सारी बात बता देण पर गुनो माफ कर देसी।'

मुखिय चोधरी री स्याणी गना मगळा लोगां र न्याय भाई अर धीरज बध्यो। जवां रै अेवड म गुणिया मगरोजार मरयो, उठ गुवाळिन रा भाई उथु सापी-गणी भटा ही पराट मजा री मरियोड़ी हाथी लियां राजा र दरबार कानी टर भीर हुया। मुखिय र हुकम सू निजराणा लिया गाय, भ स ऊन अर बकरा बकरी भी साग म लिया। राजा र पोल म आ जाण पर हाथी रै मोत रा सारा जिनावर दफ्तर सो नाम गनना लियो। जावा अठै गोचर री अवड हाळा दरबार र दफ्ज आऊभा। दरवान सथा मर पूछ्या— कठां आया भाईडो?

अब गवाळियो बोल्यो— राजा रा दरसण करण। दरवान कियो— राजाजी थान दरसण नहीं देवला। पाछा जावा अठै सू।' इण बात माथ सगळा ग्वाळ डर गिया। मुखिया आग आयो अर दरवान चपरासी नै एक बकरा नजराणे री दीनी। कियो— 'हजूर म्हारा मजूर गिनत हा ओनर सू आया हां अबस राजाजी स मिलावो।' दरवान आपरी भेंट पूजा लानी अर गुवाळिया र आण री राजा न जाणकारी दीनी। राजा उवा न बुलाया तथा फरियाद सुणनी चायी। राजा कियो— भाई थ थ काह केवणो चावो?

आगा अवाळ राजा र डर सू थरथर कापण लागग्या। उवा म स अेक भी राजा री बात रो उथळो नी देव अर ऊभा अक दूज री मूढो जोव। छेकड़ चोधरी मुखिय अवाळ आग आयकर धूजत कापत सारी बात क सणाई। मुखिय री बात सुणता थका अवाळ घणा हरिया। जाण्या हमै राजा फासी रो हुकम देसी।

रवड र गुवाळियां री फरियाद सुण पराट राजाजी अर

पग दरबारी लोग हसण न लाग गिया । कइंयां रो-सो हसता हसता पट दुखण लागग्यो। जद राजाजी ग्राखा गुवाळिया न ग्रापर दस दीवान कन भेज दिया अर कियो—'थारो मामलो दीवानजी सलटा देला।' राजाजी दरबार सू चाल्या अर हसता ही महल म बड़िया। पण अेवाळ तो ऊंधी समझिया उशा जाण्यो— गुनो बकसणो होंतो तो राजाजी हाण हो माफ कर नावता। मामलो दीवानजी र हाथ हरगज नीं स पता। ग्रापस में अंडो भोड करता दबा ग्र'वा गुवाळिया पाछा फिरिया। एकड सगळां री सला मु मुखियो चोधरी दीवानजी न कवण वास्तै ग्राठो गियो ग्रर बाल्या— दीवान जा गुनो (अपराध) तो म्हारो बडो है पण ओ म्हामु अणजाण म हुया हैं। ग्य वेगी जीवणदान माग रिया ग। ग्रापरो निजराणो हाजर हैं। म्हे गाय, भ स भेड बकरिया सागै लेग्ता ग्राया हा। उवा ■ ग्राप लिरावो ग्रर म्हानै जा णगान दिरावो।

देस दीवान कियो— थास यो कसूर अणजाण में हुयो, ग्य वास्त राजाजी अेक बार ता माफ कर दिया। ग्रागै साह निग रासना रिया नी तो जरवानो भुगतणो पडसी। थारा जिनावर भी लता जावो।

गुवाळिया मापी रो नावो सुण परार घणा राजी हुया। वै उछळता-कूदता ग्रापरे मुखियै चोधरी री चतराई तणो बडाई करता घर कानी टुळग्या। अेवाळ राजा ग्रर दीवान रै भगाव ग्याव री बडाई करता ग्रापर गाव र नेडै ग्रा पोंच्या। गाव में बडता बखत लारै सू कैण ही हेलो मारियो। हेलो सुणता सैग जणा भळ डर गया। जाण्यों राजा दीवान रो याउ खारज नीं कर दियो है? हा जठै ही ठैरग्या।

घट लार सू एक चनतो पुरजो सा पिंडत ग्राया। माथ तिलक बगल म पोथो, बात बणाव थोथो मोथो। धाळो धोती ग्रर

बगूमल पागड़ी री बात मोटै चालां री पुसाट सू आवब पाट नीं हो। रोव दाव सू दरबार दावळ मारो ! टवण री करी तुन्त त्यारी। त्यै बाम्नै हो दरबार सू निवळता द्यां गुवाळियां री तिडतजी मारो लिया बम हा।

मुनियो चौवरी—"बवामो दाता ! दीवानजी रो करिवाशे म्हारळो फमतो राजाजी रू बर दिया।'

पिडत बोल्या— ना ना ! दीवान जी रै करियोड़ फमल न कोई भी खारिज नी कर मक। पण म्हैं अर बात थान बँवण न आया हू जको थान खोलर सुणल्यो। थ जोग हाथी मार पत्रार राज रूरबार सू ता छूट गिया पण रामदरबार सू तुधा नी निवळ मकोला। भगवान मो की हत्या है। पन्ति रा बात मणर अंजाळ फिरर म पड गिया। व चिता म एक दूज र सामा भाळया अर बोन रतळावणमो करो— पिडत जी मर्व तो साची है। बात बणनी दररवर दवाणो पिछ्न भळे बोल्यो— सगळा जाया म हाथी बडो हुवै। उव न मारण रो महापाप है अर राजा र हाथी न मारण सू ता पाप रा छडो ही नी रव।

मुखिय चौवरी हा भरी अर सिर हिलायो लिया कियो—आछो बात है। हमैं म्हान पाप ऊतार जिसो उपाव बताओ। पडित— सैं सू छोरो उपाय तो यो है के ये लोग भागवत री कथा सणो।

एक अवाळ —'कथा के हुव ?'

पिडत— 'म्हैं स ग बता दसू ।'

दूसरा अवाळ—' पिडत जी ठीक हो नो पव हाथी मारण रो मोटो पाप आपणै माथै है जका ऊतार लवा नी चोखो है।

भगवान र दरबार में भी कोई भलो दीवान लाधग्यो तो यो दुख अवस कट जासी।'

मुखियो बोल्यो—'चोखी बात! पिंडत जी थ म्हारै घरा चालो अर कथा भागवत सुणा परा पाप उतारण रो भालो भालो। पिंडत रै परबी आई अबड र गुवाळिया र घरा गियो। दो चार दिन तो मान उडायो। उवा न समझा दिया क कथा आछ दिन री मढ करी जासी। इयै बीच मे बनला गावा रा गुवाळिया न भी पंडित जी र आण रो पत्तो पडग्यो।

बसाल री पुयू रै दिन ग पंडित जी कथा बाचण न बटा। गाव अर भाम पास रै गावा रा पुरख लुगाई तिया बूडा बाळक भाभा मिनख पंडित जी रै बारकर घेरियो बणाकर पठ गिया। पंडित जी माटी चोकी माथै आप बटा। उव र ऊपर छोट पाटै माथै कथा री पोथी मेली। पास म धूप दीप मख अर आरता रो गरजान जचाय परोर कथा सम्पूत रा सिरलोक सरकरया। भासा म अरथ करण री जची नी। अबाळ बोना बोना सुणन लाग्या। लुगाया हाथ जोड्या। टाबर देखण लाग्या बूडा सिर निवायो। पंडित जी पल पोत सल बजायो। गुवाळिया गूगा बहरा तिया चोरमा हग्या। उवा म सू एक बोल्यो— पिंडत जी कोई जादू टूणा जाण है— हाथ लगायो हाड रोवै। जको पाप जगत रा धावै। गुवाळिया आपसरी मे सपसपाटिया सरु करया। कानाबाती चलाई। पिंडत जी जाण्यो म्हारी कथा री आछो रगत भाई अर मठे उ तापठ बाच णनै लाग्या।

गुवाळिया काई गैरी अर ऊडी बारता साची। य स आपरी बात त कर परार घर रै पडव में गया। पिंडत जा जाण्यो म्हारै चढ़ाव री सोचना करता हवला। इय मातर पिंडतजी कथा माथै सारो जोर लगा दियो। कारण के घर मायना मिनखा

था सागीड़ो पगर पड़ सक । जिका गुवाळिया पडव में बड़पा उर्गं आदमरी मे राय करी । अर कियो— पिडतजी र कटां मे रोग हुवण्या सगळा मारस पिनो ज्यान्टी बकरी र हुयो । घणो ठाठ गर्ई बिछविपावर मरी ही । मेली नहीं गई ।

दूजो बोल्यो— पिडतजी मरण्या तो भारी दोधी बाजाना । हाथी रो स्हूभाव राग करया हो है पिन्नजो मरगिया तो सारा नी पूग्या । रामजी दया रा मग्यो गुणा री ही आया राम्डो न पाणी प घास पोदा दयना । कम दाणा हो है राजीरहण है । तोज कियो— बादण नहीं निमाम तो बाई म्हागो हिरमची भा मीं है ।

चौथा बोल्यो— मर गुवाळिय टौळिय रै अबरग या रोग हूवो जद सिर मुआ मुया कर अरडाया । जद म्हें तो बासैन म मोट तान कर पटार बोर कग नाव थाडा मगाई जको बट पैगाम तागो आगो । पर लाठ मारता पग्ण न नागग्यो । म डो हुण ता माडा ही है कोई भा जिनावर याव आजे जद लाठा सूं ही मारो हाव । पात मगळा र दाय आय गई । जद घणो जगरो उगाया घर उठ म अब दार लाठ रा दागी तगा । पिडत जी कवा बाखण र अम र हुणा हा । बाव बीराड गत भी बजाता हा । गुवाळा मनराड़ा उगपडा—बावळा स्या फिरा लार मूं अक अणा मायकर मट पाग बठ पिडत जी रै गळे हूर कडा पर लाल तपियोडी दागी रा मीडी घाल दाना । पिडत जी तरछ्या ! मरा गुडयो मर पोथा परियां जाय धर पड़ी । व बोगण सवया हो नहा के दूजी दागो स्याय कर नस पर कर दीनी । या नी पिडतपा गरळाया । उठकर भाजणो चायो पण कई गुवाळिया सागीड़ा बांथा मे पकड़ लीना अर पेट मगार तथा कमर पर लीडिया सु दाग दीना । जगा जगा खरा लीग घाल दीना । डील कसीज्यो पिडत जी कूकया । जद अेक अेवाळ बोल्यो— रोवो मत पिडत जी राग बडो भूगलो है । थारो जान उवर तो

लाधा रा हा।' गळै, नस मठ, कमर, पेट अर छाती मार्थ दाती सू चारू मेर डाम घाल दीना। चामडी पर चटका रा चरडाट ऊप ड्या। पिडतजी पैली तो गयो पण पछ सूनो अर पीडा सू पीडित होय कर पडगियो। मन में आब्यो—'लिखयोडी टळ नही। आपर पुराण सभाव र मुजब सोचणं र सागै सागै एक हाथ सिर मार्थ चल्यो गियो। चट एक गुवाळियो बोल उठ्यो—'पिडतजी बतावं के म्हारै माथ म भ्रोजू रोग है। बम भळ बै घायँ हो? पिडतजी न बोली हरिया तो करणो रो हो। माथपर भळ दो च्यार डाम घालदीना। हमैं अेवडहाळा अेवाळ घणा राजीहुया। इयार माथसू एक मार सो उतर गियो। पिडतजी रो ढीम पूरो डाम कर सुख री सास लीनी। आख गाव री दाता किनस मिटी के मालक पिडतजी न उबार लीनों नीं तो राजाजी गाव उजाड नाखता। पिडतजी सफा तो नही मरिया पण डामा री पीड सू कई दिना ताणी हा जठै ही पड्या रया। गुवाळिया दवा ऊपर घी दूध री तो नदी सी बुहाय दीनी। चू दियँ चूरम अर गू ऱ री रोर सू सीडिया री रोळ मिटी अर पिडनजी उठ्या। बोला बोला मुह बधारै ही आपरै गाव रो गैलो लियो। पोथी पानडा तो सै ग युहार लग्या पण सस रो पत्तो बुडबुडो नीं लाग्यो। हमैं इयै गांव म कै ही बाळका री सभा जुडै, जद ही ब बाळ सभाव अनुसार पिडतजी हाळी कथा बाचणं अर सुणन रो साग भरै सख बजावै अर गाथरा कर। पण गुगाया गाळा टोकै—'कोई रोग लगाऊ हो के?'

१९

# कलाली

०३०

फागण मास रहा रवास बाजळी र धमा उमूं मादी माती परमळ वग । अब सरवो उन मूं माव दूजो वु न मूं जावे डालर हींड रा गा हमोळा लाग । फोगनो फूल रग बट गोलिया र काळा निडा धू चाव । माय र गुवाड चग बाजै गारव उजाड टावर हड दडो सन । मोड्या मोड्या लुगाया रा झूलरा मूं गाल गाइज । मठ ही रमम कठ ही गाग माकळी जगा मिनख महरी खप्पा नाच अर घूमर घाले । रात रा माळा जडै चानड पडै अर डडिया रा कनाइड घोल है । होळा आगळा दिन मतवाळा मन सागीडा बल है । पण कोरडी हाळा आदमी आपर रावळ मे ही धम्मानोळ कर है । म आपन माटा माग्मो गिण । उनपुलिया घोडा ही है अको आडा आम्भ्या माग गेल । गढ र माय न ही मारूडा गाईज अर दारूडा पीईज । दमामध्या ढाल माथ बकियो राजा रतनो राणो अर मूमल सूरो गाव ।

फाग्नी रात—मोटी छात कुंवर रो माथो जुळबळाव । मिनखा री मफत लुगाया रा झूलरा कुंवर न जावक नी सुवाव । इण वास्त बो आपरो अकलो ही सिझ्या पडे ऊचो डागळ चढ जाव है । गाभरू जुवान, आख चाम्बळ म मानि की री मजाल है जको सामण हो जोनव । आस र इमाग माथ मुलक नाच उठ । फकत घास वाळ नाव सू हिरण छोडा हुव । कुंवर न नाट करण री हिम्मत कोई राख नही । महारावळ बून्ग, महाराणी जा आछा पण कुंवराणी जी की कवै घसडकावै रात जिका आपर पीवर पधा रियोडा है । थोडी आंख लागी न लागी कुंवर जी वमडक उठ्या ।

घटा छाती माथै हाथ आयग्यो काई ऊ घा मू घा लार वग्या के बर होवता थका कलाळी कलाळी कर थाक्या । रान्यिा छाड्यो घोड माथ जीन कसा लियो । दो च्यार थाळसगलिया माथ लयकर कलाळी र देस कानी चाल मीर हुया । कोई मपनो आयो जणा ■ कलाळी री सो,वणी सीवी देखकर जी उपाइ लियो ।

क्योंनणी घड्ड रात रुमक मणक सापा चवन्म री चाद सू वो सिल्वर भलता मारियो है । उनैसू चांदो ऊ घा भाव पण वुनै पळना फिरत्या रै भूमकै री झामैरी जड़ा मे भवरारी सा पड़ै । इसड सोयणै मोवण सम म कु वरजी कलाळी र दस कानी घोड़ा दावट दीना । घोडा अनर वठैरा, ठाणा माथै खड़ा रियोड़ा टारड़ा, न्हिू ग न मोका कोमा जा बठ्या । बठ दूज मुलक री चोराहो माजाए म अस घी जगा मारग वारता धाटा वूझणा पड्या । रगील कु वर जी प्रनरोहा म व्हड अक गाया र गुवाळिय न घणी मीठी मघरी वोली सू मतळावता थका वूझ्या— अर भाईडा ! म्हान बताओ ! राजा म्हाराजाळ कलाळ र दस म कुणसो मलो जासी ?

अक गुवाळिय कियो— कु वरजी ! सामण जका दो गैला फट उवा मे सू डायो तो जसलमर जाबाळो मारग है अर जावणोडो रास्तो थाणोडै कलाळ र देस न आवैलोसा सो थां जीवणोडै मारग घोड़ा घालदया ।

कु वर र साथियां स ग घोड़ा उव म रग लाणी माड दिया अर लगाई अेड जको जा लम्या कलाळ हाळ नगर र नडा । बठ मारग म्वन अेक मोटो वाग आयो । वाग रो माळी मल र नडै ऊभो । मि यो । कु वर जी माळी ■ वूझ्यो— मरे बागवान कलाळी र बाग रो काई क ठिकाणो है ? ',

माळी — कलाळा री वाग तो सा यो हो है ! फळ फळा सू लदियोडो है । म्य म मावळा पाका श्राम न,रसीला निम्बू है ।

बस । हुमैं तो रंगीला कुंवर जी नैं कलाळी र मिलण री पूरी आस बघ गई अर घोडा न म र मे वाह दीनो । घोडा बडी-बडी गळिया म धूदता थका अेक बावडी र नड़ै जा पूग्या । बठ मोकळी पणिहा रया पाणी भरण खातर आ जारया हा । कुंवर जी घणी उतावळो स उगा न बूझ्यो— सुणाजी पणिहारो सहेलिया ! म्हान थार नगर रैं मोटै कलाळ री पोळ नैं दरवाजो बतावो ? इण सर म स ग घर बडा-बडा दरवाजा सू सजियोडा हैं अर म्हे नवा आन्मी हा ! बूझ थाक्या । हुमैं साचेलो दरवाजो थां बताय देवो ।

म ग पणिहारिया थोडी ऊभी बगता बटाउवां री चास बास जोयी अर बडा मिनख देखकर हाथ र इसार सू कियो—' उवा देखो राजाजी ! सूरज सामी जो लामी पळकती पोळ दीख अर उव र आग चळ भवरको ललावतो थको लामो लडोड भोटा खावै, बाहीज राजा पातस्यावा र मसल कलाळ री पोळ है । आप सीधा भोकरी डाडी पधारजो जाओ । कुंवरजी कलाळ री पोळ पकी करली अर वखत र बल आगै जा ऊभा । पोळ माथ एक सावचेत डखाळो पोळियो लाधो । पोळिय नैं भवर जी बतळायो । कियो— "पोळीडा बीरा वठ परोर पोळ उघाड़, बार देस दिसावर पावणा आया ऊभा है ।"

पोळियो अेकर तो हाक्यो दाक्यो सो रहग्यो । रावळी फौज सी आई देखकर चमक्या । पण तुरत सावचेत होकर बोल्यो— पोळ उघडन को भवरजी हाण जावक जोग नही है । क्यू क पोळघा मे कलाळ री साव स्याणो पूत सावचेत सूरिया है ।

भवरजी चोकीदार रो चट्टो उथळो पायकर दूज बारण जाय न किवाड री कडी खड खडाई अर कलाळी न समडक हेलो मारयो "कलाळी थारा सजड किवाड खोलो । बार महाराजा रो कुंवर ऊभो अडीक रियो है ।" कलाळी उठी, फट समझी, कोई राजा रो

गळगू णो बरडो कुवधी कुवर है । राजमद रो इधकार लियां आयो है। आदा न आपणी इज्जत देखणी थका स्याणी उथळो देवणो चाय । कियो—'थोडा भवर जी धीमा मधरा बोलो सा । वयू के पोळयां मे म्हारा सुमरो सा साया हुआ सामळरिया हैं। पण भवर जी र मोई मे ता कोडा सा जुळ बळाव । ब कद माना ? उवां तो कियो—'सुसर जी रो भोळी राणी काई डर है ? किवाड खोलो । उवा न तो दिल्ली आगरें जिसा सर दिरावाना ।

कलाळी जाण्यो बडो गवार है । हरतज माने नहीं । खोटो साप लाग्यो । थोडा डराणो चाय । कियो— भवर जी म्हारो मापणा काच सू जडियोडो है जको थारा घोडा र पोडा सू उचड न दूग रियो हैं । इयां न पाछा मोड परार थारै देस सिधावो । पण अकल बावरा ढोवड तथा ठरक्योडा हूठ इस मीच उथळ न काई मान ? इन रो कुलियो अर जवान कुवर क्पूत क जाण काण कायने ? ब मान यू मडा अर जून । माण मुलावण्ये रासणिया री धून । पण इसडा राव राजा तो डरपोक लुगायां अर टाबरां सू ही घडता फिर है । की कलसारी फौजा मरदानी लडाक्रू औरत र धवब बाज्र तो लसा स नवै । कलाळी होळ होळै ममझाव ज्यू ज्यू कवर जी नडा जाव । कवै है— कलाळी जी थारो आगणो हीरा पना सू जडाय देसू अर बारण न हीगळू सू लिपा नाखू ला ।'

कलाळी मळ छाती करी अर उळाव लेकर बोली । कयो—'मोटा सिरदार ! थोडा धीमा नैं मधरा बोलो सा । अठ रावळी ड्योढी म म्हारा मारूसा सो रया है जका काची नींद जाग आवैला ।' पण भवरसा र सिर मे तो कुभावना रा जूजळा सा किलबिलाव । डफोळ सब हाळी वातो कर । प्रणहूती दाब नैं लाभ री लीला लिवाळ है । कव है—'थारै मारूजी नैं कलाळी सा दूजी दोय मरवण नूई नखराळी नार परणाय देसू । उवा सू नही रीझ सी

तो सावळी मुसकी मरवण मळ त्याय देसू । थान घणी री कोई डर नी है । थारै घणी रा तो म्हे घणी हा । राजा पातस्यावा न तो डोला ही लवण रो इधकार हुव । जकी जिनस राजा र जो म जच जाव परजा नै बा चीज भेंट कर परार राजी होवणो पड । पण मळै ही म्हे थ्रव र बदळ दोय परणावण वगी त्यार हा । म्हान थारो रूप रग न नजाकत घणी म्हाछी लाग । सावळ नही तो कावळ ही सही प । म लुका परा स चढस्या । स्य बात माय कलाळी न रीस तो घणी भाई । पण बरतार र वरताव सारू नारी जात र सुभाव मुजब पड उथलो दियो । आपरो भेन लुका राख्यो । बाता सू ही पाछ्ो मोड परोर पीछो छुडावणो चायो । कयो— पटा म पातळिया थार फूटरो तेल फनेल होवणो चाय । लुगाई न काई पटा म राळोला सा । दूजा री लुगाई माथ जी डोलावणो थार जोग नी है । पाप री बाता आपन हरगज ओप नी उलटी कोवली । घणी हो तो धरम पाळो कुळजुगी नाळो क्यू चाहो ?

नागडा नवळो नेह जिण तिण सू कीज नही ।
लीज परायो छेह अपणो पण दीज नही ।।

भवरजी थाडा ठडा पड घा तो सरी पण थोथा थूल धरम रै मुद मूळ न काई जाण ? उवा तो भळ कवणो सर कर दियो । बोल्या— कलाळीमा थारी असराळी ह बाळी म्हान डाढी दाय माय रयी है । म्हे थासू हार न नणा म सार ल चलाला ! नी तो म्हारी रजा मे राजी मान जावो । कलाळी काई कर ? लुगाई रो कमारो जाबक माडो । घर मे अक्सी ओरत अर राज्य रो डर वबारो । पोरै री बात । बोली— नणा म लाडेसर सा ! तोसो सुरम री रेख सोवणो लाग ? दूजा री लुगाई री तस्वीर ही अणसावणी दीस । मवर कवर ता चवरा ही री छतर छिया म चाल । अन अवरा रो लुगाई री सीवी उवा री आख्या मे कन मोमा पाव । छत्रां रो धण

छना रै घरा ही आछी पण महला म राज कवरा री सायधणा ही घणा गुणा नम्वाव । अडा करमा स मिनख वेमौत मर ।'

भवरजी रो मसो इमी बाता सू काई उतर हो । उवा तो बाही रट राखी । कयो—'कलाळी जी ! था म्हानै मोह लीना । थारा फुटरापो म्हारो आभे काढ नाम्यो । जो करै था जडी गुणवती न गळ में पर परा न आऊसा । इयै बात पर कनाळी टक्को सा जबाब पकडा दियो । कयो—– राजकवर हो तो गळै म मोवळा कठी, हीरा अर गोप परो सा । विराणी बऱ्या न वयू भरमावता फिरो । यो काई बडापणा है ?"

भवर जी भळे कलाळी आगै सुवार करयो— थारी कामण गारी सूरत म्हार काळज म खटकै है । मी मानणी पर डबी म जड परा ल जासू । कलाळी भी छाली सू छी त्यार राखी । कयो— "राजकवर हो तो अेक नहीं अनेक डबी डलिया में पचासा मोहर अर रुपिया रासो राखो कण पाल ? पण थारवी लुगाया डब्बी मे डबी देखा सुणी होसी ? सगला सपना है बुरा विचार आवै है बाकी इमी कुण नार है जको आपर घणा न छाडर था सार्थ डब्बी में अडीजर मौर हासी ।"

भवर जी भळे ही नी समझ्या कयो— कलाळी था सागीडी भचवान हा, था न तो कड्या म बाध न ले जास जद ही मान म जान आसी । मोर सास नी तो थास माथै चीसर ही ले लगस्या ।'

कलाळो बोनी— कड्या मे काई कटार बाधो सा ! म नै तो तागडी करमोळा परो । पण दूजा री प्यारो ऊपर जो डुलावणो सफा कूडा है । ना तो काई मानवण थार सागै चडैनी अर ना थारा मनस्या री होवली । म्हारी मानो तो बोला बोला मारग ल्यो । वीं धाखड र धक्क चऽ गिया तो ऊमर भर बग भरोख झोला खावोला

सा ।" भळै ही भवर जी र मोड सू हगामो री भवाळी नी ऊतरी । बोल्यो — था न कैय्या कलाळी जी काळजै में तार सा फड । वगाता राह निकमी बठी पड़ी नागो । जो मैं मात थानै पगां में पर न न जाया । इय वैकूवी री बात माथ कलाळी नैं हमा मा गई । अब्बा बोली क — पगां में मोचड्या सू मारो पारकी मोरीथण न जावण री मदे हो जो म मती धारो । कडा बाळा में पूछ रा लाफा ही नी है । पोथो गरब अर घमड निकाळियों हा राव रामाया रो मानखो ऊजळ । थार राजपाट अर फौज र जोर सू म्हा लोगा रै सीळ रो हीर माटो है । निच नाव धराय न गपळ गपळ गाल्डाळा करम करणा चावो । थान या छोटी मर हूँमो सो मीठी बात लाग, पण म्हार वास्त आवक माडो मोटी तथा खारी खोटा भाक सी है । थारा इया कुकरमा री कुशाण पोलण साह लुगाया आपरी इज्जत लुटा देसी ? भरम न भुला देवा । थारो यो मन हैक मयो ? लोह रो मण्यो हा'तो तो जरूर पिघळ जावतो । लाज नी आवै । कलाळी र कोप सू भवरजी री जाडा चिपगी । कान खूमर हाथ में माययया । काटो तो खून नी । हार र लारे उणरी फुरण्या सू ताती बाफा सी आवण लागगी । मोठ मूकग्या आख्या आडा काम फिरग्यो अर मन रा माठ चरड देणी सी चूस लिया । बा उव घर र दरूज सू दूर जायकर टूकती पको बोल्या— इय कमसल न रातू रात उठायकर नी मगा मलू तो म्है राणी रा नीं चमारी रा चूघ्या है । बाबोमा नैं काल ही कैवायपररा म्यँ रै कलाळ न कैद में नखा दसू ।" फरहका करतो खल्ला ख्यायोडो सो तिया माईत मरडो सो भवर दूज दिन आगर गढ़ माय बग्यो ।

# वीर समंद देस

•••

राजस्थान मे वीर धू डाजत अर हाडी राणी रै त्याग तथा वीरता री का'णी ख्याल मे ही नी लोक साहित्य म भी घणी चालै । नेर सिनेमा स्कूल मदरसा अर फोनीग्राफ—बाजा री चूडिया माथै ख्यावा साका र मोकै भी मिलन्या र काना म सेनाणी रै नाव सू ईमी रस सो घाले । मेवाड र इय वीर वीरागण दाई मारवाड म भी उवा र जोड सू वत्तो अेक वीर सोगा अर वीरागण भटियाणी रै जोडै भारी त्याग अर वीरता दिखाई है । सोगा बिना सिर र जूझियो है अर भटियाणी सती हुई हैं । इय वर वधू रै अणोखै बळ-पराकरम री कथा रोज वाचण जोग है ।

समरथ सईव री बात आगरै गढरी अेक बिखात पातस्या साहजहा एक भेळा रमा बुलाई । सभा में सत्तर खान (मुसलमान) अर बोहत्तर हिन्दू अमराव जगामर मोजूत बठा हा । मलावा सवा रै—कवि पिडत, भार वाचक अर नाच गान करण वाळो जाटया वकसीस लेवै ही स न गरळो रीत पूरी हुया पछै साहजहा सभा सामो अेक अणहूता सुवाळ राख्यो ।

पूछ्यो—'मुसळमानी सरतनत र राज्य दरबार में—खान नवाबाँ री गिणती सत्तर अर राव राजा री गिणती बोहत्तर क्यू है ? नवा री बराबर हावणी चायै ही । अर खानो भे री ही वेसी कमी क्यू है ?

इयै सुवाल रो जवाव देया राजा नवावा आप री धोकात साळ दीनो । पण पातस्या पूरो पतीज्यो नी अर कियो— इहै इय री

भाखू र उपळा मिवणा चावू हूँ। बनू वै आज म म हैदाणा गरबखास राजा बाल्स्या हाजर है।

उण वगत निमाण खुब री सुबन्दार मीरमानजहां बड मद्दी होयर र बण लाया— हजूर! मालगार भाग र बुतरगा र मूकूँ माल्ळो वार सण जुवता है—के हिंदू राजा भारत सू नी ण वाला म दुनिया सू ऊंचा है। नवा वाम्न हा उआ न ना मनवा री गिणती वत्ती रमाई गई है। पलटी बात हिंदू लोग जुद्ध में पट सू मायो मळगो हां जाव लो हो लडता रव। दूजी बात घड घड जाव जद उआ री वीर राणियां उवा रैं माप न आपरा गोदी में लयकर नावतो जळ मर। जका मारन हुया रा गिणतो दो वत्ती या तर है।"

मीर री साची बात सुणर साहजहां भारी निराज हुयो। कारण वो तो मुसळमानो राज म हिंदुवा रा गिणती कम करणी चाव हो। पर किया—'मीर साब! अ दोनूं वाता म्हैं म्हारी आख्यां देखणी चाहूंगा। इण मौका री ध्यान है। म्हारी मनस्या पूरी कर दगा। नहीं तो थारी या बात बाल्ख्य र र खिलाफ माना जावला अर उण गुन री सजा फगत मोत है।' मीर अर कई अमीर लोग बादस्या र सामणा आपरी कई गुजारिस करणा चावा हा, पण हजूर रै हुकम सू तुरत सभा बरखास्त कर दी गई।

सभा बिडी, राग राव नवाब आप आपार ठिकाणा चाल्या। बानडो मीर मोठा सू मारेडी कमडो री तरियां घुजतो कांपतो डुळ बया। उण समे मीर री दसा देखण जोग ही। पातस्या र डर अर लोगां री लाज सू नदियोडा राव बाल्स्या भी सिर नीच किया चाल पड्या। मगर मारवाड र धणी गजसिंघजी न आ बात मणी आखरी न दोरी लागी। उवा सभा भवन सू बारै बढता ही सग लोगां न रोकर टोका दीना अर मोकळ जोस सू रोस भर परोर कियो—' भाई

लोगा, ग्राप आखा खान उमराव मीर साहब र माथै आई आफत टाळण बाबत जोधपुर रैं काट पधारो ! यो हिन्दू मुसळमान, दानवां रो फरज है, पातस्या री ना समझो या नाराजी म ग्रहो सुवाल नीसरघा है। राजूपत हरगज मीर साहब रा प्राण उबारला। उवा री इज्जत वजोड़ हैं। महाराजा र बड, नाम चौर्ण फुरमाणं मुजब म ग रजवाड़ा बात मानो ग्रर मीर री पीड मिटावण री हामळ भरी। मीर नै चार मीणा वेगो मारा रजवाडा कन फिर फिर आपरी आफत री कथा कवण खातर कड्यो। माग चोखा मोटा जागीरदार सरदार लीना ग्रर महाराजा र कथ मनुमार आखा रजवाडा रा दोरा सरू कर दीना।

मीर रो बळ राजस्थान म अेक बसै वीर री नोन कर रयो जो सिर पड जाणै र बाद जोस मू जूझ अर धड पडता ही उवा री वीरगण उदै भादर रो सिर ले परा सती होव। पण काम डाढो बगो पार पड कैया ? इय वास्त फिरता फिरता मीर रो सगीर काटो होग्यो, पण खाली हाथा पाछो गजसिंघजी कनै आवणो पड्यो। गजसिंघजी तुरत आपरै दीवाल सू खास परवाणो लिखवायकर साहिया र हाथा खास मेर आदेस भिजवा यानि ग्रर उवा मारवाड़ रा न्हाना मोटा सारा सिरदारा न जोधपुर बला लिया। अेक भलवाडै म बठ स ग सिरदारा री भीड। लागगी। जोधपुर र गढ म बडा सोवणो दरबार जुडियो। हरेक सिरदार ढाल तलवार ग्रर बमतर-मम-सर सू सजियोड़ा हा। गजसिंघजी भी आपर ग्राज अेव गौरवपूण वस म सजकर मभार बाघ सिंघासण माथ ग्राय विराज्या। ग्रमल रो मनुवारा मरु हुई कवियों वसू मै री मैमा गाई। वीरा री मूछा तणी ग्रर जोस ग्रायो। पान सुपारी होकै चिलम री खातरी रैं बाद महाराजा सभा री तरफ नजर करी। सारा सिरदारा रा लिलाड़ चमकता जोया ग्रर फुरमायो— सिरदारा ! मीर साब सैंग रजवाडा मे जाय नैं

तोपां री भारी गरजणा रै साथ सारी बरात कने सू बढी। सड़कां गळियां अर मकानां माथ मिनखां लुगायां अर टाबरां रा टोळ अमोळ घोळ सूं फूल बरसावण लाग्या। मसरफियां री उछाळ रा मेह अर मेह लाग्या।

नरपत निछरावळ भूपत जवार तथा सारी जनता दरसण में घाली। हाथी र होद बीरवर तोगा री सजी सवारी इन्द्र पर कामदेव री होड नें हाम्पो। लार रथ, ऊंट घोड़ा री रीत ही घणी भापरयो ही। जान माटी सिरणार रैं गाम रैं गोव बन आई। सामला भाटी सिरदार भापर मळ बळ स सजकर सामेळ पधारया। मान मनुवार र बाग बराम सही जगा ठहराई गई अर मेन घार, जीमणवार, मादरबुहार म तुरत दिन ढळन री त्यारी हुई। आम्बी जान हाथी, घोड़ा चढ़ा अर तोरण गहेळा न टुरी। तोप व दूकां नगारा निसाण अर बाजो तुरा। तारण बान्या पछ्ठ तोग जी नै मैंडं बीच बठै रो राजपुरोहित ब्याह वेदी बन ल्याया। उवा भाटी कुंवरी नै भी उठ बुलाई। पंडिता वेद गाण पढाया लुगायां मीठा गीत गाया। बोन बानणी सिव पारबती ज्यू जगासर ज थिया। घघर मोरछळ ढुळया साव मोत सू दानू देवमान पुटया। ब्याह विध पूगो हुवो जको भवर वायकर तोगा धाना। राजपूत राजी हुया। गजसिंघजी दान दक्षिणा रा मजा लिया। इय ब्याह उछाव रा रण माण ऊमळा न बन्यो हुयो।

ब्याह री दूजी रात रावळां बातचीत चणा मही मा री टोळा तोगाजी न बनावण लादर माई। तोगा जी मफा नरमियां हरगज रावळ आगें सू हट गया। इय बात सू कई उमराव घणा उदास व्है गिया। उवा फिरा गजसिंघजी सू अरज करी। किया— अन्नदाता! तोगा जी रावळ पधारना जन टोर रतो।

तोगाजो र वस चालणे वगी मीर साहब न पातस्या कनै भेज कर दस वार मीणा री म्याद मळे मागलो जाती तो चोखो रै'तो। दवीमना जिसै इय जोडो रो वस चलायकर पछै पाचू चमतकारी काम पुरा करायां जावता जदे आण म किसी कमी पडती।

सै'ग राजा महाराजा तथा गजसिंघजी र दबाढी हुकम मुजब वीर तोगा जी अगलो रात नै गावळे गया तो सरी पण राम रग री जगा आण वाण री वान आपरी प्राण प्यारी भटियाणी जी सू कर परार वीरा री आदत लिया पाछा आगिया। अ'तै पुर र अन्य नग धारा रै अलावा अमर नहघार पक्को कर परार बरात रै डेर पधार आया। सरव सुरग मकती सावण अेकाकार हुया। सुराग विराग री दो सरजावण मूरता अैडी जाण पडरयी माना वीर परमस्वर महा सकती न सगी रो अवतार देवण न त्यार हुया है। सती भटीयाणी जी भी वरदान र रूप म तोगा जी न म्याद वधावण री मनाई करी। जद उव रोज निं'ग तोगाजी आप री बगल रा राव उमरावा नै भेळा कर परार कियो— था स म्हारी अरज है के मीरसाहब न आगरा मती भेजो। म्याद बधावणी आछी नीं है। हूँ तो सारा बराती म्हार साग आगर चालो। सास सास रो कांई विसवास औलाद होणी भी सारै नीं मो हूँ स ग सिरदार आपरा तम्बुवा म पधारर वदण री ताकड करावो।

भाटी सरदारा जान न सीख दराई। कु वरी भटियाणी रथ मे आई। हिंदुवा री साचो सरवीरता सु मीरखानजहां न बडो ताज्जुब हुयो। उवे जाण्यों म्हारो अेक जान (प्राण) वगी इय दो जणा री जान जा रयी हैं। अैडो ईमानदारी वफादारी अर इन्सानियत दूज मुलका म बठ पडी है। उव सारा राव उमरावा नै गजसिंघ जी न मोकळ कायद सु सलाम करी तथा जगासर बहियो। जान्‚ घिरी

राग री बात वराग म बदळी । रथ हाथी घोडा रै पोडा सू धरती धूज पडी । तोगा जी मापर गाव सनखर जात नै लाया । माथ जोधाण नाथ गजसिंघ जी अर मीरखानजहा नै ले परार मानी रा रमण करण गाव में गिया । गाव रा लोगा घणी खातरदारी करी अर तोगा जी र घरा भाखो इन्तजाम करवायो । हावण धोवण जीमण जूठण रो पूरो परबध हुयो । तोगा जी अर भटियाणी जी दोनवा माजी सू प्रणाम कर आसीस लीनी । माजी मोकळ मोन सू जद्द मे जावण री सीख दोनी भर आपरी कूख न खूद सराई । राजाजी समर सुत सेवा करण रो भरोसो लेनो अर कियो — तोगा जी थारी मा म्हारी नी मारी रामपूत जात री मात है । म्हारी मीलव बाणी हैं । जीवण भर इया री न्याय म रमू ।

पछ मीरखानजहा कवण लागो — 'तोगा जी आप लुनक मुलक रा कोडा कायरा न पाक मद बणावण वेगी जारिया हो तो अम्माजान की जिदगी भर यो खाकसार खिदमत करतो रसी । इब गुनाम न मौको मुसिक्ल सू मय्यसर हुयो है ।

माताजी र स ग लोग पगा पडिया । माताजी सगळा न आसीरवाद दियो अर कियो — दूसरा भगवान ! आज म्हार गाव रा भाग मोटा है । सोनै रो सूरज उग्यो है । जको आप पधारकर आख गाव अर म्हारै घर री धर ऊजळी करी । म्हू आपरी काई सेवा कर सकू ? मोर साहब री मेहरबानी भो आज माकन्त हुई है । म्हारा तो या लाडसर हो सरवसन है जको आपरी भेंट है ।'

स ग घणा राजी हुया । विदा मागी अर मिलो । बसत र बळ जान जोधपुर हुई । नगर म नवी खबर फैली । तोगा जी उदा री मौजी अर भटियाणी जी री चारू कानी बडाई होवा लागी । नौ को ै मारवाड र धणी याज रो दिन मगळ मानवणा में बठ ही बीनावणो थायो । कोट म गीत, राग अर नाटक, चरन होता रया ।

दूज दिन हावणा घोखणा कर परार जुद्ध जातरा नै त्यार हुया। राजपुरोहित सुभ मोरत म राजाजी दन सू तोगा भटियाणी जी रै तिलक करवायकर पूजा करी अर रथ माथै चढाया।

तोपा चालो जै ज कार हुई अर हजारू हथियार बध जाधा, तोगा जी र रथ लार नगर सू नीकळिया। मानो या ब्या री दूसरी बरात है। घणा हाथी घोडा अर ऊटां माथै मोटा मोटा राजा महा राजा अर सिरदार लोग आप आपर दळ बळ र मळ धनोवी आण-बाण सू तोगा जी र रथ कन आ उभा। पूरी फौज बण गई जद सब बाजया नगारा घुरया तथा तोपां री गरजणा में सेना नायक गजसिंघजी री इच्या सू सारी राजपूत सेना आगर री तरफ रवाना हुइ। रजी अकास पर छा गई। फौज में छिपा व्है गई। ब्याह में नी पीच सक्या जका महाप्रयाण र मौक सबस आया है।

धर मजला धर कूचा। दसवैं रोज बाद दोपहर मे इय महामना आगर कनै जमना नदी र किनार जा परा आपरो पडाव जमायो।

जमुना जी री सीतल सुखद सेवा में राजपूत लोग रात भर सोकर उठ्या जद बठरा लोग भी वानि दी र कराड हाएा धोण अर पूजा पाठ में लाग्या। मिदरा म आरती मसीता में बागा प्रभाती लोरी अर बिलोवणा रा मीठा सबद सुवारिया हा। पातस्या साहजहा सूतो उठ्यो अर पत्तो पड्यो कै आगरै सू दो माल दूर, जमना रै परलै पार राजपूती फौज पडाव नाख राख्यो है। काळजो हाल गियो। धरणा कापग्या। भूजण नागग्यो रोटी छूटगी। सरब नगर निवासी, राज रा नौकर अर सना रा सिपाही तथा आगर रा आखा वासी मोटी उदासी में रमग्या। पातस्या र सूफिया रूखाळा खबर दी कै— कयामत आई है। टिड्डी दळ दाई मानखो जुडियो है कहर ढा देसी।'

गाभा समझस्या । जद गुटियो बोल्यो—"गुटियो राज डाकण छुरी पगार है' या बात सुणकर डाकण दावळगी सोच तो इय न मळ मारू । पण गुटियो तो मरबजाण हो । उन आपरै च्यारा भाईडा न उठा परा रातू रात टार दिया । आप बिलनी माय चढ परी भुवारी रा तिणकर लार लर वतोर हुयो । डाकण रा सभाव बिय सू क ।

भसावटै डाकण भमडकर उठी । मारियाडा सभाळया तो डील रो लोही सूकग्या अर जीभ ताळव तिरवाळो झायकर ई पडी । ववरा री काा भापर मारयोडा लाग्या । बडी भडी चटी हुई देख परीर डाक रीस म हटी । दिल काठो कर परोर आपरा मावर बोलती थकी गुटियै रै नार न्हाठी । पण गुटियो माटो माव हो ? वो तो पग पग माथ आपरी मितरघाडा तिणकला नाखतो थका चालै हो । अ ताद रा तिणक सू तुरया बिना डाकण आग नी सरक सकी । तिणकला पण छेडो नी आयो । पासर ठडा हुग्या, रीस माळो छोकड हार परीर डाकण पाछी मुडगी । घर में बडी । मर रोवती रयी घडी घडी ।

सूरज चड आयो कू वरा वेगा सासो छायो । ि नीं बावडनै खातर राजा रो जी घणो तिरमिलायो म गर र घोवड माथै चढकर आयो तो उमरादी दिस घाडा री सैट रा ढूढ लिया गोट उपडता दीस्या । तिगण चढ्तं बा"ळ सा उमडता उघडया । राजा राजा हुयो । कवर प आपर बाप न क्वरा गुटिय री मारी बारता बताई उ खत री चतराई जाणकर राजाि ी रो घणो धणायो । उ न मणनैा राज माग दी हो । जद सू ही 'गुटियो राजा'